BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 सितम्बर - 31 दिसम्बर, 2025 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

अंक 142

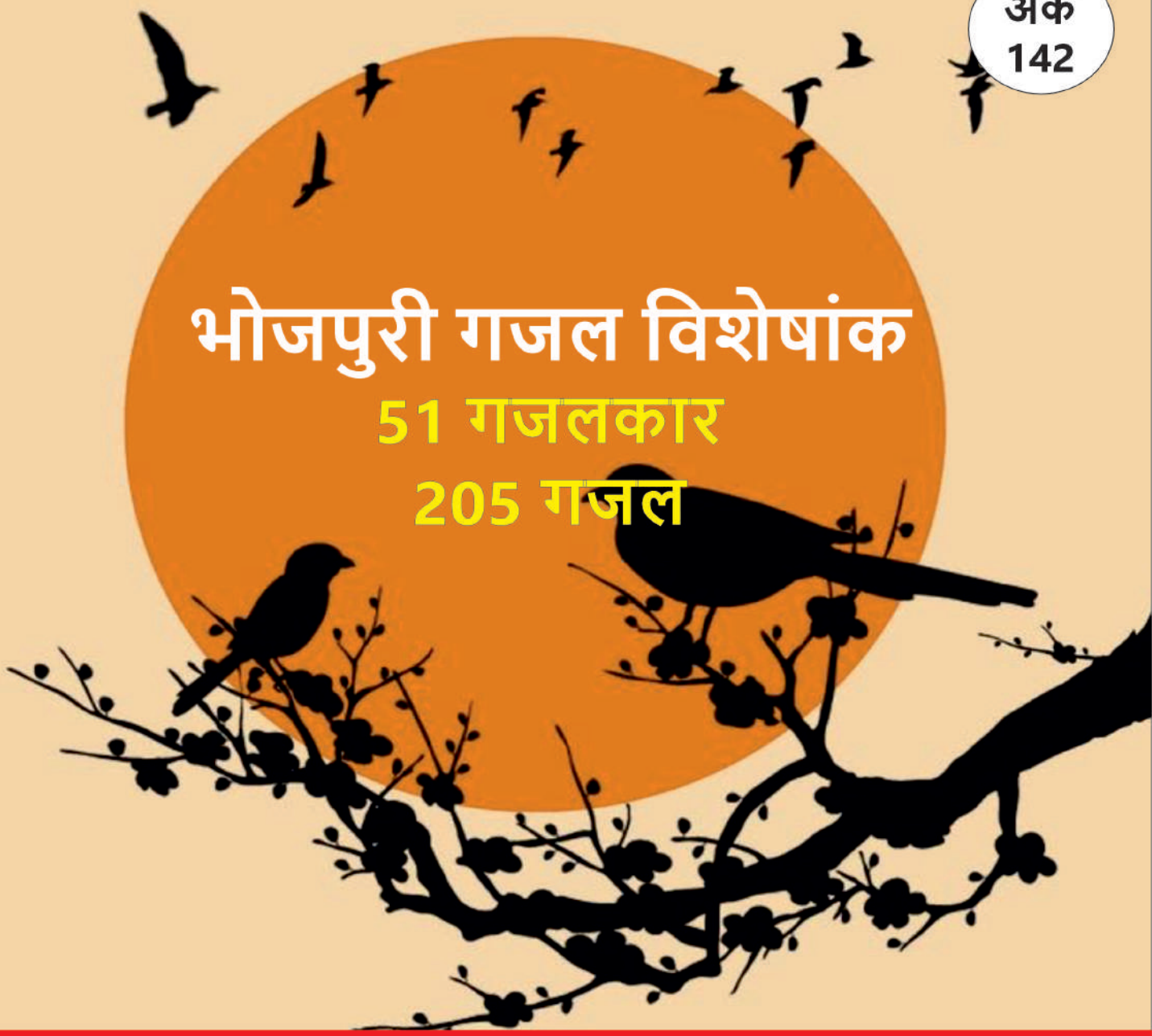

भोजपुरी गजल विशेषांक

51 गजलकार

205 गजल

भोजपुरी गजल : परिपाटी, मौजूदा तेवर आ जमीन

सत्यनारायण के एगो गजल

नामः सत्यनारायण

जन्म तिथिः 3 सितम्बर 1934

प्रकाशनः तुम ना नहीं कर सकते (कविता संग्रह), टूटते जल-बिंब, सभाध्यक्ष हँस रहा है (नवगीत संग्रह), सूनें प्रजाजन (नुक्कड़ गीत संग्रह), स्मृतियों में (साहित्यकारों के संस्मरण), धरती से जुड़कर (कविता संग्रह - संपादित), नुक्कड़ कविता (पत्रिका संपादन)

संपर्कः डी ब्लॉक, बी. पी. सिन्हा पथ. कदमकुआँ, पटना-800003 (बिहार)

कइसन-कइसन फूल लोढ़ाइल, राजाजी के बाग में
काँट-कूस माहुर अगराइल, राजाजी के बाग में

चिरई-चिरगुन के मत पूछीं जान पड़ल बा साँसत में
खोंता-खोंता साँप समाइल, राजाजी के बाग में

कली-कली से के बतिआई, डाढ़-पात से खेली के
फुलसुंघी के पाँख नोचाइल, राजाजी के बाग में

ऊहे ढोलक-झाल-मजीरा अउर जुटान पँवरियन के
ऊहे झूमर रोज पराइल, राजाजी के बाग में

मछरिन के मन ढेर बढ़ल बा, कहलन जब पटवारी जी
ताल-तलइया जाल नधाइल, राजाजी के बाग में

गजबे मती मराइल इहवाँ, अजबे उल्टा हवा चलल
चुसनी धइले लोग धधाइल, राजाजी के बाग में

सुनऽ संघतिया, काल्ह जरूरे आल्हा के ऊ तान उठी
केहू त होखी अगिआइल, राजाजी के बाग में

***

वर्ष : 6, अंक : 1-8| 1 सितम्बर - 31 दिसम्बर, 2025

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
डॉ. कादम्बिनी सिंह
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित, संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

सेंट स्टीफंस कॉलेज से जुड़ल बापू के कहानी 7

गजलकार

सत्यनारायण 2
दिनेश भ्रमर 4
सूर्यदेव पाठक पराग 9
डॉ. अशोक द्विवेदी 11
भगवती प्रसाद द्विवेदी 13
दक्ष निरंजन शम्भु 15
डॉ. ब्रजभूषण मिश्र 17
प्रो. वशिष्ठ अनूप 19
आसिफ रोहतासवी 21
रिपुंजय निशांत 23
सुनील कुमार तंग 25
डॉ. कमलेश राय 28
संगीत सुभाष 30
शिव कुमार पराग..... 32
सुभाष चंद्र यादव 34
भालचन्द त्रिपाठी..... 36
सौरभ पाण्डेय..... 38
शशि कुमार सिंह 'प्रेमदेव'..... 40
शैलेन्द्र पान्डेय 'शैल' 42
डॉ. उदय हयात 44
देवेन्द्र आर्य..... 46
संजय मिश्र 'संजय' 48
डॉ. हातिम जावेद 50
सुरेश गुप्त 52
शंकर शरण 'काफिर'.....54
अशोक कुमार 'दीप' 56
मिथिलेश गहमरी 58
मनोज भावुक 60
हिमकर श्याम 63
गुलरेज शहजाद 65
सन्तोष विश्वकर्मा 'सूर्य' 67
कुन्दन सिंह 'काव्यांश' 69
अश्विनी द्विवेदी 'नमन'.....71
डॉ. ज्ञानेश्वर गुंजन 73
कृष्ण कुमार श्रीवास्तव 'कृष्णा'.....74
शैलेश कुमार सिंह 75
अतुल कुमार राय 76
पप्पू मिश्र 'पुष्प' 77
दिनेश पांडेय 102
डॉ. साकेत रंजन प्रवीर 105
मनीष मिश्र 106

नेपाल

राम प्रसाद साह.....78
डॉ. घनश्याम न्यौपाने 'परिश्रमी' 80
गोपाल अश्क 82
राजेश कुमार चौधरी 'जिज्ञासु'.....84

महिला गजलकार

डॉ. नीलम श्रीवास्तव 86
माया शर्मा 88
सोनी सुगंधा 89
डॉ. कादम्बिनी सिंह 90
वीणा सिन्हा (अमेरिका) 92
अनीताशाह (नेपाल) 94

दिनेश 'भ्रमर' के दू गो गजल

नामः दिनेश 'भ्रमर'

जन्म तिथिः 26 जून 1939

प्रकाशनः गीत मेरे स्वर तुम्हारे

संपर्कः गीतायन, ग्रा. व पो.- पठखौली, थाना-बगहा, जिला प० चम्पारण (बिहार)

(एक)

नजरिया के बतिया नजरिया से कहि द
ना चमके सोनहुला किरनिया से कहि द

नयन में सवनवाँ बनल बाटे पाहुन
सनेसवा जमुनिया बदरिया से कहि द

लिलारे चनरमा के टिकुली बा चमचम
लुका जाय कतहूँ अन्हरिया से कहि द

न आवेले सब दिन सुहागिन ई रतिया
तनी कोहनाइल उमिरिया से कहि द

नयन के पोखरिया भइल बाटे लबलब
ना छलके भरलकी गगरिया से कहि द

(दू)

आँख में आके बस गइल केहू
प्रान हमरो परस गइल केहू

हमरे लीपल-पोतल अँगनवाँ में
बन के बदरा बरस गइल केहू

गोर चनवा पे ई सॉवर अँधेरा
देखि के बा तरस गइल केहू

फूल त काँट से ना कहलस कुछ
झूठे ओकरा पे हँस गइल केहू

कंठ के जब बजल पिपिहरी तब
बीन के तार कस गइल केहू

***

संपादकीय

भोजपुरी गजल : परिपाटी, मौजूदा तेवर आ जमीन

भोजपुरी के अक्सर लोकगीत, बिरहा, कजरी आ चइता के भाषा समझ लिहल जाला, जबकि सच्चाई ई बा कि भोजपुरी के आत्मा में उहे गहराई, उहे लचक आ उहे भाव-घनत्व बा, जवन गजल के बुनियादी शर्त ह। 'भोजपुरी जंक्शन' के ई गजल विशेषांक एही भ्रम के तूरे आ एगो जरूरी संवाद के आगे बढ़ावे के कोशिश बा।

भोजपुरी के माटी में श्रम के पसीना बा, जिन्दगी के जद्दोजहद बा, परदेश-प्रवास के पीड़ा बा, प्रेम के प्रवाह बा, प्रतिरोध के स्वर बा ... आ इहे सब त गजल के रूह ह। एह से जब भोजपुरी में गजल कहल जाला, त ऊ उधार के ना लागेला, बलुक अपने जमीन पर ठाढ़ दिखाई देला।

आज के समय में, जबकि अभिव्यक्ति के सुर तल्ख बा आ संवेदना सतही भइल जाता, गजल ठहर के देखे आ महसूस करे के अवसर देता। ओकर हरेक शेर एगो मुकम्मल संसार होला- कम शब्द में गहिर बात कहे के कला। शायद इहे कारण बा कि आज हर भाषा में धुँआधार गजल लिखा-कहा रहल बा।

ई विशेषांक ना खाली गजल-प्रेमी लोग खातिर पठनीय साबित होई, बलुक ओहू पाठक लोग खातिर एगो सेतु बनी, जे गजल के दुनिया में प्रवेश कइल चाहता।

अस्सी के दशक में कविवर जगन्नाथ आ नागेंद्र प्रसाद सिंह के संपादन में 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' छपल रहे। एह में ओह समय के प्रतिनिधि भोजपुरी शायर लोग शामिल रहे। एकरे आस-पास 1981 में धीरेन्द्र बहादुर 'चाँद' के संपादन में झकोर के गजल अंक आइल।

नब्बे के दशक में डॉ. अशोक द्विवेदी जी के संपादन में 'पाती' पत्रिका के गजल-अंक (अगस्त 1995) निकलल। एम्में वेदप्रकाश अमिताभ, छन्दराज, वशिष्ठ अनूप, शिवकुमार पराग, शालिग्राम शुक्ल 'नीर', मोती बी०ए०, विजेन्द्र अनिल, गणेश दत्त किरण, हरिवंश पाठक 'गुमनाम', माहेश्वर तिवारी, दिनेश भ्रमर आदि जइसन हिन्दी में लिखे वाला लोग के भोजपुरी गजल छपल रहे। जगन्नाथ जी, अशोक द्विवेदी जी, वेदप्रकाश अमिताभ जी आ आसिफ रोहतासवी जी के आलेख का साथ भोजपुरी के लगभग अधिकांश लिखवइयन के गजल एह अंक में रहे। बाद में एही सामग्री के संकलन 'समकालीन भोजपुरी गजल' शीर्षक से, किताब का रूप में मधुर नज़्मी आ डॉ. अशोक द्विवेदी का संपादन में निकलल।

2003 में कविवर जगन्नाथ आ भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के साझा संपादन में 'समय के राग' नाम से गजल-संग्रह आइल रहे, जवना में ओह समय के लगभग सब स्थापित गजलकार शामिल रहलें। पहिला बार कवनो गजल-संग्रह में हमहूँ शामिल भइल रहनी। ओह संग्रह के बहुत चर्चा भइल। छंदशास्त्री जगन्नाथ जी के लिखल किताब 'भोजपुरी गजल

के विकास-यात्रा', 'गजल के शिल्प-विधान' आ 'हिंदी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद' भोजपुरी गजल का क्षेत्र में काम करे वाला लोग खातिर महत्वपूर्ण ग्रंथ बा।

हमरा जानकारी में, 2003 के बाद भोजपुरी के दू गो पत्रिकन के गजल-विशेषांक आइल बा। सासाराम से प्रो. नंदकिशोर तिवारी के संपादन में 'सुरसती' के गजल-अंक (जनवरी, 2007) में 14 गो कवियन के 45 गो गजल छपल बा। गजलन के अलावा एह में भगवती प्रसाद द्विवेदी के 'भोजपुरी गजल आ लोक-चेतना' आ डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के 'प्रकृति आ भोजपुरी गजल' शीर्षक दू गो महत्वपूर्ण आलेख बा। असहीं, बक्सर से डॉ. अरुणमोहन भारवि के संपादन में 'गदहपूरना' के गजल-विशेषांक (वर्ष 01, अंक 2-3, सितंबर, 2014 - अप्रैल, 2015) आइल बा।

सन 1895 में प्रकाशित तेग अली 'तेग' के 'बदमाश दर्पण' से लेके आज तक भोजपुरी गजल के समय के दायरा लगभग 131 बरिस के बा। संतोष के बात बा कि आज के भोजपुरी गजल हिन्दी आ उर्दू गजल के नकल आ परछाहीं भर नइखे रह गइल। आज ई विश्व-गजल के स्वतंत्र आ आत्मनिर्भर इकाई बने के महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुँच गइल बा। सबसे बढ़िया आ आश्वस्त करेवाला बात ई बा कि उर्दू आ हिन्दी-गजल से प्रेरित आ प्रभावित भइला के बावजूद ई अपना जरूरत आ हिसाब के मुताबिक ओहनी में से कुछ छोड़े, तोड़े आ अपना में कुछ जोड़त चले के मन-मिजाज अपनवले जा रहल बा। ई आपन रिश्ता व्यापक मानवीय सरोकारन से जोड़े में लगातार लागल बा। दोसरो भाषा के शब्दन के अपनावे के ममिला में उदार बा, एकर स्वागत होखे के चाहीं। दूसर भाषा के शब्दन के अपना भाषिक सुभाव आ खाँचा में ढाल के पचा लेवे से एकर भाषिक सुन्दरता आ शब्द-भंडार आउरो बढ़ जाता।

एकरा बावजूद एह बात के मान लीहल बेजाँय ना होखी कि भोजपुरी गजलन में भोजपुरी माटी में उपजल आ पोढ़ होत भाव के, भोजपुरिया समाज के लोग के निजी सुख-दुख, खुशी-नाखुशी, राग, द्वेष, रिश्ता, समस्या, संघर्ष, हताशा, उछाह, दरकार आ व्यवहार के स्वर के अउरी जगह देबे के बड़हन जरूरत बा। भोजपुरी भाषा के आपन एगो तेवर होला, जे निहुराह भाव के ढेर आत्मसात ना क सके। एह से भोजपुरी गजल में उधारी के भाव भा गजल के रिवायती अंदाज ढेर ना चल सके। एह जरूरत पर भोजपुरी शायर लोग के नजर बनल रहे के चाहीं, तबहीं साँच माने में भोजपुरी गजल के आपन जमीन बनीं। एकरा आपन परिचय मिली। गजल-सृजन में संख्या से बेसी स्तरीयता जरूरी बा। हमार मन बा कि भोजपुरियो में गजल चलत रहे- समय के साथ, समय के खिलाफ आ समय के पार।

हम सिनेमा आ साहित्य दुनों से जुड़ल बानी। एगो बात कहल चाहब कि बिना शिल्प के समझले (बिना छंद / बहर / मीटर के ज्ञान के) गुनगुना के गीत-गजल लिखे वाला भोजपुरी गीतकार-गजलकार लोग शिल्प के स्तर पर भोजपुरी के बड़ा अहित कइले बा। भोजपुरी सिनेमा के एने के अधिकांश गीतकार लोग गजल से लाखों कोस दूर बा। ओह लोग के रदीफ, काफिया, मतला, शेर, मक्ता के बारे में बहुत जानकारी नइखे। कुछ लोग गीत के गजल आ गजल के गीत कहके सुना रहल बा। कुछ लोग गजलनुमा गीत गा रहल बा, कह रहल बा। भयावह स्थिति बा। मिलियन-बिलियन व्यूज का चक्कर में पंचलाइन आ तुकबंदी सब पर हावी बा। गजल-गीत लिखल तपस्या ह, साधना ह। शिल्प, भाव, अंदाजेबयां ...के समझे के पड़ी आ जवना भाषा में लिखत बानी, ओह भाषा के मन-मिजाज, तेवर आ अंदाजो के। उम्मीद बा, सिनेमा में शिल्प आ साहित्य के समझ वाला गीतकार के पइठ बढ़ी आ स्थिति बेहतर होई।

'भोजपुरी जंक्शन' के ई गजल-विशेषांक वरिष्ठ शायर लोग के अनुभव आ नवोदित रचनाकार लोग के बेचैनी -- दूनों समेटले बा। एह में दिवंगत गजलकार लोग के शामिल नइखे कइल गइल। तबहूँ, वर्तमान के सब धुरंधर शायर लोग शामिले हो गइल बा, ई अंक अइसनो दावा नइखे करत।

वर्तमान समय के 51 गो गजलकार के 205 गजलन के गुलदस्ता पेश करत हमरा आत्मिक सुख के अनुभव होता। उम्मीद करत बानी कि एह अंक से गुजरत रउरो कुछ अइसने अनुभव करब।

प्रणाम।
मनोज भावुक

सेंट स्टीफंस कॉलेज से जुड़ल बापू के कहानी

महात्मा गांधी पहिला हाली राजधानी दिल्ली 12 मार्च 1915 के अइनी त सेंट स्टीफंसे कॉलेज में ठहरनी। ओजा उहां के सेंट स्टीफंस कॉलेज आ हिंदू कॉलेज के छात्रन आ फेकल्टियो से मिलनी। ओह लोग के तमाम सवालन के उत्तरो दिहनी। उहां से दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद से लगाइत ढेर खनि सवाल पूछल गइल रहे। ओकरा बाद उहां के फेरू दिल्ली अइनी त फेर सेंट स्टीफंसे कॉलेज में ठहरनी।

महात्मा गांधी हमनी के स्वाधीनता आंदोलन के महज नायक भा समाज सुधारक मात्र ना रहनी। उहां के नौजवानन भा विद्यार्थियन से मिललो-जुलल बहुत पसंद करत रहनी। उहां के स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालय में लगातार जात रहनी। उहां के पहिला हाली राजधानी दिल्ली 12 मार्च 1915 के अइनी त सेंट स्टीफंसे कॉलेज में ठहरनी। ओजा उहां के सेंट स्टीफंस कॉलेज आ हिंदू कॉलेज के छात्रन आ फेकल्टियो से मिलनी। ओह लोग के तमाम सवालन के उत्तरो दिहनी। उहां से दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद से लगाइत ढेर खनि सवाल पूछल गइल रहे। ओकरा बाद उहां के फेरू दिल्ली अइनी त फेर सेंट स्टीफंसे कॉलेज में ठहरनी। उहां के एजा बृजकृष्ण चांदी वाला नाम के एगो छात्र मिललें, जे आगे जा के उहां खातिर पुत्रवत हो गइलें। जब गांधी जी के 30 जनवरी 1948 के हत्या भइल त बृजकृष्ण चांदी वाला बिरले हाउस में रहलें। 31 जनवरी 1948 के गांधी जी के अंत्येष्टि होखे के रहे। गांधी जी के अंतिम हाली स्नान उहां के परम शिष्य बृजकृष्ण चांदी वाला रात के 2 बजे करवले रहलें। हालांकि तब गांधी जी के सबसे छोट बेटा देवदास गांधी ओहिजे रहलें। सेंट स्टीफंस कॉलेज में गांधी जी के नाम से एगो अध्ययन केंद्रो चलेला।

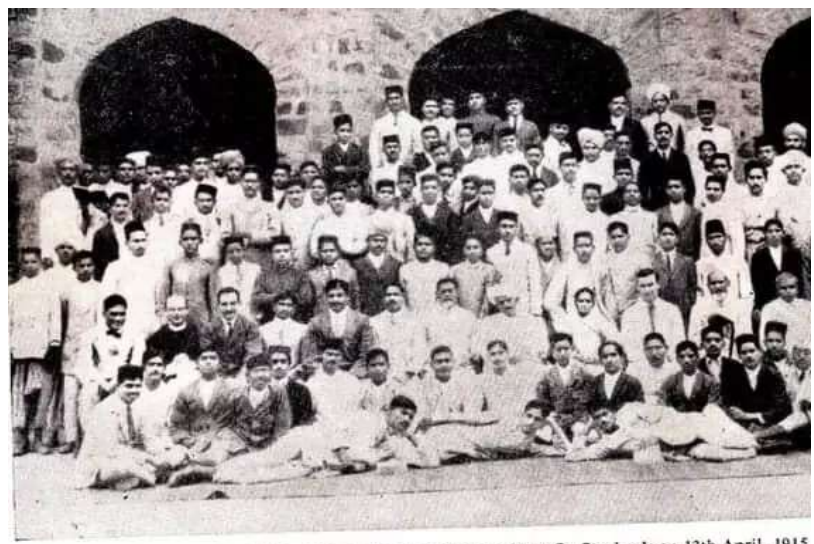

Gandhiji and Kasturba on their first visit to St. Stephen's on 13th April, 1915

देश के ई शिखर कॉलेज गांधी जी आ उहां के सहयोगी दीनबंधु सी. एफ. एंड्रयूज से प्रेरणा पावेला। दीनबंधु एंड्रयूज ओही दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी से जुड़ल रहलें जे सेंट स्टीफंस कॉलेज आ सेंट स्टीफंस

अस्पताल के स्थापना कइले रहे। अब गांधी जी के सत्य अहिंसा के विचार के माने वाला दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी (डीबीएस) सेंट स्टीफंस कैंब्रिज स्कूल स्थापित करे जा रहल बा।

ई स्कूल दिल्ली से सटल हरियाणा के राई क्षेत्र में खुल रहल बा। एह स्कूल के खुलला के पीछे इहे मकसद बा कि देश के गांव के आ पिछड़ल क्षेत्र के लइकन के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मिल सको। संजोग से सेंट स्टीफंस कैंब्रिज स्कूल उहां खुलऽता जहवाँ किसानन के रहनुमा आ स्वाधीनता सेनानी चौधरी छोटू राम के गढ़ मानल जाला। चौधरी छोटू राम किसानन के मसीहा कहल जालें आ उनकर शिक्षा दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेजे में भइल रहे। ऊ आजादी से पहिले पंजाब सूबा के कैबिनेट सदस्य रहलें। उनकर जन्म मौजूदा रोहतक जिला में 1881 में भइल रहे। तब रोहतक पंजाबे के हिस्सा रहे। दिल्ली, पश्चिम उत्तर प्रदेश आ हरियाणा के जाट समाज चौधरी छोटू राम के लेके बहुत आदर के भाव राखेला।

एह बीच गांधी जी दिल्ली में दलित लइकन के पढ़ाइयो करावत रहनी। ई तथ्य कमे लोग जानेला। इहां उनकर पाठशाला चलत रहे। उहां के अपना छात्रन के अंग्रेजी आ हिंदी में पढ़ावत रहनी। उहां के कक्षा में खाली लइके ना आवत रहलन स ओमें बड़ बुजुर्गो रहत रहलें। उहां के मंदिर मार्ग के वाल्मीकि मंदिर में 214 दिन रहनी। 1 अप्रैल 1946 से 10 जून 1947 ले उहां के सांझ बेरा मंदिर से सटल वाल्मीकि बस्ती में रहे वाला परिवार के लइकन के पढ़ाई। उहां के पाठशाला में निमन भीड़ हो जात रहे। बापू अपना ओह विद्यार्थियन के जरूरत के मोताबिक फटकारो लगावत रहनी जे कक्षा में साफ सुथरा होके ना आवत रहे। उहां के स्वच्छता पर विशेष ध्यान देत रहनी। उहां के मानत रहनी कि स्वच्छ रहला बिना रउरा ज्ञान अर्जित ना कर सकेनी। ई संजोगे ह कि एही मंदिर से सटल बाल्मीकि बस्ती से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2 अक्टूबर 2014 के स्वच्छ भारत अभियान के शुरूआत कइले रहनी। कहे के ना पड़ी कि स्वच्छ भारत

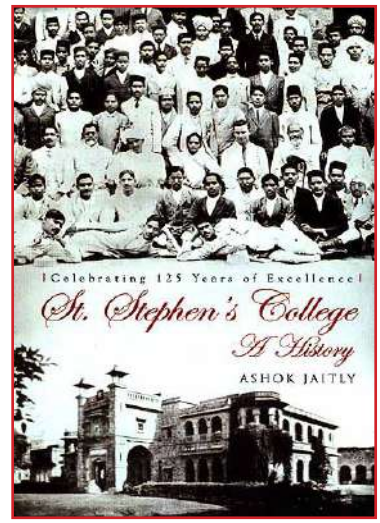

अभियान से देश में साफ-सफाई खातिर एक लेखा के अद्भुत जागरूकता पैदा भइल। ऊ मंजर यकीनन यादगार रहे जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने झाड़ू लेके दिल्ली के सड़कन पर सफाई करे उतरल रहनी। उहां के पीछे-पीछे उहां के मंत्रिमंडल के कई गो मंत्री लोग से ले के सरकारी बाबुअन तक के हुजूम सड़क पर उतर आइल रहे। 2014 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जयंती के दिने प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत मिशन के आगाज कइले रहनी। महात्मा गांधी के जयंती पर उहां के एसे बेहतर श्रद्धांजलि शायद दिहलो ना जा सकत रहे। अब स्वच्छता अभियान के असर देश के गांवहूँ में देखाई देवे लागल बा। गांधी जी कहत रहनी कि भारत के आत्मा गांव में बसेला।

खैर! गांधी जी बाल्मीकि मंदिर के जवना कमरा में पढ़ावत रहनी ऊ अबो पहिलहीं अइसन बनल बा। इहां एगो चित्र राखल बा जवना में कुछ लइका उनका गोड़ से लपटाइल नजर आ रहल बाड़े स। गांधी जी के कोशिश रहत रहे कि जेकरा तनिको पढ़े लिखे ना आवे ऊ कुछ हद तक त पढ़ लिख सको।

एही वाल्मीकि मंदिर में गांधी जी से विचार विमर्श करे खातिर नेहरू से लेके सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खानो आवत रहलें। सीमांत गांधी इहां बापू के संगे कए हाली ठहरलो बानी। वाल्मीकि समाज के ओर से प्रयास होता कि एने गांधी शोध केंद्र के स्थापना हो जाव। गांधी जी के संभवत महानतम जीवनी 'द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी' के लेखक लुई फिशरो उहां से बाल्मीकि मंदिर में मिलत रहनी। उहां के 25 जून 1946 के दिल्ली अइनी त बापू से एहिजे मिले पहुंचल रहनी। ओह समय एने प्रार्थना सभा के तैयारी चलत रहे। 'द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी' के आधार बनाइए के फिल्म गांधी के निर्माण भइल रहे।

गांधी जी के बनारसो से गहिंर संबंध रहे। उहां के अपना जीवन काल में 12 हाली बनारस आइल रहनी। उहां के 5 फरवरी 1916 के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रन आ अध्यापकन के संबोधित कइले रहनी। उहां तब बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के स्थापना समारोह मनावल जात रहे। साथहीं बीएचयू के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय, एनी बेसेंट, दरभंगा के राजा रामेश्वर सिंह के संगे कई रियासत के रजो उहां मौजूद रहे लोग। गुजराती वेशभूषा (धोती पगड़ी आ लाठी) में आइल गांधी जी मंच से लोगन के सामने तीन गो बात रखले रहनी। गांधी जी कहले रहनी- देश की जनता छात्र और आप सभी भारत का स्वराज कैसा चाहते हैं?(देश के जनता, छात्र आ रउरा सभे भारत के स्वराज कइसन चाहऽतानी?) एही बीच गांधी जी के नजर उहां मौजूद राजा लोग के आभूषण पर परल। उहां का कहनी- अब समझ में आया कि हमारा देश सोने की चिड़िया से गरीब कैसे हो गया। आप सभी को अपने स्वर्ण जनित आभूषणों को बेचकर देश की जनता की गरीबी दूर करनी चाहिए। (अब बुझाइल कि हमनी के देश सोना के चिरई से गरीब कइसे हो गइल? रउरा सब के आपन स्वर्ण जड़ित आभूषण बेंच के देश के जनता के गरीबी दूर करे के चाहीं।) कहे के ना पड़ी कि गांधी जी देश के नौनिहालन के बीच जाके बहुत बेहतर महसूस करत रहनी। ओ में देश के भविष्य देखत रहनी।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार आ पूर्व सांसद हईं।)

***

सूर्यदेव पाठक पराग के पाँच गो गजल

नामः सूर्यदेव पाठक पराग

जन्म तिथिः 23 जुलाई 1943

प्रकाशनः 2 दर्जन पुस्तकें अद्यतन प्रकाशित

संप्रतिः स्वतंत्र लेखन

संपर्कः श्री देवेन्द्र मिश्रा, सी-499/एफ, इंदिरा नगर, लखनऊ

(एक)

बदल रहल तमाम काम-काज आज गाँव के
रहल कहाँ, रहे जवन सजल समाज गाँव के

हवा चलल शहर से ऊ देहात ले पसर गइल
बने लगल बा दूरदर्शनी मिजाज गाँव के

ना आदमी के साथ आदमी में प्रेम-भाव बा
बड़न का सामने ना रह गइल लेहाज गाँव के

कहाँ सुनात बा कबो गवात ढोल-थाप पर
ऊ सोरठी भा लोरिकी, रहे जे नाज गाँव के

रहे कबो मगन सभे बँटल ना घर भा दिल रहे
कहाँ गइल, रहे कबो जे राम-राज गाँव के

(दू)

धूप-छाँव, हार-जीत के मिलान जिन्दगी
बैर-प्रीति, रीति-नीति के बयान जिन्दगी

बा सबेर का किरिन में खूबसूरती भरल
शबनमी उजास में प्रकाशमान जिन्दगी

चाँदनी भरल कबो, कबो प्रचण्ड ताप ले
मेघ से घिरल अथाह आसमान जिन्दगी

काल के कराल भाल पर लिखल सुलेख हऽ
आदमी का कर्म के रचल विधान जिन्दगी

ज्ञान के विलास से हुलास प्रान में भरे
रोज-रोज के कहल कथा-पुरान जिन्दगी

जन्म के विहान ई, उठान मध्य काल के
साँझ का प्रकाश के हवे ढलान जिन्दगी

(तीन)

दरदे अबले उपहार मिलल
अपना मतलब के यार मिलल

बगिया-बगिया कम ना छनलीं
बदले कुसुमन के, खार मिलल

आटा गिल कइलीं घर ही के
कुछ यश, कुछ बा आभार मिलल

पग-पग पर बाधा बान्ह बनल
राहे चलते बटमार मिलल

कइसे थम पाई लूट-झपट
भक्षक जब पहरादार मिलल

हम मंचन कइलीं तन-मन से
जइसन हमरा किरदार मिलल

दाता धरती पर लउके ना
जे लउकल से लाचार मिलल

(चार)

छन-छन में अब लोगन के ईमान बदल जाता
देखत-देखत मन्दिर के भगवान बदल जाता

कइसे रात अन्हरिया भकसावन नाहीं लागे
चमचम चमकत अम्बर तक के चान बदल जात

कुरसी पर बइठे के पहिले बात बहुत होता
मौका मिलते लोगन पर से ध्यान बदल जाता

भीतर-भीतर कीचड़ ऊपर से चन्दन गमके
दू कौड़ी के खातिर हर इन्सान बदल जाता

प्रेम-मुहब्बत पइसा-रुपया पर सब बेंच रहल
व्यापारी बन केकर ना मन-प्रान बदल जाता

बाप मजूरी करत थकल बा तन घिसिया-घिसिया
बेटा के देखीं कइसे सन्तान बदल जाता

गाँवन के हालत बिगड़ल नइखे लउकत अपना
बम्बे-दिल्ली से ई हिन्दुस्तान बदल जाता

(पाँच)

गरम जमीं पर जल-कन जइसन, सुख के छन गुजरल
प्रेम-मुहब्बत पीयर पतइन जइसन रोज झरल

गिरगिट जइसन रंग बदलके, कब के मिल जाई
कठिन बतावल, सिंह कवन बा, कवन सियार रँगल

मन का सागर में रह-रह के, तूफानी हलचल
डोल रहल धीरज के नइया, धारा भइल प्रबल

जटिल समस्या सुरसा जइसन लउके मुँह बवले
जनमे से जे मिलल गरीबी, अबले रहल डटल

आसा-टिसुना सोना के मृग जइसन दउड़ रहल
सउँसे जिनगी सपने देखत में दिन-रात कटल

डेगे-डेगे कल-बल-छल के, खेल चल रहल बा
बिहँसे बोतल के आसव अब होके गंगाजल

***

डॉ. अशोक द्विवेदी के पाँच गो गजल

नाम: डॉ. अशोक द्विवेदी

जन्म तिथि: 01 मार्च, 1951; गाजीपुर (उ.प्र.)

प्रकाशन: घनानन्द और उनकी कविता (आलोचना) 1975, 'मीसा' में बन्द देश (कविता संग्रह) 1977, अढाई आखर (भोजपुरी कविता संग्रह) 1978, समीक्षा के नए प्रतिमान (आलोचना) 1992, रामजी के सुगना (भोजपुरी निबंध संग्रह) 1994, गाँव के भीतर गाँव (भोजपुरी कथा संग्रह), 1998 (उ.प्र.) हिन्दी संस्थान (उ. प्र. से राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार), आवऽलवटि चर्ती (कथा संग्रह) 2000, फूटल किरिन हजार (कविता-संग्रह) 2004, मोती बी.ए. रचना संसार (मोनाग्राफ) 2014, साहित्य अकादेमी से, कुछ आग कुछ राग (कविता संग्रह) 2014, बनचरी (उपन्यास) 2015, रामजियावनदास 'बावला' (मोनाग्राफ) साहित्य अकादमी वर्ष-2018, भोजपुरी रचना आ आलोचना (समीक्षा) 2018

संप्रति: भोजपुरी पत्रिका 'पाती' के विगत 46 वर्ष (1979) से संपादन

संपर्क: बी-1/906, त्रिदेव अपार्टमेन्ट, सामनेघाट, वाराणसी-5

(एक)

एह सियासी नगर में का नइखे ?
खाली निकले के रास्ता नइखे

तहरा ऊँचा मकान का भितरी
जिये क कवनो सिलसिला नइखे

आज नाटक बा हमरा जिनिगी पर
ओमे खुद हमरे भूमिका नइखे

ओकरा अँखिया में ना चमक उभरल
ओमे अब कवनो लालसा नइखे

गाँव वालन पऽ आजु बा जलसा
गाँव वालन के कुछ पता नइखे

ताड़ से छाँह क कइसन असरा
बर-पीपर मतिन पिता नइखे

एह नगर में जियल कठिन बाटे
रोसनी बाटे त हवा नइखे

(दू)

चमक दमक में, इहाँ सादगी मिलत नइखे
हवा चलत बा, मगर ताजगी भरत नइखे

एह सुघराई में लागत बा कहाँ रूप के आँच
अन्हार मन में कहीं रोशनी बरत नइखे

उड़ रहल बाटे कबूतर चिल्होर का साथे
जुग नया बाटे मगर दोस्ती जमत नइखे

महक से अउँज उठे साँस-साँस में भरि जाव
इहाँ फुलवारी में अब ऊ कली खिलत नइखे

हादसा कब कहाँ घटि जाव, कहाँ बा मालूम
कौनो अनहोनी का डर से, खुशी उगत नइखे

कहाँ बा इतमिनान, देख के महसूस करीं
अतना जल्दी बा कि मिललो खुशी रुचत नइखे

खउफ का मारे हिलत नइखे इहाँ पतई ले
दूब मैदान के अब चाँदनी चरत नइखे

(तीन)

कुछ कहल ना त कुछ सुनल हमसे
रंज बा उनका आजकल हमसे

कुछ कहल उनका जतना बा मुश्किल
ओसे अधिका बा चुप रहल हमसे

ऊ त रतिये के दिन कहत रहलन
ना बनल झूठ ई कहल हमसे

सच कहसु, कइसे भरल महफिल में
राह उनका नया मिलल हमसे

बा जमाना का सिकाइत बहुते
ना गइल पाछा चुप चलल हमसे

उनका दरबार सभे जात रहे
नाहीं सपरल उठल बइठल हमसे

आपुसी बात ना, देखउवल ना
राह रून्हल रहे, खुलल हमसे

जिन्दगी राग में गुजरल अबले
आजुले राग ना रूसल हमसे

बाद हमरा, बुला चरचा होई
शायरी अउर कुछ निखरल हमसे

(चार)

बदरी बा अकास में, मन में, डबडब अँखियन में
कई दिनन से दिन ना निकलल घर का आँगन में

पानी में घरियार, बान्ह पर गोजर बिच्छी साँप
हमहन के तकदीर लिखाइल अजबे बान्हन में

साँझ भइल, भीतर गहिराइल रात, अन्हरिया के
करिखाइल ललटेन रिगावे घर के छाजन में

आन्ही-पानी, पाथर पाला, धूर, बवंडर आगि
मँगरू मुखड़ा देखें आपन फुटहा दरपन में

खरकल ना पानी, बढ़ि आइल घर का ड्योढ़ी पर
भागत बाटे लोग, छोड़ि घर आनन-फानन में

मन गहुर्वाइल, उतरल चेहरा, असरा मुवल-मुवल
का जाने कब राहत आई डूबत गाँवन में

ठठरा भइँस, दुलम बा लेहना, गढ़ीं कहाँ से घास
अब लड़िकन के दूध भेंटाइ अगिले सावन में

(पाँच)

संग सबका जिये-मरे लवटऽ !
अबकी लवटऽ त कुछ करे लवटऽ !

अपना माटीऽ क गंध खींचत बा
अब तऽ तूं ओकरे आसरे लवटऽ !

तहरा असरा में बा दिया-बाती
हो गइल साँझ तूं घरे लवटऽ !

बह-बिला जाव ना पुरुखन के घर
कम से कम एहू का डरे लवटऽ !

बूढ़ कबले लड़ी हुँड़ारन से -
पुत्र बन, पितृ-दुख हरे लवटऽ !

आवऽ ए आगि में जरि के तप के
बन के सोना अउर निखरे लवटऽ !

जिन्दगी में अभी बहुत कुछ बा
रंग ओकरा में तूं भरे लवटऽ !

***

भगवती प्रसाद द्विवेदी के पाँच गो गजल

नामः भगवती प्रसाद द्विवेदी

जन्म तिथिः 01 जुलाई 1955

प्रकाशनः हिन्दी आ भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि, समालोचक आउर लोकसाहित्य के अध्येता। बालसाहित्य के समर्पित रचनाकार। हिन्दी आ भोजपुरी में एकइस-एकइस गो आउर बालसाहित्य के शताधिक कृति प्रकाशित, विभिन्न राज्य के पाठ्यपुस्तकन में सम्मिलित आ अंग्रेजी आ भारतीय भषन में अनूदित।

संप्रतिः भारत सरकार के दूरसंचार विभाग से सेवानिवृत्त होके स्वतंत्र रूप से सिरिजन।

संपर्क : सर्जना, बिस्कुट फैक्ट्री रोड, मगध आईटीआई के निकट, नासरीगंज, दानापुर, पटना -801 503 (बिहार)

(एक)

दुनियादारी काहें खातिर?
ई पटिदारी काहें खातिर?

पाखी के पिंजड़ा में पोसत
पहरेदारी काहें खातिर?

ढांपल-तोपल रहल अभी ले,
देहउघारी काहें खातिर?

जब संसार किराया के घर,
महल-अटारी काहें खातिर?

दू दिन के मेला में खेला!
ई बटमारी काहें खातिर?

(दू)

दियना बनिके जरत रहब
अन्हियारा में बरत रहब

ले आई कुदरत पतझर
फूल मतिन हम झरत रहब

बुढ़िया आन्हीं हदसाई
ना हदसब ना डरत रहब

हम भंवरा गुन-गुन गावत
कलियन पर नित मरत रहब

होला गजल कहल मुसकिल
तबहूं कोशिश करत रहब

(तीन)

जब मिलले, अलगाव भइल
हरियर कवनो घाव भइल

खोंता छोड़ि उड़ल चूजा
नाता-नेह-दुराव भइल

घर-घर में बाजार घुसल
रिश्ता सब बेभाव भइल

देखसु जब हरियर-हरियर
पीयर-लाल सुभाव भइल

गांव बसल बाटे भितरी
तबहीं दिल दरियाव भइल

(चार)

रउवां कोंचीं
तब हम सोचीं

जतने सोचीं
माथा नोचीं

दुख सुहुरावे
आंसू पोंछीं

भरमावे सुख
खुद के कोचीं

रउवें सोचीं
का हम मोचीं !

(पाँच)

जखम बहुत बा, भरि जाए दीं
रोज मुवत बा, मरि जाए दीं

रउरा कनखी में जादू बा
जादू इचिका करि जाए दीं

बदली हमरो सूरत-सीरत
बस ई बखत गुजरि जाए दीं

कादो में अब कमल खिला के
गम-गम गमक बिखरि जाए दीं

खून-पसेना मोती बनिके
चमकी, भोर उतरि जाए दीं

***

दक्ष निरंजन शम्भु के पाँच गो गजल

नामः दक्ष निरंजन शम्भु

जन्म तिथिः 22 अप्रिल 1952, देव हवेली, पिलुई (सारण)

प्रकाशनः हिन्दी, उर्दू आ भोजपुरी में गद्य लेखन आ काव्य सृजन/ विभिन्न पत्र-पत्रिका में रचना प्रकाशित / 'एक पर एक', 'उत्पल' आदि कई गो संकलन में सहकवि

संप्रतिः हैण्डराइटिंग एवं फिंगर प्रिण्ट एक्सपर्ट

संपर्क : प्रोफेसर कालोनी, मिशन रोड, पूर्वी दहियावां, छपरा (सारण) बिहार

(एक)

इ मन रह रह के तोहरे के पुकारे
कबो एने कबो ओने निहारे

पधारे सांझ आशा के किरन ले
फजीरे, बस उहे, कउवा उचारे

विरह के वेदना सावन के रिमझिम
कहीं कोयल कहीं पपिहा पुकारे

कहाँ मझधार के हम बात सोचीं
इहां त२ नाव डूबत बा किनारे

खुशी से हो गइल जब से अदावत
कटत बा ज़िन्दगी गम के सहारे

उहें जा के भुला जाला फुटानी
पड़ेला बोझ, जब अपना कपारे

कहाँ केहू कबो जिनिगी में पूछल,
मगर मुअला पे जूटल बा जवारे

कफन ओकरा के नौ गज के दिआइल
कटल बा ज़िन्दगी जेकर उघारे

चलऽ मननी कि फेरू जन्म होई
मगर शंभू तऽ, ना अइहें दोबारे

(दू)

आके दिल में समा गइल केहू
चैन जिनिगी के खा गइल केहू

आग दिल में लगा गइल केहू
कौन बदला सधा गइल केहू

आंख के लोर में सनल जिनिगी
जाने कादो बता गइल केहू

खुद के हालत से ना रहीं वाकिफ
आके दरपन दिखा गइल केहू

बेखबर हुस्न इश्क से रहनी
रोग लरछुत धरा गइल केहू

बात मन के कहे के जब चहनीं
शम्भु अचके में आ गइल केहू,

(तीन)

दर्द के किस्सा जुबानी मत कहीं,
हाले दिल कह दीं कहानी मत कहीं

ताज के बुनियाद त ईहे नू ह
आंख से टपके त पानी मत कहीं

इ गरीबन के महल ह, जान लीं
हरसठे मड़ई पलानी मत कहीं

सोझ रखले बा इहे नू पीठ के
देख ओरचन गोड़तानी मत कहीं

काम जे शम्भू ना आइल देश के
ओह जवानी के जवानी मत कहीं

(चार)

इ दुनिया में आ जिनिगी में बहुत गम बा कि ना बोलीं
सहे के रउरा हियरा में भी दमखम बा कि ना बोलीं

घटा उमड़ल पड़े बूनी विजिलियो भी चमकते बा
बोलावे के भला रउरा के मौसम बा कि ना बोलीं

झलक जब मिल गइल उनकर दवा के का जरूरत बा
करेजा के दरद पहिले से कुछ कम बा कि ना बोलीं

चलीं हम मान लिहनी क्रोध बा, इर्ष्या, जलन बाटे
मगर मन में कहीं तनिको सा संयम बा कि ना बोलीं

कहीं ईश्वर कहीं अल्लाह, काशी भा कहीं काबा
इ गंगा जल समाने आबे जमजम बा कि ना बोलीं

पड़ोसी रोज गरियावे चलावे तीर आ भाला
जबानो में भला रउरो भी कुछ दम बा कि ना बोलीं

भइल जे घाव बा दिल में बनल नासूर अब ऊहे
छोड़ावे के कहीं कवनो भी मलहम बा कि ना बोली

कभी रोवे कभी बिहंसे कभी गुमसुम भी हो जाला
हंसी आ लोर के जीवन इ संगम बा कि ना बोलीं

जे भूखे पेट मन के मार के सहमल रहे ऊहे
लइकवा आज खइले बा त बमबम बा कि ना बोलीं

भले राउर करेजा काठ के होखे मगर रउरो
निरख शंभू के हालत आँख कुछ नम बा कि ना बोलीं

(पाँच)

नभ में उड़ल कपोत कबो पकड़ाई ना
बीत गइल जे समय लौट के आई ना

यादन के बा भीत बनल अइसन मन में
कवनो बही बयार कबो भहराई ना

नेह छोह आ प्रेम प्यार के रसरी में
गांठ कबो ना पड़ी कबो अझुराई ना

ओकरा से होशियार, रहीं दूरे दूरे
जे सब कुछ करके भी पड़े लखाई ना

प्रेम जेठ के दुपहरी ह सांचो का
एकरा पर बदरी कबहूं का छाई ना

प्यार-द्वेष-इर्ष्या-स्पर्धा में कबहूं
आगे पीछे कुछ भी पड़े दिखाई ना

जे जर जर के ज्योति देखावे दुनिया के
अइसन सूरज कइसे भला पुजाई ना

चांद सुरुज कह दीं त दूरे हो जइबऽ
हमरा से कबहूँ ई बात सहाई ना

नेह छोह के जेह में बाती तेल पड़ल
शंभू अइसन दियरी कबो बुताई ना

***

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र के पाँच गो गजल

नामः डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

जन्म तिथिः 22 दिसम्बर, 1954

प्रकाशनः दू रंग (कविता), अचके कहा गइल (गजल संग्रह), भोजपुरी काव्य में अलंकार - रस - छंद (काव्यशास्त्र), महावीर जी सदा सहाय (गाथाकाव्य), कसौटी पर भोजपुरी कविता (आलोचना समीक्षा), खरकत जमीन, बजरत आसमान (कविता), भोजपुरी साहित्य : परम्परा आ परख (आलोचना-समीक्षा), उफनत दरिया बाटे रात (गजल), भोजपुरी साहित्य : समय के साखी (आलोचना समीक्षा) आदि के अलावा अकादमिक लेखन, जन शैक्षणिक लेखन आ बतौर संपादक दर्जन भर पुस्तक प्रकाशित

संप्रतिः पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

संपर्कः मुजफ्फरपुर, बिहार

(एक)

जइसे तइसे जीअत बानी
फाटल लुगरी सीअत बानी

नीला कंठ त बाटे हमरे
हरहर माहुर पीअत बानी

जीये के सरजाम खतम बा
लाहे लाहे मूअत बानी

होठन पर मुसुकी के सटले
भितरे-भीतर रोअत बानी

उखड़ल जाता गोर धरा से
अउर गगन के छूअत बानी

(दू)

आग मुसुकी से लगावल ना मुनासिब होई
दीप बूतल बा, जरावल ना मुनासिब होई

अब कहीं बा कहाँ रजगज ऊ बगइचा वाला
अबहूँ तितली के उड़ावल ना मुनासिब होई

देह नारी के उघारत बा, पतिरिका, टी.वी.
अतना औरत के गिरावल ना मुनासिब होई

केहु जीतल, केहु हारल, का मिलल हमनी का
बेवजह जश्न मनावल ना मुनासिब होई

होश से काम लीं जनि जोश में आई झब से
मुफ्त जिनगी के गँवावल ना मुनासिब होई

(तीन)

चान बदरी से जब निकल जाला
गीत गावल गजल लिखल जाला

रूप अइसन कि चान शर्माए
एह अंजोरिया में मर मिटल जाला

आँखि सपना सहेजे लागेला
नेह बरखा से मन भिंजल जाला

नाम मितवे के मन का भावेला
नाम हरदम उहे रटल जाला

रीत जाला जिनगी रचते में
तब कहीं कुछ कहल सुनल जाला

(चार)

घोर अन्हरिया बाटे रात
कुच-कुच करिया बाटे रात

हारल थाकल मनई खातिर
दिन दुपहरिया बाटे रात

डूबे के डर बहुते बा
उफनत दरिया बाटे रात

आँख में सपना झँउसत बा
जइसे झरिया बाटे रात

चाई चोर आ भोगी लेल
नीमन जरिया बाटे रात

शहर नगर में चकमक बा
उज्जर करिया बाटे रात

चमकल धोअल माँजल बा
फुलहा थरिया बाटे रात

(पाँच)

एगो मूरत दिखा गइल केहू
हमरा आँखिन समा गइल केहू

प्रीत होला का, नेह का होला
सेहू बतिया बता गइल केहू

थीर जल में लहर उठे लागल
चुपके पत्थर चला गइल केहू

बीख बखरा में मिल गइल हमरा
हमके शंकर बना गइल केहू

गीत रचही में रीत गइनीं हम
बान अइसन लगा गइल केहू

***

प्रो. वशिष्ठ अनूप के पाँच गो गजल

नामः प्रो. वशिष्ठ अनूप
जन्म तिथिः 1 जनवरी 1962, ग्राम सहड़ौली, पो. फरसाड़- साऊँखोर (बड़हलगंज) गोरखपुर, उ.प्र.।
प्रकाशनः कविता, गीत, गजल, समालोचना आ सम्पादन सहित कुल 57 पुस्तक प्रकाशित।

गजल और गीत संग्रहः स्वप्न के बाद, बंजारे नयन, रोशनी खतरे में है, बेटियों के पक्ष में, रोशनी की कोपलें, अच्छा लगता है, मशालें फिर जलाने का समय है, तेरी आँखें बहुत बोलती हैं, इसलिए, घरों पर गिद्ध मड़राने लगे हैं, गर्म रोटी के ऊपर नमक- तेल था, बारूद के बिस्तर पर,छंद तेरी हँसी का। भोजपुरी गजल-संग्रह-सुंदर बिहान होई।

आलोचना पुस्तकः समकालीन कविता के प्रतिमान, आधुनिक हिन्दी कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि और सृजन, हिन्दी कविता के प्रमुख विमर्श, कविता के जनवादी स्वर, जगदीश गुप्त का काव्य-संसार, हिंदी गजल का स्वरूप और महत्वपूर्ण हस्ताक्षर, हिंदी गजल की प्रवृत्तियाँ, हिंदी गीत का विकास और प्रमुख गीतकार, हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास, गीत का आकाश, हिंदी भाषा, साहित्य एवं पत्रकारिता का इतिहास, हिन्दी की जनवादी कविता, अँधेरे में एक पुनर्विचार, असाध्यवीणा की साधना, उर्दू के प्रतिनिधि शायर और उनकी शायरी,लोकसाहित्य का मर्म इत्यादि।

संप्रतिः प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, बीएचयू
संपर्कः 204/11, राजेन्द्र अपार्टमेंट, रोहितनगर (नरिया) वाराणसी 221005

(एक)

न राजा क किस्सा, न रानी क किस्सा
लिखल जात बा हकबयानी क किस्सा

बहुत हो गइल फूल, शबनम, तबस्सुम
लिखऽ तमतमाइल जवानी क किस्सा

हमेसा न होला परी-लोक सुन्दर
लिखे के पड़ी आगि-पानी क किस्सा

कठिन श्रम से माथे प चमकत पसीना
लड़त हर कदम, जिन्दगानी क किस्सा

चुनौती बनल ढोंग-पाखण्ड सब के
लिखऽ फिर कबीरा के बानी क किस्सा

जरे खेत में, ईंट-भट्ठा प जीवन
सुहाला न तब रातरानी क किस्सा

(दू)

हमरा धूमिल बिहान हे भाई
उनकऽ जगमग जहान हे भाई

घूस, ब्यभिचार, लूट, लम्पटई
अउरी गंगा नहान हे भाई

घर क हर चीज लगे बेमतलब
नीक लागे दुकान हे भाई

शरीफ आदमी भइल बेबस
बा लफंगन के शान हे भाई

डुगडुगी फिर समर क बा बाजल
फिर उठावऽ कमान हे भाई

मन पखेरू ह केतनो समझाई
ई भरेला उड़ान हे भाई

(तीन)

अजब ढंग कऽ ई छिड़ल बा लड़ाई
भलाई प भारी पड़ति बा बुराई

सुनीला कि नेतवा अँजोरिया पठाई
किरन गाँव तक ओकर कहिया ले आई

बा मड़ई क घर बा न लौना-पताई
ई जाड़ा क दिन अउरी फटही रजाई

जे सूरज के साथे जनम भर खटेला
अन्हारे में कहिया ले ऊ छटपटाई

बा कुकुरन के लेखा गरीबन क जिनगी
केहू थपथपाई, केहू दुरदुराई

ई मन चहचहा जाला चिरई के लेखा
पड़े कब्बो जब कजरी-फगुआ सुनाई

(चार)

ए तरह से न हरदम लजा के मिलऽ
कहियो हमरा से तूँ मुस्करा के मिलऽ

तू लगेलू विधाता क अनुपम सृजन
पाँव पायल छमाछम बजा के मिलऽ

हमके हर रुप में नीक लागेलू तूँ
खिलखिला के मिलऽ, गुनगुना के मिलऽ

रूप सुन्दर लगे सादगी में मगर
कहियो मेंहदी-महावर रचा के मिलऽ

चाल में छन्द बा, छन्द में बा हँसी
खूब अचरा हवा में उड़ा के मिलऽ

रंग कंचन बरन, जुल्फ कारी घटा
पूनमी चाँदनी में नहा के मिलऽ

(पाँच)

चंद्रमा के तरह रूप दमकत रहे, फागुनी चाँदनी जगमगाइल रहे
नैन बनि के चकोरवा निहारल करें, तुहरे सूरत प मनवाँ लुभाइल रहे

तू चलेलू त तुहके निहारेला जग, तू रुकेलु त सूरज क रुकि जाला रथ
तुहरे आँखी क कजरा न भीगे कबो, तुहरे अँचरा में मोती भराइल रहे

ओठ लागे गुलाबे के हो पंखुड़ी, आँखि हिरनी लगे, भाव में उर्वशी
तू जो बोलऽ कोयलिया के लागे कुहुक, जब हँसऽ चाँदनी चहचहाइल रहे

चूड़ी-कँगना कलाई में खनकत रहे, पाँव पायल छमाछम बजे प्यार से
देह बगिया नियर खूब फुले-फले, जिन्दगी में खुशी लहलहाइल रहे

आँचि लागे न तुहके कभी घाम कऽ, तुहरे सिर प विधाता क आशीष हो
शान्त शीतल सुरभि साथ तुहरे चले, चैन-सुख से ई तन-मन जुड़ाइल रहे

***

आसिफ रोहतासवी के पाँच गो गजल

नामः आसिफ रोहतासवी

जन्म तिथिः 01 नवंबर 1960, बिहार के कैमूर जिले के सकरी नामक गांव में

प्रकाशनः महक माटी के, आसमान बाकी बा, रेत के सफर, हारल त नइखीं (सभी भोजपुरी गजल – संग्रह); सफर के दरमियां (हिंदी गजल– संग्रह); चटखती दीवारें (कविता संग्रह); हिंदी गजलः शिल्प एवं कला, सर्जक और सृजन, बारह आलेख (आलोचना पुस्तकें); भूमिहीन, रामजियावन दास बावलाः महत्व और मूल्यांकन, डॉ. नंदकिशोर तिवारी अभिनंदन ग्रंथ, भोजपुरी अकादमी पत्रिका, बिहार, परास त्रैमासिक (संपादन)।

संप्रतिः पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पटना सायंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय।

(एक)

खीची लोग जबान, करीं का, ए बाबू
सांच कहे के बान, करीं का, ए बाबू

हाकिम बिरधापेंसन ला दउरावेले
अपने कचरसु पान, करीं का, ए बाबू

रासनकाड के बदले मेहरी मांगेलें,
मुखिया आ परधान, करीं का, ए बाबू

महंगा बा बाजार, फिरौती–अगवा के
सस्ता मानुसजान, करीं का, ए बाबू

नीन गइल आंखिन से, मन से चैन गइल
बेटी भइल सयान, करीं का, ए बाबू

जिनगी जीयल जाता–ना–मुअले जाता
सांसत में बा जान, करीं का, ए बाबू

बीतल सऊंसे उमिर जुटावे में 'आसिफ'
लकड़ी–नून–पिसान, करीं का, ए बाबू

(दू)

घाम में अलगनी पर टंगाइल बहुत
जिंदगी पत्थरन पर फिंचाइल बहुत

लोर नुनछाह, तीखर आ तातल रहे
ओठ पीके मगर मुस्कुराइल बहुत

लोग अपना के बेरी त लासा भइल
बाकी हमरा के बेरी चिन्हाइल बहुत

अपना परछाहियों में त हमहीं रहीं
देखि रोवां मगर भरभराइल बहुत

रेत तवंकल त कांपत हवा देख के
नाजे काहें, नदी थरथराइल बहुत

रोशनीओ में 'आसिफ' अन्हारे रहे
चांदनी रात भर जगमगाइल बहुत

(तीन)

देखे में सीधा-साधा, बउराह बुझालें बाबूजी
बाकिर भर गांवें में अगहर, नेक कहालें बाबूजी

आफत-बीपत के घामे जब हम मउराए लागीले
तब छंहिरा बर-पीपर-पाकड़ के बन जालें बाबूजी

जीव अबहियो लरिकाईं-अस नाजे काहे कांपेला
जब-जब कवनो गलती पर तनिको खिसियालें बाबूजी

काशी-मथुरा जाए के ना नांव कबो लेले होइहें
पछियारी अहरा में गंगा रोज नहालें बाबूजी

धान-गहूं के हरियर चुनरी जब खेतन में हलरेला
आरी पर बइठल-बइठल कतना अगरालें बाबूजी

गांवें से कवनो नवही पंजाब कमाए जब जाला
छवरा के बर तर बइठल दिन भर सुसुकालें बाबूजी

पहिले घर-भर कांपत रहुए, आज रिटाएर भइला पर
का जाने काहे, 'आसिफ' अतना गम खालें बाबूजी

(चार)

अबो ले इहे बा कसक जिंदगी के
मिलत नइखे जीये के हक जिंदगी के

सुनी के नदी-वन-पहाड़न के कहंरल
न काने में खनकल खनक जिंदगी के

जहां देख लीं- भूख, मउवत के पहरा
सुनाता ना कतहूं धमक जिंदगी के

जवन मउज, सरकार! रउरा किहां बा
कहां बा इहां ऊ ठसक जिंदगी के

सरग पर त सदियन से रउरे हुकूमत
हुकूमत में हमरा नरक जिंदगी के

कइल मन कबो जब कि चीखीं - चिल्लाई
दबावल गइल बा हलक जिंदगी के

सिरिफ हमरे बूते ह खुशबू चमन में
न हिस्सा में हमरे महक जिंदगी के

तवारिख1 में कतहूं न अपना के पइलीं
पलट गइलीं सऊंसे वरक2 जिंदगी के

बुझाता कि ई 'आसिफे' के गजल बा
निचोरल गइल बा अरक3 जिंदगी के

1.इतिहास 2.पन्ना/पृष्ठ/सफा 3. अर्क/सत्व/सत्त

(पाँच)

सहल खूब पत्थर आ पानी, ए बाबू
बखरिया के झांझर पलानी, ए बाबू

बहुत आग ओकरा करेजा में तवंके
धुआंला ना जेकर चुहानी, ए बाबू

सुनीं ओकरो कुछ, बहुत जीयले बा
जे मउअत नियन जिंदगानी, ए बाबू

हंसाई-रोआई कबो गुदगुदाई
जिनिगिया के अजगुत कहानी, ए बाबू

बहुत याद आवेला गांवे के महुआ
इहां1 जब फुले रातरानी, ए बाबू

नेवाइल2 कहां बा, अबो टीसते बा
करेजा में नगवा-बथानी, ए बाबू

पसेना प हमरे झिरिहिरी खेलाता
पसेना प हमरे फुटानी, ए बाबू

समुझदार होके त पछतात बानी
भले नीक रहुए नदानी, ए बाबू

रहे प्यार लिख-लिखके चिट्ठी में आवत
मोबाइल प अब मुंहजबानी, ए बाबू

सवादीं नू, 'आसिफ' के खांटी ह देसी
गजल ना लिखाइल 'चलानी'3, ए बाबू

1.शहर 2. दर्द कम भइल 3.बाहरी/अन्य भाषा से प्रभावित

***

रिपुंजय निशांत के पाँच गो गजल

नामः रिपुंजय निशांत

जन्म तिथिः 04 मार्च 1950

प्रकाशनः 'सुधियों के पाँव' (हिन्दी काव्य संग्रह), 'आवे याद बसेरा' (भोजपुरी काव्य संग्रह)

संपर्कः राम राज चौक, दहियावां, छपरा, जिला-सारण

(एक)

जगा के नींद से सपना दिखा गइल केहू
खुलल जे आँख त कहँवा लुका गइल केहू

चलल ना साथ में आगे बढ़ा के, एह से का ?
इहे का कम बा कि हिम्मत बढ़ा गइल केहू

भला-बुरा के ना खटका कबो भइल मन में
हठी सुभाव के घाटा बता गइल केहू

शिशिर-हेमन्त के जब कँपकँपी ओराइल त
चइत के भोर के चर्चा चला गइल केहू

कहाँ त चैन से सुतल रहे तपस्वी मन
उठा के हाथ पर सरसों उगा गइल केहू

रहल त झूठ ना जतना कहल गइल अबले
त काहे साँच सुनत तमतमा गइल केहू

(दू)

तार छेड़ के सितार के
गीत गा रहल मल्हार के

मंत्र मुग्ध हो गइल हिया
देख सावनी फुहार के

खिल गइल बा साध के सुमन
आ गइल जे दिन बहार के

प्रेम के पवित्र पंथ पर
डेग कब उठे सम्हार के ?

छा गइल उषा के लालिमा
दिन गुजर गइल अन्हार के

(तीन)

समुन्दर में जे गोता खा रहल बा
किनारा पा के उ पछता रहल बा

जुटा पावल ना जे साहस डूबे के
उहे दर-दर के ठोकर खा रहल बा

समय विपरीत बा एह से भइल का ?
उ संकट में पड़ल मुस्का रहल बा

रहे उन्मुक्त जे विचरत गगन में
उ पिंजड़ा में सिमट छपटा रहल बा

जहर पी के अमरता पा गइल जे
उहे जुग-जुग से पूजल जा रहल बा

(चार)

नदी बा, नाव बा, पतवार बाटे
केहू उतरत कहाँ अब पार बाटे

खड़ा बा रेत के दीवार तट पर
कहाँ पानी में ओइसन धार बाटे

लहर नाचत हवा के ताल पर बा
भँवर कहँवा भरत अँकवार बाटे

किनारा बा अलग एक दूसरा से
मिलन के बिन्दु का मँझधार बाटे

ओने आकाश बा धरती एने बा
मगर नाविक क्षितिज के पार बाटे

(पाँच)

आजकल के आदमी जे जी रहल बा
जान के अमृत जहर ऊ पी रहल बा

हो गइल बाटे कठिन जब देह ढाँपल
माँग के गूदरी उ पेवन सी रहल बा

जे पड़ल बा दिन में भूखे पेट सूतल
सोच रतिया के मुआवत भी रहल बा

दूध के धोअल इहाँ ऊहे नू बाटे
जेकरा आँखें दुख भरल गगरी रहल बा

आज तक ले जे रहल बा घर जरावत
आग ना, उ छोट चिनगारी रहल बा

गड़ गइल बा शर्म से काहे इ मूड़ी
जब कि, लाजे माथ के पगड़ी रहल बा

ढल रहल बा उम्र का साथे जे सूरज
भोर सुन्दर रात का कोखी रहल बा

***

सुनील कुमार तंग के पाँच गो गजल

नामः तंग इनायतपुरी

जन्म तिथिः 2 जनवरी 1958

प्रकाशनः सियासत में गजब बा नाम राउर

संप्रतिः हस्तलिपि एवम अंगुलांक विशेषज्ञ, सिवान

संपर्क : रजिस्ट्री ऑफिस रोड, कुमार पुरम, सिवान (बिहार)

(एक)

दुनिया भर में लोग बाग से धरम-करम के रिश्ता बा
तोरा-हमरा बीच में पगली ! सात जनम के रिश्ता बा

धरती पर जब आइल बानी, पाहुन जइसन हम-रउरा
माया-मोह, सवारथ-सपना, भाव-भरम के रिश्ता बा

मन से मन के रिश्ता के सब, रेशम-धागा टूट गइल
अब त हमरा-उनका में बस कौल-कसम के रिश्ता बा

पत्थर दिल भी पत्थर के पूजत-पूजत भगवान भइल
पत्थर से पत्थर के बीचे रूह-सनम के रिश्ता बा

मन से मन मिलते नइखे, तब आपन-गैर कहाला का
भाई भइला के बादो बस रीत-रसम के रिश्ता बा

झूठ-सांच के एह नगरी में, पांच बरस पर याद परल
घूम-घूम के भूंक रहल बा, जात-धरम के रिश्ता बा

तंग इनायतपूरी जी संसार में अदमी-अदमी के
अनचिन्हार भइला के बादो, कदम-कदम के रिश्ता बा

(दू)

छाप के बेचतीं हम कहिया ले इ अखबार चचा
बेंच के छापे के कइनी हँऽ कारोबार चचा

छोड़ के जाईं कहाँ ? रोजी रोजगार चचा
गल गइल एही सियासत में इ परिवार चचा

एके हाली में होला साँच के इजहार चचा
झूठ बोले के बा तऽ बोलीं ना सौ बार चचा

धरम में बँटनीं सभे, जात-पात में बँटनीं
अउर केतना करेब हमनीं प ई उपकार चचा

रउरा विपक्ष में बानीं, त बस विरोध करीं
भाड़ में जावऽ भले देश आ सरकार चचा

कोल्ड-स्टोर में ईमान बचा के राखीं
आई सीजन तऽ करेब भाव से व्यापार चचा

एक तरफ हमनी के आ एक तरफ रउरा सभे
धरम आ जात के बा बीच में बाजार चचा

अपना चैनल से तऽ कविता के युद्ध होते बा
का होई कीन के इजराइली हथियार चचा

एक दुसरा के कहे चोर, सियासत हऽ इहे
एक ही गोल के सब लोग हऽ बटमार चचा

तंग साहब सभे छितरा गइल हेने-होने
अब त बस रउरा आ हम, अउर ई दरबार चचा

(तीन)

मोहब्बत के आ नफरत के, हवा दूनू चली बाबा
तबे नूऽ ओह गली में दाल हमनी के गली बाबा

उ तोहरा के मुआई, फेर हमरो जान ली बाबा
लपक के फूल से कहलस इहे नाजुक कली बाबा

गजब उल्टा भइल बा ई सियासत के गली बाबा
जहाँ बस चोर एकेगो, आ चालिस गो अली बाबा

चढ़ावे के बली मन्दिर में जे भखले रहे बकरा
पता कहवाँ रहे ओकरा, चढ़ी ओकरे बली बाबा

धरम के जात के सउदा, सियासत के दोकानी पर
इ दिल्ली में आ पटना में, कहीं कबले चली बाबा

इ दुनिया हऽ इहाँ कुछुओ अचम्भा लागते नइखे
कि के केकरा के, कब कइसे, कहाँ, केतना छली बाबा

समुन्दर पार के छोड़ीं, पड़ोसी हो गइल विषधर
पता केकरा रहे जे, आस्तीने में पली बाबा

पियासल बा सभे, कुइयाँ के पानी बा इहाँ जमकल
खबर आइल बा दिल्ली से, कबो बोरिंग हली बाबा

तिंताई अब बुझाता, तंग साहेब चट से खा गइनी
कुनैन अन्दर से, ऊपर से इ मिसरी के डली बाबा

(चार)

बाट जोहते जोहत बहार गइल
ई अकारथ में हरसिंगार गइल

चैन गइबे कइल, करार गइल
मन मोहब्बत में दांव हार गइल

हाय ! जालिम के का निशाना बा
तीर नजरी के, दिल के पार गइल

पूर्णमासी के, बीच अंगना में
चाँदनी, चाँद के उतार गइल

हमरा तोहरा में कौन रिश्ता बा
जइसे पुछनी, उ हँसके टार गइल

दिल के धड़कन खबर पेठवलस का
जबकि चिट्ठी ना कवनो तार गइल

जब से सुनलस कि केहू आवत बा
छन में अंगना, छने दुआर गइल

एको हाली ना भर नजर तकलस
एके कनखी सजी निहार गइल

देख बादर के, सुधि गंवा बइठल
छत पे सूखत, सजी पथार गइल

एगो सुलझल गजल भइल जिनगी
कौन फनकार ई संवार गइल

प्रीत के गीत गावते गावत
तंग संउसे उमिर हमार गइल

(पाँच)

देखाई देता ओही के भीतर
जे नइखे लउकत उ के ह साहेब
कहे के मुंह से हजार कहनी
बा दिल में धड़कत उ के ह साहेब

बिछा के नफरत, उड़ा के दउलत,
करे सियासत उ के ह साहेब
बचा के ओही में चल रहल बा,
जोगा के इज्जत उ के ह साहेब

बइठ के एसी में रउरा लिख्खीं
इ देश-दुनिया के सब कहानी
मगर उ घामा में लेके ठेला
चलल बा हांफत उ के ह साहेब

कहां के दउलत, कहां के शोहरत
कहां के उल्फत, इ रउरा जानी
सड़क के कगरी जे सो रहल बा
बिछा के मेहनत उ के ह साहेब

चढ़े में मुश्किल त बा मगर,
कैलाश पर्वत के बात छोड़ीं
चलल बा सुख-दुख के अपना सर पर
उठा के पर्वत उ के ह साहेब

नहा रहल बा उदास बिल्डिंग,
इ बिजली बत्ती के रोशनी में,
मगर अन्हरियो में झोपड़ी में
जे बाटे चहकत उ के ह साहेब

हराम के बा कमाई इहंवा,
अमीर बस्ती में रोज बाकिर,
बहा के दिन भर पसेना आपन
जे मांगे उजरत उ के ह साहेब

मरे के एक दिन जरूर बाटे,
तमाम दुनिया में मान लेहनी,
ठिठुर के जाड़ा में रोड पर जे
भइल बा मउअत उ के ह साहेब

गजब के सरधा, गजब के आशा
कबो त अइहें विकास-गंगा
उमिर सिराइल तमाम जेकर,
इ बाट जोहत उ के ह साहेब

इ हमरा गांवे से शहर तकले,
गजब के पक्की सड़क बनल बा
सभे त जाये के जाता बाकिर,
जे नइखे लौटत उ के ह साहेब

गरीब लोगन के आन राखल,
ए तंग साहेब बड़ा कठिन बा,
अदाय करजा करे में मांगे
जे रोज मोहलत उ के ह साहेब

***

डॉ.कमलेश राय के पाँच गो गजल

नामः डॉ. कमलेश राय

जन्म तिथिः 31 अक्टूबर, 1960, ग्राम-पोस्ट- मुर्तजीपुर, जनपद- गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशनः तोहरो बिहान दांव पर (भोजपुरी गीत-संग्रह), अइसन आज कबीर कहां (भोजपुरी गीत-संग्रह), सन्नाटा बोलता है (काव्य-संग्रह), रखिए शब्द सहेज कर (दोहा पंचशती), संपादन- साहित्यिक पत्रिका 'शब्दिता'

संपर्कः 258 ई-1 सहादतपुरा, मऊनाथ भंजन, मऊ, उत्तर प्रदेश

(एक)

एगो साँच छुपावे खातिर सौ सौ करे बहाना लोग
जाने कइसन गढ़े लगल बा अबके नया जमाना लोग

रोटी के बदले थरिया में अउरी का चाहीं उनके
घर क चौखट छोड़ के जाता ढूंढ़े कहीं खजाना लोग

ना कवनो असरा बाँचल बा तरजूई के पलरा से
कइसन कइसन नाप जोख क बना रहल पैमाना लोग

छाँटल अउर पछोरल चाउर के छींटे अब अँगना में
पिंजरे पोसल गौरइया के डाल रहल बा दाना लोग

हर रिश्ता के देख रहल बा खुदगर्जी के चस्मा से
जाने केतना होत जात बा अपना से बेगाना लोग

(दू)

रहीलां हम कहीं दुख में त माई के बुझा जाला
लगावेली कवन चस्मा जे एतना ले देखा जाला

उठाके माथ ऊपर जब कबों अँचरा पसारेली
त माई के ओ अंचरा में समुंदर ले समा जाला

मेटावे भूख क पीरा त कवनो हाथ क रोटी
खिया देली जे माई त सही में मन अघा जाला

हंसी माई क सब देखे रोवाई ना सुने केहू
कबों मुंह ढांपि के रोवेली त पथरो लोरा जाला

न जाने हाथ में माई के बाटे कवन ऊ जादू
फिरा देली जे माथे पर त सगरी दुख भुला जाला

(तीन)

ढरे जो लोर त जिनगी क कहानी बनके
कबों ढरे न महज आंखि से पानी बनके

अनकहल पीर पहारन के आंखि से टपके
नदी के बीच बहे धार रवानी बनके

धूप में तप के उठे जब कबों समुन्दर से
बरसे धरती पर चुनर नेह क धानी बनके

बीच पलकन के थमल लोर मौन भाषा ह
कहीं अचके न ढरकि जाय बेपानी बनके

कबों बेदर्द समय क ई गवाही देई
रहे द आंख में ऐना क निशानी बनके

(चार)

दिया में बचल जिन्दगी कुछ त होई
अन्हारे घरे रोशनी कुछ त होई

चलऽ छोड़ के देखीं उज्जर कबूतर
गगन के तपन में कमी कुछ त होई

भले दाह से तन जरी दुपहरी में
सुबह क हवा मरहमी कुछ त होई

उठी रागिनी पीर के बांसुरी से
नयन पांखुरी में नमी कुछ त होई

पढ़ावत रहऽ पाठ में ढाई आखर
ऊ पाथर बसर ,आदमी कुछ त होई

(पाँच)

कहीं धरती कहीं बा आसमान चर्चा में
चान सूरुज कहीं बाटे बिहान चर्चा में

बिक गइल सेंत में पुरखन के माथ क माटी
शहर में गांव कऽ बाटे मकान चर्चा में

लगत बा आ गइल फिर से चुनाव क मौसम
आज त हर कहीं बाड़न किसान चर्चा में

बढ़ल बा मीडिया अखबार क असर जबसे
भइल बा कुछ न कुछ हमरो गियान चर्चा में

जाल के साथ में डारल गइल दाना लेके
ओ कबूतर के बा अजगुत उड़ान चर्चा में

***

संगीत सुभाष के पाँच गो गजल

नामः संगीत सुभाष

जन्म तिथिः 01 मई, 1960

प्रकाशनः कलरव में राग अमंद (भोजपुरी गीत संग्रह), दर्द आँसू टीस तड़पन (गजल संग्रह, प्रेस में)

संपर्कः गोपालगंज, बिहार

(एक)

हिय में हिलोर कतना? एकदिन समय बताई
गम के बिटोर कतना? एकदिन समय बताई

चुपके नयन के पोंछत, बुढ़ऊ के के न देखल?
घर तोर- मोर कतना? एकदिन समय बताई

भींजल धरा के आँचर, सगरो दिखत ह पानी
आँखिन में लोर कतना? एकदिन समय बताई

हाथे प जान ले के सरहद प ठाढ़ होखल
तप बा कठोर कतना? एकदिन समय बताई

जिनिगी छलेलू, छलि ल, लेकिन सवाल बाटे
बाड़ू कठोर कतना? एकदिन समय बताई

औकात भरि लड़ल बा दियना अन्हार से ई
कइलसि अँजोर कतना? एकदिन समय बताई

कुछ बाति बा अनोखा 'संगीत' का सुरन में
जग तोर शोर कतना? एकदिन समय बताई

(दू)

देश, धरती, गगन, रोशनी बेंचि के
आदमी बा खड़ा आदमी बेंचि के

फूल तऽ फूल हऽ बेंचि दिहनीं, कहीं,
का मिलल पात नन्हकी कली बेंचि के

जे सहल ऊ रहल, जे रहल ऊ कहल,
जिन्दगी का बचलि, जिन्दगी बेंचि के?

भांग घोरल कुँआ, पी के मातल सभे
ना पता कब बिकल सरजमीं बेंचि के?

के जगावल बहुत दिन प सूतलि रहे
आँखि टघरत पलक से नमी बेंचि के

सूर, मीरा, कबीरा के संतति बहुत
दियसलाई किने लेखनी बेंचि के

रात गरजे बहुत ओढ़ि करिया चदर
चाँन सूतल रहे, चाननी बेंचि के

लोभ, इरिखा, कपट, डाह, डर, चुगलई
हम निठाहे सुतीं अब सजी बेंचि के

झूठ के पाँव अचके अकासे चढ़ल
आजु 'संगीत' के बंदगी बेंचि के

(तीन)

सूरत उहे, दरपन उहे, किरदार बदलल बा मिता
कातिल उहे, गर्दन उहे, तलवार बदलल बा मिता

नदिया चले सागर घरे, खुद के उहाँ पूरन करे
पानी उहे, पनघट उहे, रसधार बदलल बा मिता

पूछत रहे जे हाल तब, पीछे परल बनि काल अब
दुनियाँ उहे, अदिमी उहे, ब्यवहार बदलल बा मिता

सब ब्यस्त जय जयकार में, बुधि- ज्ञान फेंकि इनार में
नेता उहे, जनता उहे, सरकार बदलल बा मिता

असवों दियारी ना मनल, निज बाप से बिटवा तनल,
घरवा उहे, दुअरा उहे, परिवार बदलल बा मिता

उनुका घरे पसरल हँसी, इनका घरे बस बेबसी,
अँखियाँ उहे, अँसुवा उहे, बस धार बदलल बा मिता

रङ में बटाइल लोग बा, कइसन समाइल रोग बा,
काँटा बुवल उद्योग बा, आचार बदलल बा मिता

अजुवे चललि साजन घरे, अनचीन्ह घर फजिरे खने
दुलहिन उहे, डोली उहे, ओहार बदलल बा मिता

(चार)

लोर पपनी पर टंगाइल रहि गइल
पीर हिय के बिन कहे सब कहि गइल

याद के भुइकम्प के झटका लगल
आस के छावल पलानी ढहि गइल

एक पल सुख से गुजर की चाह में
जिंदगी लमहर जुदाई सहि गइल

मुँहजबानी याद बाटे नाम सब
के झटकि भागल के' बँहियाँ गहि गइल

अब कहाँ 'संगीत' रसगंगा बहे
सोर के नाला में सरगम दहि गइल

(पाँच)

दर्द, आँसू, टीस, तड़पन
बा जवन संसार में
मुफ्त में हमरा मिलल बा
यार तहरा प्यार में

जब कहीं चर्चा चलेला
प्रीत में बदनाम के,
लोग हमरे नाम लेला
गाँव में बाजार में

अनमना, रतजगा, करवट
रात भर जोन्ही गिनल,
एकटक रहिया निहारल
जोति में, अन्हियार में

औंतिआइल, तौंतिआइल,
छटपटाइल, बेवजह
बा सजी डेरा जमवले
आइ के चउपार में

घूमि थाकल पाँव हमरे
कल्पना का बाग में,
फूल ना लउकल फुलाइल
चैन पवनीं खार में

हो गइल पत्थल करेजा
चोट छाती पर सहत,
राखि दऽ ले जा कहीं अब
धूप में भा जाड़ में

बन्द बा 'संगीत' सुधि के
तान सगरे बनि विरह,
बा समाइल रोम- नस में
अउर सब किरदार में

***

शिव कुमार पराग के पाँच गो गजल

नामः शिव कुमार पराग

जन्म तिथिः 19 सितंबर 1958, उ०प्र० के एक गाँव दिघार में

प्रकाशनः अब तक 5 कविता संग्रह 'देख सको तो देखो', 'रोशनी के शब्द', 'देश बड़ा बेहाल', 'बर्फ.की तहें टूट रही हैं', 'काहें रउवाँ बानीं मनबेधिल' प्रकाशित

संपर्कः SA 5/140, S-10, संजय नगर, अकथा, पहड़िया, वाराणसी

(एक)

आह-वाह जिनिगी में बा
धूप-छाँह जिनिगी में बा

सुनत करेजा फाटेला
ऊ कराह जिनिगी में बा

जुगत नेह के खोजीं जी
बड़ी डाह जिनिगी में बा

झूठ-साँच सब देखेले
ऊ निगाह जिनिगी में बा

ठानी तऽ पहाड़ चढ़ि जाई
ऊ उछाह जिनिगी में बा

मंजिल मिली, मिली तय हौ
अगर चाह जिनिगी में बा

हार न मानऽ, बइठऽ मति
बहुत राह जिनिगी में बा

(दू)

मनगर मौसम आवत नइखे
कजरी-चइता गावत नइखे

मँहगाई के मार परल बा
तीज-परब हुलसावत नइखे

केहू छप्पन भोग करत बा
केहू रोटी पावत नइखे

जेकर लाठी भँइस ओही के
अजुओ झूठ कहावत नइखे

एतना अतियाचार के बादो
काहें होत बगावत नइखे

(तीन)

लउकत नइखे साफ, बड़ा धुँधुँआइल बा
बाँचल बा सपना, भलहीं अझुराइल बा

जोड़ि-जाड़िके एक-एक दिन सरकत बाटे
बहुत सहेजलीं, गिरहस्ती छितराइल बा

एगो बाधा जाय तो सइ बाधा आवे
जंजालन के कारन जिउ अउँजाइल बा

जाति-भेद के दरद त, ऊ जानी जेकरा
नीच जाति के तखती गले मँढ़ाइल बा

सवकेरहीं निकलल, लवटे में राति भइल
बोलत-चालत नइखे, मन मधुआइल बा

कब बिहान होखी, कहिया सूरुज उगिहें
पूछत बा अब लोग, बड़ा अकुताइल बा

सुनुगी-सुनुगी, ई मति सोचीं ना सुनुगी
सिमसिमाह बा दिन, मौसम मेहराइल बा

(चार)

नून-तेल-लकड़ी में अस जिनिगी अझुराइल बा
हमके कुछुओ नीक ना लागे, मन अउँजाइल बा

नाक बेचिके नथुनी कीनल जात बा खुसी-खुसी
ईहे अब बिकास कहलाता, मती मराइल बा

भूमंडलीकरन के आन्ही बहा ले गइल सब
चकाचौंध में खिंचल जाय, दुनिया बउराइल बा

आन्हर नगरी, चउपट राजा, कइसे काम चली
हमके लागत हौ, कुँअवे में भाँग घोराइल बा

कइसन बा ई नई नीति, ई केकर भला करी
उटकेरऽ तऽ लउकी तोहके साँच तोपाइल बा

(पाँच)

साँझि भइल तऽ सब बइठल बा कउड़ा पऽ
थाकल-हारल गाँव जुटल बा कउड़ा पऽ

सुख-दुख, हँसी-ठिठोली का नइखे एइजा
छिड़ल बतकही, लोग जमल बा कउड़ा पऽ

दिन भर में का भइल, आ का होखी आगे
खबरन के टकसाल खुलल बा कउड़ा पऽ

के-केसे सटिके बइठल, के फरका बा
सबकर किछु माने निकलल बा कउड़ा पऽ

दूर के कउड़ी मिलल, साँय-फूस होता
बिना आगि के धुँआ उठल बा कउड़ा पऽ

बाँहि चढ़उल भी हो जाला बेर-बागर
के कम, सब आल्हा-उदल बा कउड़ा पऽ

सात समुंदर पार के चर्चा चलत हवे
सब जागत बा, सब सोचत बा कउड़ा पऽ

***

सुभाष चंद्र यादव के तीन गो गजल

नामः सुभाष चंद्र यादव

जन्म तिथिः 01 जुलाई 1955

प्रकाशनः केहू केतनो दुलारी बाकिर माई ना होई

संप्रतिः पूर्व प्राचार्य, दारोगा प्रसाद राय महाविद्यालय, सीवान

संपर्कः गोरखपुर

(एक)

प्यार में बिरह से रिश्ता जे निभवले होई
शख्स उहे न मजा प्यार के पवले होई

लाख चहलो पर कबो रंग ना छूटी ओकर
प्रेम का रंग में चुनरी जे रंगवले होई

क दिहल जिन्दगी कुरबान देस का खातिर
धूर चन्दन का तरे माथे लगवले होई

ओकरा खातिर उहें काशी उहें काबा होला
यार अँखियन से जहाँ लोर गिरवले होई

ऊँख का रस में मिठाई बा ओकरा मेहनत के
जेठ का घाम में तन के जे जरवले होई

काम मिलल ना दाम चाम सगरो झूल गइल
सगरो जिनिगी भला ऊ कइसे बितवले होई

(दू)

हमरा कहला के अइसन असर हो गइल
जाने कइसे दो उनका खबर हो गइल

सबही गुमसुम रहल के कहल के सुनल
बाति फइलल त सउँसे शहर हो गइल

दोष आपन कहीं की जमाना के बा
सबका मनवाँ में माहुर जहर हो गइल

दिल रहे कबहीं आपन समुन्दर नियर
सूखि के अब त पातर नहर हो गइल

करिके वादा ना अइलें भुला गइलें का
भोर से अब त दिन दूपहर हो गइल

जबसे हमरा पर उनकर नजर हो गइल
तबसे भुतहा बुझाता कि घर हो गइल

जवन चहलीं ना पूरा भइल आजु ले
जवन चहलीं ना उहे मगर हो गइल

चाह में राह पहिले रहे जे सुभाष
अब त बहुते कठिन ऊ डगर हो गइल

(तीन)

जवन चहनी ऊ हमसे लिखाइल कहाँ
जेतना मन में बा कागज पर आइल कहाँ

छन में आइल गइल का से का हो गइल
रुप आँखिन में कबहीं समाइल कहाँ

जे गगन में गइल उ गगन के भइल
फेर धरती पर कबो उ आइल कहाँ

सबके झँउसत रही सबके झोंकरत रही
आगि धधकत बा कबहीं बुताइल कहाँ

बात केतना कहाइल सुनाइल मगर
बात असली जे बा ऊ बुझाइल कहाँ

बात कहते सुनत में कटल जिंदगी
कबही हमरा आ रउवा बुझाइल कहां

घाव टीसता अबले भरल ना सुभाष
के दिहल कब दिहल उ भुलाइल कहाँ

***

भालचन्द त्रिपाठी के पाँच गो गजल

नामः भालचन्द त्रिपाठी

जन्म तिथिः 01 जून 1966

प्रकाशनः 1-महकती मंजरी, 2- पात-पात मन (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत),...दूनो गीत संग्रह

संपर्क : ग्राम पोस्ट- गौरी, ज़िला आजमगढ़

(एक)

जब उनका से यारी बा
तब कइसन दुश्वारी बा

खोज खबर ऊ लेबै करिहैं
बढ़िया नू बीमारी बा

कइसन प्यार, समरपन कइसन
जब अइसन हुशियारी बा

देखला में कुछ लगते नइखे
भीतर से तइयारी बा

चिन्ता फिकिर ओरा गइलिन जब
छूटल दुनियादारी बा

(दू)

ठीक ठाक त लउकत बाड़ऽ
एतना काहे सउखत बाड़ऽ

दुसरा खातिर ठीक रहल ह
अपना बेरी छउकत बाड़ऽ

जा जाके उनहीं से पूछा
हमरा के का घउकत बाड़ऽ

जवन करे के होखी करिहा
अबहीं से का फउकत बाड़ऽ

आगि लगल बा पानी फेंका
बेना ले के हंउकत बाड़ऽ

नहिऐं मनला प्यार करे से
पागल लेखा डंउकत बाड़ऽ

(तीन)

मन पियासी त धाई जरूर
नेह बा त बुझाई जरूर

चाहे केतनों छिपावे केहू
घाव लागी पिराई जरूर

खाय ठोकर ज गिरबा कबों
केहु न केहु त उठाई जरूर

जब न कउनों सहारा रही
प्रान उनका बोलाई जरूर

अइसै सरधा रखी ना केहू
पहिले त ऊ थहाई जरूर

(चार)

आंखि फरके त धक दे करेलऽ जिया
लोर ढुरके त धक दे करेलऽ जिया

उनका आवे क वादा रहे आजु के
पात खुरके त धक दे करेलऽ जिया

घर से बिजुरी चलेले केहू से मिले
मेघ घुरके त धक दे करेलऽ जिया

जे के आपन समझलीं दगा दे गइल
घाव करके त धक दे करेलऽ जिया

पीर केतना सहेजले बा पपिहा के मन
जब ई रिरके त धक दे करेलऽ जिया

केहु के देहियां के जइसन लसल फूल से
डारि लरके त धक दे करेलऽ जिया

उनका अंचरा से कइसन ई नाता जुरल
तनिको सरके त धक दे करेलऽ जिया

(पाँच)

रूप रचि रचि संवारल गइल
एक छन में बिगारल गइल

आज तनिको न देखत बनै
काल्हि केतना निहारल गइल

झूठ एगो छिपावे बदे
बाति केतना मठारल गइल

जवना तोपल रहे के चही
बाति ऊ हो उघारल गइल

केहु के पीछे परल बा सभे
केहु के केतना सम्हारल गइल

जब न कउनों सहारा बचल
नाम उनकर पुकारल गइल

***

सौरभ पाण्डेय के पाँच गो गजल

नाम: सौरभ पाण्डेय

जन्म तिथि: 03 दिसंबर 1963

प्रकाशन: बतकूचन (भोजपुरी आलेख-संग्रह), इकड़याँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान), गीत-प्रसंग (सम्पादन), परों को खोलते हुए (सम्पादन)

संप्रति: केन्द्र आ राज्य सरकार के कौशल-विकास प्रशिक्षण आ सम्बद्ध परियोजना के क्रियान्वयन, राष्ट्रीय अस्तर के व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड (प्रशिक्षण)

संपर्क: एम-2/ ए-17, पी०डी०ए० कालोनी, नैनी, प्रयागराज - 211008

(एक)

ओकरा बस इहे बुझाइल बा
मार लंघी बड़ा ठठाइल बा

राह छोड़ीं कि साँझ गहिरल अब
जोहि दीं कान के भुलाइल बा

फाग-फागुन-फुहार फहिरल कब
देहि से देहि जब रङाइल बा

बात बहिराउ तऽ खुलासे से
ना त नीमन लकम चुपाइल बा

बस सियासत फिलिम फुटानी में
भोजपुरिया बुला मताइल बा

फेरु गंगा उठान में बाड़ी
बान्ह पर गाँव फेरु आइल बा

साँच बाड़ऽ, प्रमान दऽ सौरभ
देखि लऽ, टोल भर नधाइल बा !

(दू)

सोचसु आपन, नाता पाछा
गइनीं नाहक उनका पाछा

का दइबा ई कइसन आङन
राहू-केतू आगा-पाछा

कवना बाग-बगइचा जाई
पतझड़ लागल जेकरा पाछा

सावन-भादों पानी-पानी
अँखिया कइलस, बदरा पाछा

रूप-सिङार करीं का कइसे
सीसा टूटल रउआ पाछा

पहिले परदा में हलचल के
दुनिया जानल, पल्ला पाछा

मंच सजल बा गजब भाव से
पढ़ीं लतीफा कविता पाछा

(तीन)

जवन घाव पाकी उहे दी दवाई
निभत बा दरद से निभे दीं मिताई

भले खून माथे चढ़ावत बजर लीं
कइलका भइल सब अलाई-बलाई

बहाना बनावत कटावत बा कन्नी
गुनीं अब मने मन का कइनीं भलाई

ई कवना घड़ी में कवन जोग जागल
जमुन-गंग के बीच लउकत बा खाई

धरा बन गगन जन-बसाहट में बा ऊ
जे बाटे गते गत त के अब लुकाई?

भले हम ना बोलीं मगर सभ बुझाला
कहाँ से बा राउर ई पदवी-कमाई

दलानी के पल्ला का खड़कल तनिक में
उठल डेग दुअरा से दियरी मिझाई

इसऽरे इसऽरे में बरिसल ऊ बादर
चढ़ल बाढ़ि देही में चटकल कलाई

(चार)

फलनवा बन गइल मुखिया रङाइल गोड़ माथा ले
बनल खेला बिगाड़े के चिलनवा ठाढ़ लाठा ले

बड़ा अउलाह झामा-झम भइल बरखा सनूखी में
दलानी से चुल्हानी ले अशरफी लूटु छाता ले!

सियासत के बगइचा में तनी मवका भेंटाए तऽ
जे बकरी पात पऽ निखुराह ऊहे गाँछ ले खाले

भले कतनो पड़ऽ गोड़े निहुरि करि दऽ कमानी देह
नजर में तूँ अगर नइखऽ गुनाहे बा रहल पाले

फजीरे रोज ऊ आसा-भरोसा में निकल जाला
किरिन डूबत लवट जाला पिराइल देहि-माथा ले

चलन आखिर भला काहें रहल संसार के, कहियो -
बथाने नेह पोसल गाइ पगहा तूरि चल जाले

बुझा जाला तुरंते भाव 'सौरभ' बाप के का हऽ
फुदुकते आ जबे बेटी सटावे गाल से गाले

(पाँच)

नइखे बुझात, आज करीं हम कि ना करीं
रउआ से अपना हाल के कतना गिला करीं

महिनन से जवने नाँव प अँटकल रहल ई मन
सोझा ऊ आ गइल त बुझाइल ना का करीं

हे निर्दयी के बात प कइसन भरोस अब..
सोझा भइल ना ठाढ़ ऊ, कहबो ई ना करीं?

चर्चा के कौन काम, भा भौकाल काँहें के..
नेकी करीं समाज में.. कहला बिना करीं !

अइसे बलुक बुझाई ना मन के हमार बात
जानब त ना रहाई जे छोड़ीं ऊ, भा करीं

लिहनीं ना नाँव खोल के भलहीं जुबान से
तबहूँ मचल बवाल बा फजिरे से का करीं ?

***

शशि कुमार सिंह 'प्रेमदेव' के पाँच गो गजल

नामः शशि कुमार सिंह 'प्रेमदेव'

जन्म तिथिः 1 जून, 1965

प्रकाशनः भोजपुरी गजल / गीत संग्रह – हुले ले ले करत रहS
हिन्दी काव्य-संग्रह आंखों से चिल्लाई थी वो... कितना कुछ करना था मुझको..

संप्रतिः प्रिंसिपल, कुँवर सिंह इण्टरमीडिएट कालेज, बलिया (उ प्र)

(एक)

उनुका हिस्सा में हरियाली, हमरा के पतझार मिलल
कइसे हम मानीं मजदूरी मेहनत का अनुसार मिलल

एक्को साँस निफिक्किर जिनगी हाथ लगल ना हमहन के
रेती पर बाघिन पिठिअवलसि, पानी में घरियार मिलल

का विद्यालय, का न्यायालय, का हाकिम, का चपरासी
जवने चउकठ गइलन घुरहू, बिहँसत भ्रष्टाचार मिलल

सुख तS एह आँचर के अनघा सबहीं के लउकल बाकिर
ई ना लउकल सुख का साथे दुख केतना बरियार मिलल

दुश्मन पर हावी रहलीं जा अन्तिम छन ले हमने कS
तब्बो जंग गँवा दिहलीं जा, अस मउगा सरदार मिलल

(दू)

बैदा ऊपर बइठल बा, कस्सइया ऊपर बइठल बा
सज्जी नीमन-बाउर कS करवइया ऊपर बइठल बा

डोले जेकरा मरजी से पतइय्या, ऊपर बइठल बा
अँगुरी पर सबके अपना नचवइया ऊपर बइठल बा

लेके मुट्ठी में सज्जी मलिकइया ऊपर बइठल बा
हमरा-तहरा किसमत के लिखवइया ऊपर बइठल बा

सबकर दादा, काका, बड़का भइया ऊपर बइठल बा
सबका ओरहन के एगो सुनवइया ऊपर बइठल बा

दंभ, भरम हर रावन के तुरवइया ऊपर बइठल बा
हर सोना के लंका कS जरवइया ऊपर बइठल बा

(तीन)

भिखारी सरापत दुआरी से जाता
कहे खाति दूनो परानी कमाता

अरारे से नद्दी क' पानी बसाता
तबो लोग गंगा समुझि के नहाता

रहल होइ चूरन कबो देश राउर
मगर अब त' बालू मतिन किर्किराता

केहू खूस नइखे बेवस्था से बाकिर
उलाटे में एके सभै हिचकिचाता

'शशी', एह तरे जी रहल बा जमाना
ढहल फेंड़ पानी में जइसे दहाता

(चार)

अब कबो अइसन ढिंठाई ना करब
जाहिलन कऽ रहनुमाई ना करब

गाँव में अब गाँव बाँचल बा कहाँ
गाँव कऽ झुठहूँ बड़ाई ना करब

मन्थरा ! हम सल्तनत खातिर कबो
छोट भाइन से लड़ाई ना करब

देखि लीहऽ चापलूसन पऽ खरच
हम कबो आपन कमाई ना करब

झूठ केतनो कान में माहुर भरो
साँच कऽ हम तऽ बुराई ना करब

(पाँच)

शिवाला क' ईसर उपासे झुरइहें
चढ़ावा से पण्डा-पुजारी मोटइहें

लिखल बाटे उनुका मुकद्दर में ईहे
सउदियो में जाके बकरिये चरइहें

सुदामा का मड़ई में जूठन गिरावे
इलेक्शन में दउरल किशन फेरु अइहें

मियाँ ! कवनो दोसर जुगत आजमावऽ
बिजूकन से अब ना जनावर डेरइहें

देखइबऽ जदी रोज एकही तमाशा
त' कइसे 'शशी' रोज ताली बजइहें

***

शैलेन्द्र पान्डेय 'शैल' के चार गो गजल

नाम: शैलेन्द्र पान्डेय 'शैल'

जन्म तिथि: 24 मार्च 1963

प्रकाशन: परछाइयों के पांव (गजल संग्रह), लफ़्ज लफ़्ज पैरहन (गजल संग्रह), चिरागों में चुपचाप जलते हुए (गजल संग्रह), आईने के जाविये (गजल संग्रह)

संप्रति: अवकाश प्राप्त सैनिक, स्वतंत्र लेखन

संपर्क: रेशमा सदन, चित्रगुप्त नगर, गमहरिया, जमशेदपुर

(एक)

केतना दिन ले आखिर, केहू डेरवाई
ढेर सुनाईल, भागऽ बघवा खा जाई

कहि दऽ सिधरी पोठिया धरसु किनारे से
बकुला का नपिहें, नद्दी के गहिराई

दूध क जऽरल मठवो फूंकि के पीएला
फेरु सियार तरकुल का पंजरा ना जाई

मौसम बहुते आइल गइल, गइल आइल
लागत बा आवे वाला अब ना आई

हाल पता बा, सर्कस में का बाघन के
पोंछि डोलाई, दांत निकारी, गुरनाई

ढेरे दिन सीसा में सुरुज चमकवलऽ
आखिर केहू केतना दिन धोखा खाई

सपना ऊ होला, जे नींद उड़ा देला
जागल रहिहऽ नींद नयन के भरमाई

कबले राधा कृष्ना कृष्ना रटिहें शैल
कान्हा कहिया राधा राधा गोहराई

(दू)

करेज में के समाइल बा का बताई हम
इ आँखि काहें लोराइल बा का बताई हम

दुसर समान जे जाइत त हमहूँ चुप रहिती
हमार चैन बेरहाइल बा का बताई हम

रहित जे घाव कहीं एक जगह त सहि जइती
कहाँ कहाँ से बेधाइल बा का बताई हम

खोजल त खूब गइल ह मगर कहाँ मिलल
कहाँ परान हेराइल बा का बताई हम

रहे दऽ अब न रोवावऽ कि बड़ा मुश्किल से
दिले नादान चुपाइल बा का बताई हम

पता चलल ह जे आई न पीयरवा अजुवो
चुल्हे प भात तंवाइल बा का बताई हम

हवा के नांव बतावे में डरत बा सभई
दीया इ कइसे बुताइल बा का बताई हम

(तीन)

सांस जवने घरी ठहरि जाई
बोझ सब माथ से उतरि जाई

चारि दिन तक ले रोई गाई लोग
का करी, फेरु सब बिसरि जाई

वक्त हर दर्द के दवाई हऽ
घाव कुछ दिन का बाद भरि जाई

जिन्दगी कुछ घरी के मेला बा
सांझि होई त सब छितरि जाई

सब संगेरले बा गांठि रूई के
एगो लुतुकी में सारा जरि जाई

रंग, खुश्बू, केहू भी ना पूछी
फूल टहनी से जहिया झरि जाई

फेरु त चर्चा ओही के रहि जाला
काम जइसन जे शैल करि जाई।

(चार)

रखऽ ध्यान कुछ तऽ तुहूं, का बताई
बनत बा किनरहीं भंवर, का बताई

पता ना चलल हो गइल मेंड़ कइसे
रहे ऊ जे गाँवे छवर, का बताई

कहां बा नदी ताल पोखर भा कुईयां
कहां बा उ अब गांव घर का बताई

कहां केहू बूझेला अब दोल्हा पाती
बगइचा के ऊ दूपहर का बताई

भुलइले स लइका खेलल गुली डंटा
कहां जा गुली चांप पर का बताई

सुनाता कहां अब उ हो हो रे होलरी
बसावन बो गइली केहर का बताई

बचल ना उ गंवईपना गांव के अब
घुसल बा घरे-घर शहर का बताई

***

डॉ. उदय प्रताप हयात के चार गो गजल

नामः डॉ. उदय प्रताप हयात

जन्म तिथिः 1 जनवरी 1965, जलालपुर ,छपरा (सारण)

प्रकाशनः तेरे कूचे में हुआ कत्ल (हिन्दी गजल संग्रह), बार के दीअरी दहा दिहिला (भोजपुरी गजल-गीत संग्रह)

संपर्कः सफीगँज मुहल्ला, जुगसलाई, जमशेदपुर

(एक)

जिन्दगानी भई पानी पानी भइल
देह टाटी निअन आंख छानी भइल

साठ सालो पऽ बानी स कांसा-पितर
केहु सोना बनल केहु चानी भइल

गँगा जमुना जी लाले रँगाइल हई
चून धानी तऽ खीसा कहानी भइल

झूठ सोहरत पऽ दुनिया नपा गइले राम
एगो बामन रहस ए गो दानी भइल

हइ अमावस त बखरा मिलल बा हयात
चाननी, घामि पर तानातानी भइल

(दू)

डूब जाले सुरुज देव दरिया में हो
आग लागेला रोजो नगरिया में हो

चिचिआइले हम्हू दुपहरिया में हो
करिअ सोना खखोरीले झरिया में हो

हइ पसीना के बाबूजी महिमा अपार
हइ जुटाएला खाये के थरिया में हो

इक अगौछी के भूजा प' टूटल सभे,
नीक बा साथे बइठल सहरिया में हो

हाय फागुन आ सावन त हो गइले जेठ,
फूफकारे नगिनिया अटरिया में हो

ओकरो के हिया में बिठाई हयात,
जे रहेला नगरिया के अरिया में हो

(तीन)

हरीअर, लुभावन झरोखा बिकाता
बिका तारी माटी आ लोटा बिकाता

फलैटन में लागी बगइचा के झांकी
उडा के चिरइअन के खोंता बिकाता

खपा गइल खरबो समुन्दर के पुल पर
कि मेहर के लहठी अलोता बिकाता

इ दाढी, इ जामा, इ चोली, इ लँहगा
जवानी के मद में लगोंटा बिकाता

खिलौना ह चाभी पऽ नांची, धधाई,
रँगावल हयात अब इ तोता बिकाता

(चार)

सतना में बानी ना गोवा में बानी
अतना में रहनी हइ अतना में बानी

लागे हरमेसा हेराइल बा कुछुओ
दिन रात कवन हाय रकटना में बानी

झूर-डरेर, मुकदमा, ओझाई, बझाई
बीसो गरहन के अबे सतइसा में बानी

मझिला बहरी बाटे बडका ना बोले
नन्हका में रहनी हइ, नन्हका में बानी

एक दिन केहु अचके टमटम ले चँहुपे
कि हयातजी रोजो का खटका में बानी?

***

देवेन्द्र आर्य के पाँच गो गजल

नामः देवेन्द्र आर्य

जन्म तिथिः जून 1957 के पैदाइश

प्रकाशनः गीत, गजल और नयी कविता के 18 संग्रह प्रकाशित, आलोचना के एक पुस्तकः 'शब्द असीमित', आलोचक परमानन्द श्रीवास्तव और कवि देवेन्द्र कुमार बंगाली पर तीन पुस्तक के सम्पादन, कविता अंग्रेजी, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, उड़िया,कन्नड आदि भाषा में अनुदित

संप्रतिः 2017 में रेल सेवा से अवकाश

संपर्कः ए-127, आवास विकास कालोनी, शाहपुर, गोरखपुर

(एक)

अउर कहा का हाल ह बाबू
चइत में पड़ल अकाल ह बाबू

सब लाइन में, सरवर डाउन
गजब कऽ ई हड़ताल ह बाबू

रुपइया पइसा उफ्फर पड़ि गए
खुदे बैंक कंगाल ह बाबू

केकरे चक्कर में पड़ि गइला
ऊ त ससुर दलाल ह बाबू

झेल जाई सब आन्ही-पानी
मजहब कऽ तिरपाल ह बाबू

(दू)

चौकीदार, कमाल हुइ गवा
थाना फिरो बहाल हुइ गवा

हम तो लाएन बाघ समझि के
इ कइसे मृग-छाल हुइ गवा

आजे पंडित साइत दीहेन
अउर आजे हड़ताल हुइ गवा!

निम्मन बाउर अबले काटेन
अब तो जियब मोहाल हुइ गवा

जेके सब पाला अस समझिस
उ अगिया बैताल हुइ गवा!

मुंह से निकरि गवा आजादी
बस एतने भर काल हुइ गवा

(तीन)

तन तुलसी अउर मन कबीर भए
तब जाके शायर फकीर भए

रूमी अस जब रूह भयी तब
सूरदास जस ई शरीर भए

छूट गयो पगहा कवित्त कै
जब कविता में कवि अधीर भए

कविता हुइ गये खुदे निराला
मुक्तिबोध सउंसे जमीर भए

तू कचरस हम चाउर कच्चा
प्यार पगे दूनों बखीर भए

काटत पीटत लांघत रेखा
छोट बड़ा हमहूं लकीर भए

आपे नहीं अकेल आर्या
एकरे पहिले एक 'नजीर' भए

(चार)

तरकूले चढ़ि पीयत हौ
का हो भइया चीन्हत हौ?

गउ रक्षक बन जइता यार
बइठ के कथरी सीयत हौ

हम नाहीं हन बेद पुरान
आपै कउन सरीयत हौ

ऊपर वाला हमका देख
रक्तन आंसू रोअत हौ

गंगा के तनि जान त लऽ
ओकर खास तबीयत हौ

ए बाबू रामचंदर हो
सरजू में का लउकत हौ?

देबा पूंजी में हिस्सा
आई, बोला नीयत हौ!

चुटकी चुटकी खरच करा
सांस नहीं ई अच्छत हौ

(पाँच)

एसे कउन फायदा दुल्हिन
छोड़ा तुहीं जाएदा दुल्हिन

रार पाल के बइठल बाटू
ई है कउन कायदा दुल्हिन

अचरा कब्बो छोट पड़ेला
मन के धोखा खाएदा दुल्हिन

जंगरे में सब कर हिस्सा बा
घर परिवार अघाए द दुल्हिन

जइसे एतना दिन निबकउलू
कुछ दिन अउर निभाए द दुल्हिन

जानें तऽ कइसन होला दुख
अंगुरी कटल पिराए द दुल्हिन

चिड़िया खाई केतना खाई
का घट जाई, खाएदा दुल्हिन

सास पतोह लड़बजा साथे
ई हमार हऽ वायदा दुल्हिन

***

संजय मिश्र 'संजय' के पाँच गो गजल

नामः संजय मिश्र 'संजय'

जन्म तिथिः 4 अगस्त 1968

प्रकाशनः विभिन्न साहित्यिक पत्र पत्रिकन मे गीत, गजल, कविता प्रकाशित। 'तुम गीतों को स्वर दे दो' हिन्दी गीत संग्रह प्रकाशनाधीन।

संपर्कः कुईसा खुर्द,पो.महुअवाँ, गोपालगंज, बिहार

(एक)

लोर बनि बनि के हम ढरत बानीं
ज़िंदगी बस गुजर करत बानीं

लोग दुनिया में एक बार मुई
हम त रोजे जरत मरत बानीं

जेके कबहूँ भुला ना पवनी हम
का कबो उनका मन परत बानीं

कर्जा बाकी बा कवनो जिनिगी के
बह उहे आज ले भरत बानीं

का धरीं नाँव, घाव के दीहल
उनका बदनामी से डरत बानीं

ई कवन आग ना लपट ना धुआँ
कवना भट्ठी में हम जरत बानीं

ई बुतवला से ना बुती 'संजय'
गीत के दीप बनि जरत बानीं

(दू)

दर्द हियरा में जेतना भरल बा
लोर बनके नयन से ढरल बा

आज मुरझाइल बा चाँद चेहरा
आज अचके केहू मन परल बा

नेह के नीड़ कइसे छवाई
आस विस्वास कबके मरल बा

तीर लिहले चलल बा शिकारी
वन में हिरना बेचारा डरल बा

मीठबोलवा से बचके तू रहिहऽ
ओकरा बोली में माहुर भरल बा

गाछ असहीं त नइखे उघारे,
पात पतझड़ में सगरे झरल बा

फूँक के पीए माठा ऊ 'संजय',
दूध से ओंठ जेकर जरल बा

(तीन)

लेके जीहीं हम हिया में पीर कहिया ले
बस रहीं ढारत नयन से नीर कहिया ले

सुख भइल सपना के सम्पत दुख भइल साथी
हमसे रूसल ई रही तकदीर कहिया ले

राँझा के पंजाब गइले हो गइल बरिसन
बाट जोहिहें अब भला ई हीर कहिया ले

झूठ के बुनियाद पर ऊ राज भोगत बा
हम रहीं साधू बनल गम्भीर कहिया ले

खेती कइलो पर दुलम सतुआ नमक बाटे,
रउरा के ई पूड़ी पूआ खीर कहिया ले

हमरो गाँवे रेल के टीशन बना देतीं,
लोग उतरी खींच के जंजीर कहिया ले

आत्मनिर्भरता के दुश्मन ह रिजर्वेशन
रउरा मूड़ी पर उठाएब भीर कहिया ले ?

हर गली में बा दुशासन हाय 'संजय' जी
अब खिंचाई द्रोपदी के चीर कहिया ले

(चार)

साँच लाते दबावल गइल बा
झूठ पुलुई चढावल गइल बा

कइसे बाँची भरम आदमी के
चोर हाकिम बनावल गइल बा

ई महल अइसहीं नइखे चमकत
केतने मड़ई हटावल गइल बा

कहँवा बदलल ऊ निठुरा बेदर्दी
बहुते ऐना देखावल गइल बा

पवते मौका पलट के ऊ काटी
दूध ओके पियावल गइल बा

बात सुभइत कहाँ से करी ऊ
जेके उल्टा पढ़ावल गइल बा

दृष्टि 'संजय' के जहँवा ले जाला
इनका कविता में गावल गइल बा

(पाँच)

सगरे गीत गजल कविताई कथा कहानी तहरे नाम
तूँ कहि दऽ त करके जाईं ई जिनगानी तहरे नाम

चंदा, जोन्हीं, बिजुरी, बादर, घाम, छाँह, बूना-बानीं
पागल पवन बहे पुरवाई रात सुहानी तहरे नाम

मन बहके,तन लहके,चहके आग मदन में हियरा के
मौसम के देखऽ अंगड़ाई चढल जवानी तहरे नाम

तितली, भँवरा, कली-फूल सब पर बा तहरे नाम लिखल
तहरे के छू के आई महकी रतरानी तहरे नाम

मन पारऽ ऊ कोहनाइल, छीना-झपटी,झगरा- झंझट
कुछ हमहूँ कइनीं लरिकाई कुछ शैतानी तहरे नाम

जिनिगी के जेतना सुख बा ऊ सब तहरे से बा 'संजय'
बाकिर आँख जबे लोराई आँख के पानी तहरे नाम

***

डॉ. हातिम जावेद के पाँच गो गजल

नामः डॉ. हातिम जावेद

जन्म तिथिः 9 जनवरी 1963

प्रकाशनः (1) वक़्त की हथेली में (गजल-संग्रह) देवनागरी (2) उंगलियाँ एहसास की (गजल संग्रह) उर्दू

संप्रतिः मेडिकल ऑफिसर, स्वास्थ्य विभाग, (बिहार सरकार)

संपर्कः ग्राम- विशम्भर पुर, पो.-मेहसी, ज़िला- पूर्वी चम्पारण, बिहार

(एक)

आग बस्ती में लगा के का मिलल
भाई बंधू के जरा के का मिलल

हो गइल छलनी करेजा देस के
देस में दंगा करा के का मिलल

तोहरो घर के लोग भी त बह गइल
खून के दरिया बहा के का मिलल

चैन से बीतल न जिनगी एक पल
ई महल कोठा बना के का मिलल

मिल गइल माटी में माटी के सरीर
पाप जिनगी भर कमा के का मिलल

(दू)

काँट के सेज अब जिन्दगी हो गइल
दूज के चांद जइसन खुशी हो गइल

आदमी पी रहल आदमी के लहू
जंगली जानवर आदमी हो गइल

जब ले लइका रहे तब ले बेटा रहे
जब सियाना भइल अजनबी हो गइल

मेहरी संग जा बसल बबुआ ससुराल में
माई रोअत रोअत बावरी हो गइल

(तीन)

सगरो दंगा-फसाद भड़कल बा
लग रहल बा चुनाव धमकल बा

काट लेवत बा दिन-दहाड़े ही
बासना के सियार सनकल बा

धर्म-मजहब के नाम पर देखीं
आग हैवानियत के दहकल बा

दउड़ऽ ता स्वार्थ के पाछे पाछे
रास्ता राजनीत भटकल बा

आपसी मेल-जोल, हमदर्दी
गर में फँसरी लगा के लटकल बा

देख लेती त चैन से मरती
बबुआ खातिर परान अटकल बा

(चार)

जहवाँ कटुता के बास हो जाला
ऊ जगह के बिनास हो जाला

देख सगरो बबूल नफरत के
मन के चिरई उदास हो जाला

जीत लेवेला सँउसे दुनिया ऊ
प्रीत जेकर लिबास हो जाला

दागियो जीत के इलेक्सन में
साफ उज्जर-कपास हो जाला

पाप हद से गुजर गइल होई
अइसे थोड़े बिनास हो जाला

(पाँच)

याद के चीलगाड़ी पे आइल
टीस राउर जिया में समाइल

जब जरल भाईचारा के खोंता
मन के पंछी बड़ा छटपटाइल

पड़ गइल नेह के खेत परती
काँट स्वारथ के घर-घर रोपाइल

आज ले काम अतने त भइलक
आसवासन के गोइठा पथाइल

दस-गो मिलके लड़ावऽता सब के
एक अरब के न अब ले बुझाइल

***

सुरेश गुप्त के पाँच गो गजल

नामः सुरेश गुप्त

जन्म तिथिः 20 नवम्बर 1965

प्रकाशनः कविता, गजल , मुक्तछंद, दोहा (हिंदी, भोजपुरी)

संप्रतिः सेवा निवृत्त,भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-नौरंगाबाग (बेतिया) में कार्यरत।

संपर्कः गैसलाल चौक, पुरानी गुदरी, बेतिया,प.चम्पारण

(एक)

ननकी दियरिया के मनवा में चोर बा
नीचे अन्हरिया बा उपरे अंजोर बा

गाधे मचवले बा दुखवा नयनवा में
पपनी से पुतरी ले बदरा सजोर बा

जिनगी के गछिया में ऊपर से नीचे ले
आधा में असरा बा आधा में खोर बा

चनवा चकोरवा के तकले बा रात भर
भोरे में लउकल कि पतई पर लोर बा

अब के पुछवइया बा चिरई परेवा के
सगरो अटरिया पर बइठल चिल्होर बा

(दू)

मेला लागल तीन पाँच के
माल बिकाता झूठ साँच के

सब केहू हुसियार भइल बा
पोथा पोथी बाँच बाँच के

अपने करनी हाथ जरवनी
नइखे कवनो दोस आँच के

पत्थर कहलस आँख झुकवले
हमहीं दिहनी पीर काँच के

रिस्ता नाता नकली बाटे
काम चला लीं घींच घाँच के

(तीन)

इरखा, झगड़ा भाग पराइल
सन्मत जब अंगना में आइल

जड़ में अइसन मट्ठा पाटल
हरिहर हरिहर गाछ झुराइल

रासन पेन्सन पावे खतिरा
दउड़त दउड़त गोड़ खियाइल

दुखवा के हमरे घरवा में
कहिया से बा टीक गड़ाइल

महंगी के अस मार पड़ल बा
पइसो लउकऽ ता लरुआइल

अनका ला खोदल गड़हा में
अदमी मुँहकुड़िये भहराइल

जे ना बूझल चाल समय के
जिनगी में उहे पछुआइल

(चार)

गिरत चलीं भा उठत चलीं
चलत चलीं जी चलत चलीं

गमकत फूल पिरितिया के
अंजुरी अंजुरी भरत चलीं

लोगन के खिसियाए दीं
बतिया सांचे कहत चलीं

कब ले जुगनू बनल रहब
सुरुज बन के उगत चलीं

काई खनिया जमकीं मत
पानी खनिया बहत चलीं

जहवाँ लउके गाछ बिरिछ
देवल बूझीं झुकत चलीं

(पाँच)

रिस्ता में बयपार घुसावल बन्द करीं
जिनगी के बाजार बनावल बन्द करीं

झगरा झुगरी बीत गइल, उपटाईं मत
मुरचाइल तलवार पिजावल बन्द करीं

बिटिहा वाला एतना सब देइए दिहलस
माड़ो के अब बाँस हिलावल बन्द करीं

नारद बन के भाई के लड़वाईं मत
घरही में घरमार करावल बन्द करीं

अपने जवना बतिया के समझत नइखीं
अनका के रउआ समझावल बन्द करीं

मत कवनो झांसा दीं पार उतारे के
लबराई पतवार चलावल बन्द करीं

धन दउलत अँखियन के अँखिए में राखीं
जहवाँ तहवाँ लोर चुआवल बन्द करीं

***

शंकर शरण 'काफिर' के चार गो गजल

नामः शंकर शरण 'काफिर'

जन्म तिथिः 1 अक्टूबर 1971

प्रकाशनः शाख-ए-लम्हात (गजल संग्रह), शहीदान-ए-वतन (नज्म संग्रह), दीवान-ए-काफिर (गजल संग्रह), कुल्लियात-ए-काफिर

संपर्क : आशीर्वाद भवन,नया चौक, बलिया (उ प्र)

(एक)

पितरपख में कउआ पुरनिया जनाला
जियत माई-बाबू के ढाठी दियाला

तंवाला सरेही में जब जीउ कहियो
हवे छांह का रुख के तब ई बुझाला

बड़ा बाति बोलल बकारल बा बाकिर
भला थूक से कतहूं सातू सनाला

इ जिनिगी तऽ माहुर के पाहुर नियर बे
छने में करेजा जुड़ाला दुहाला

भिजावत चलेला इ माटी के सगरो
कहां कहियो असमान अपने नहाला

चलल बाड़ सूई से बदरी के सीए
अनेरे ना जांगर के ढाठी दियाला

इ गरहन के छूअल पुरोहितो ना लेवे
अभागा तऽ काफि र के हाथो के खाला

(दो)

बार पाकल लुरछुताही ना गइल
का कहीं मन के सियाही ना गइल

जब अंजोरा में नहाए चान के
रात के काहें सियाही ना गइल

साध मन में अनगुताहे बान्हि के
काहें गांवे अपना राही ना गइल

मन बहेंगा जइसे ई मारल फिरे
घाव के कीना बेसाही ना गइल

गांव भर के हाल बा टूअर मतिन
बाढ़ बितलो पर तबाही ना गइल

घाम बूनी में तऽ छपकल हींक भर
काहें काफि र जरतुआही ना गइल

(तीन)

खेल गुंइया बिगारे लगल का करीं
खीसि मनवां नेवारे लगल का करीं

केहू तोपल उघारे लगल का करीं
मन में झांके निहारे लगल का करीं

रूप के रम्मा चोन्हा के सबरी से ऊ
सेन्हि हियरा में मारे लगल का करीं

साध जेंउआ जनमली सऽ आंतर में जब
मन ई सोंचे बिचारे लगल का करीं

मन अंजोरा अन्हारा से अउंजा गइल
राति चोन्हा पसारे लगल का करीं

मन के अंगऊ नियर हम सइंचले रहीं
केहू आइल जुठारे लगल का करीं

साध से खोंता चिरई लगवले रहे
आ के आन्हीं उजारे लगल का करीं

घाव बानर के ई घाही मन हो गइल
खोरठियाते ओदारे लगल का करीं

मन के सुगना उड़े ना सकल हारि के
पांखि साजे संवारे लगल का करीं

कुछऊ खइलस ना पियलस अजब हालि बा
घीउ घसि के ढेकारे लगल का करीं

आँखि रहुए की काफिर अँकारी रहे
बस करेजा ओदारे लगल का करीं

(चार)

पांखि सतरंगी सगरो छिंटाए लगल
घाम बूनी में लंगटे नहाए लगल

सांझि खा राति में दिन घोराए लगल
राति भोरे से जइसे ओराए लगल

जहिया बिदवानी केहू ओकाए लगल
बुझिहऽ ओकर मती अब मराए लगल

जे के देखऽ उहे सहरियाए लगल
गांव गंवईपना अब भुलाए लगल

रूप रामा भइल चोन्हा सबरी भइल
सेन्हि हियरा में हमारा मराए लगल

कवनो बिरिहिनी रहे ना उ हांड़ा रहे
बाति के टूड़ से मन बिन्हाए लगल

जाने कइसन हवा ई बहल बाग में
फूल पतई ले सभ छटपटाए लगल

राति जोन्ही चनरमा के मजलिस रहे
जसहीं फूटल किरिनि सभ पराए लगल

आजु बस्ती में कवनो नया गुल खिली
चिन्हा परिचे फिरू सुगबुगाए लगल

देहि बदरंग अजबे भइल सांच के
जहिया से झूठ में ई लेटाए लगल

जवना सिकिचा के पीछे गरहाइल रहे
ओही पिंजरा में मन उजबुजाए लगल

चोर कंकरी के फंसरी चढ़े जात बा
लमहरे ओ पऽ अछरंग मढ़ाए लगल

अब तऽ पइसे के परधानी काफिर भइल
जिनिगी खुचुरा के जइसे ओराए लगल

***

अशोक कुमार 'दीप' के पाँच गो गजल

नामः अशोक कुमार 'दीप'

जन्म तिथिः 15 जुलाई 1964

संप्रतिः फिल्म गीतकार-संगीतकार

संपर्कः मुहमदाबाद गाजीपुर

(एक)

सामने सुन्दर मुखड़ा बाटे
लुट जाये क खतरा बाटे

चान के चिठ्ठी लिख के बताइब
धरती पर भी चंदा बाटे

प्यास बुझाइब अब अँखियन क
सामने रूप क झरना बाटे

तू बाडू त लागे धरती
जन्नत से भी अच्छा बाटे

जान लुटाके तोहके पावल
बहुते सस्ता सउदा बाटे

(दू)

अगर इश्क देइ सहारा गजल के
बुलंदी पे रही सितारा गजल के

उ जब मुस्कुराके उठा दिहें घूँघट
तऽ देखे के मिली नजारा गजल के

कलम हम उठाइं आ तू मुस्कुरा द
तर फूटे लगी तेज धारा गजल के

मुहब्बत में जब जब इ दिल टूट गइल
त हमरा के मिलल सहारा गजल के

इहाँ हुश्न बा जाम बा साज बाटे
इहें हो सकेला गुजारा गजल के

(तीन)

याद आवेला बैलन से दवंरी कइल,
सूतल खरिहान में चाँदनी ओढ़के
मुंबई शहर के एगो बड़ फ़्लैट में,
जिय तानी उहे जिन्दगी ओढ़के

कुछ फलाना के बात कुछ फलानी के बात,
खेत पटला के और खाद पानी के बात
साँझ के बेरा सब केहू बइठत रहे,
रोज चौपाल में बतकही ओढ़के

दुवरे शुभलाभ स्वागत लिखाइल रहे,
अंगना गोबर से रची के लिपाइल रहे
गाँव क हमरा हर एक माटी क घर,
धरती पर रहे बइठल खुशी ओढ़के

अबहीं ले बाटे हमरा नजर में बसल,
गंगा के तीर के आपन गेहूं के खेत
लागे सूतल बा कवनो हसीना इहाँ,
हरियर रंग क नइ ओढ़नी ओढ़के

आज सबके बताइब उ भोजन के बात,
माई जब भी परोसे नियम इ रहे
घिव घंसल हथुवी और साग के साथ मे,
गुड़ भी थरिया में बइठे दही ओढ़के

मन के भावल चमक ना ए संसार के
'दीप' ए बात के बाटे हमके खुशी
गाँव के हइं इ गाँव के देन बा,
जिन्दगी कट गइल सादगी ओढ़के

(चार)

फेर सूरत उ मन परल होई
लोर झर झर तबे झरल होई

चान से दुश्मनी निबाहेलन
चाँदनी से बदन जरल होई

लार चूवत बा काल्ह सांझे से
गाँव में आम फिर फरल होई

गाड़ दिहऽ जा उँहँवे हमरा के
कवनो तितली जहाँ मरल होई

बेवफा के भी हम दुवा दीहलीं
नाती पोता से घर भरल होई

फेर ओढ़नी ए 'दीप' भींजत बा
गवना एह साल भी टरल होई

(पाँच)

मन कऽ पंछी पे ना कवनो पहरा लगे
उड़ के जाये जहाँ एके अच्छा लगे

आज बाड़न उहो मेला देखे चलल
जिनके देखे बदे रोज मेला लगे

दूल्हा सखिया क मंडवा में आवेला जब
हर सहेली के आपन उ दूल्हा लगे

रंग और रूप ना देखे नेहिया कबो
नीक गोरकी के सैंयाँ सँवरका लगे

एक झलक के बदे 'दीप' चाहिलाँ हम
उनके खिड़की पे ना कबहूँ पर्दा लगे

***

मिथिलेश गहमरी के पाँच गो गजल

नामः मिथिलेश गहमरी

जन्म तिथिः 05 सितम्बर 1970

प्रकाशनः धूप की चादर (गजल संग्रह), केकरा से माँगीं अँजोर (गजल संग्रह)

संपर्कः गहमर, गाजीपुर, (उ0-प्र0)

(एक)

बाढ़ आइल सिवान में देखलीं
नाव साजल दलान में देखलीं

दिल भइल काठ रात के फिकिरे
आँखि अझुरल बिहान में देखलीं

घर में खाए के माहुरो नइखे
रोग लागल बा धान में देखलीं

जे बा डूबल गुनाह में, ओकर
होत पूजा जहान में देखलीं

अब कहाँ बा सुबास पहले मतिन
फूल कागज के लॉन में देखलीं

एक से बढ़के एक अचरज बा
अपना हिंदोस्तान में देखलीं

राम जाने फसल जरी कि बची
आग लागल मचान में देखलीं

माल असली गोदाम में 'मिथिलेश'
बा जे नकली, दुकान में देखलीं

(दू)

घर अन्हरिया के, सुरुज बिनु जगमगाई ना कबो
जुगनुअन से, रात के करिखा पोंछाई ना कबो

मन के कहना बा,कि तू अपना करम पर ध्यान दऽ
जग कहत बा, नीम के जाई तिताई ना कबो

ताँत के, तागा के, चाहे होके रेशम तार के
जाल से, दरियाव के रस्ता बन्हाई ना कबो

लोग, जग में केतनो समरथवान हो जाई, मगर
रीन माई के, तऽ केहू से भराई ना कबो

साँच के हाथे, हमेशा झूठ के हारे के बा
चान, सूखल झील में तऽ झिलमिलाई ना कबो

रार अमरित पर भइल अइसन कि लागत बाटे अब
साथे मिल-जुल के समुन्दर फिर मथाई ना कबो

मन के मठिया पर किचाइन ना रुकी 'मिथिलेश' तऽ
केहू गोहरावत रहे, तोहके सुनाई ना कबो

(तीन)

चाहे मजदूर रहे, चाहे 'गवरनर' होखे
सबहीं चाहेला मुकद्दर के सिकन्दर होखे

आज के दौर में इंसान जियत बा अइसे
जइसे बरसात में देवाल 'पलस्तर' होखे

हमके दरियाव बनावऽ, त' बनावऽ अइसन
आस में जेकरा खड़ा कवनो समुन्दर होखे

फूल केहू के मिलल, 'फर' बा मिलल केहू के
साझ के बाग ह', तऽ बाँट बराबर होखे

कम से कम खून में पानी में त' जाने अंतर
देश के, चाहे ऊ परदेश के लीडर होखे

नाग बनिके, जे खुशी चाट रहल चिरइन के
नाम ओकर त' सरेआम उजागर होखे

होके शायर जे कहे साँच के ना साँच अगर
ओसे नीमन बा कहीं नाच में 'जोकर' होखे

खोज के हार गइल लोग, मिलल ना 'मिथिलेश'
एको तारा, कि जे असमान से ऊपर होखे

(चार)

हजार ओर से एकही सवाल, रे भाई
पहाड़ तोड़ के, पानी निकाल, रे भाई

रहे उमीद सजी अँगना चान-तरइन से
भइल बा आज दियरियो मुहाल, रे भाई

बदल गइल बा समय केतना, का बताई आज
बनल बा बेटी के बापे दलाल, रे भाई

सनेह तूरि के घर में खड़ा देवाल भइल
खटाई, दूध में दिहलस के डाल, रे भाई

फँसल सुनात रहे जाल में जवन मछरी
खतम गँवें-गँवें कइलस ऊ जाल, रे भाई

दसों दिशाईं भइल आज बाज के कब्जा
गले ना पावे कबूतर के दाल, रे भाई

निगल रहल बा फसल, खेत के जे मेंड़ रहे
नया सदी के, ई देखऽ कमाल, रे भाई

(पाँच)

करेजा के ढाठी दिआई ना हमसे
'मेरौनी' के, 'एकहन' कहाई ना हमसे

का खेलवाड़ रउआ करब, रउवे जानी
नोहरनी से, जाँता कुटाई ना हमसे

नया दौर के आदमी जइसे 'रोबोट'
कबो दिल के रिश्ता निभाई ना हमसे

अजब हाल बा, अब सुरुजवो कहत बा
अन्हरिया के पहुँचा धराई ना हमसे

मुहब्बत के हमरा लगे बा दवाई
कवन घाव आखिर भराई ना हमसे

'जगन्नाथ' जी के हईं हम त' बंशज
गजल के ई थाती बिलाई ना हमसे

पड़ो चाहे केतनो तवालत में जिनगी
दियानत के खेती धँगाई ना हमसे

***

मनोज भावुक के पाँच गो गजल

नाम: मनोज भावुक

जन्म तिथि: 2 जनवरी 1976

प्रकाशन: तस्वीर जिंदगी के (भोजपुरी गजल-संग्रह), चलनी में पानी (भोजपुरी गीत-संग्रह), भोजपुरी सिनेमा के संसार (भोजपुरी सिनेमा के इतिहास)

संप्रति: पहिले लंदन आ अफ्रीका में इंजिनियर। अब भारत में टीवी पत्रकार, फिल्म गीतकार। संपादक, भोजपुरी जंक्शन

संपर्क: गौर सिटी, ग्रेटर नोएडा

(एक)

बात पर बात होता बात ओराते नइखे
कवनो दिक्कत के समाधान भेंटाते नइखे

भोर के आस में जे बूढ़ भइल, सोचत बा
मर गइल बा का सुरुज रात ई जाते नइखे

लोग सिखले बा बजावे के सिरिफ ताली का
सामने जुल्म के अब मुठ्ठी बन्हाते नइखे

ओद काठी बा, हवा तेज बा, किस्मत देखीं
तेल भरले बा, दिया-बाती बराते नइखे

मन के धृतराष्ट्र के आँखिन से सभे देखत बा
भीम असली ह कि लोहा के, चिन्हाते नइखे

बर्फ हऽ, भाप हऽ, पानी हऽ कि कुछुओ ना हऽ
जिन्दगी का हवे, ई राज बुझाते नइखे

दफ्न बा दिल में तजुर्बा त बहुत, ए 'भावुक'
छंद के बंध में सब काहें समाते नइखे

(दू)

दर्द उबल के जब छलकेला गजल कहेलें भावुक जी
जब-जब जे महसूस करेलें उहे लिखेलें भावुक जी

टुकड़ा-टुकड़ा, किस्त-किस्त में जीये-मुयेलें भावुक जी
जिनिगी फाटे रोज-रोज आ रोज सियेलें भावुक जी

अपना जाने बड़का-बड़का काम करेलें भावुक जी
चलनी में पानी बरिसन से रोज भरेलें भावुक जी

हिरनीला बउराइल मन भटकावे जाने कहाँ-कहाँ
गिरत-उठत अनजान सफर में चलत रहेलें भावुक जी

कुछुओ कर लीं, होई ऊहे, जवन लिखल बा किस्मत में
इहे सोच के अक्सर कुछुओ ना सोचेलें भावुक जी

आँच लगे जब कस के तब जाके पाके कच्चा घइला
अइसे दुख के दुपहरिया में जरत रहेलें भावुक जी

पटना, दिल्ली, बंबे, लंदन अउर अफ्रीका याद आवे
जिनगी के बीतल पन्ना जब भी पलटेलें भावुक जी

जिक्र चले जब भी वसंत के हो जालें बेचैन बहुत
आँख मूंद के जाने का-का याद करेलें भावुक जी

(तीन)

हजारो सपना सजा के मन में चलत रहेलें मनोज भावुक
गिरत रहेलें, उठत रहेलें, बढ़त रहेलें मनोज भावुक

एह जिंदगी के सफर में उनका तरह-तरह के मिलल तजुर्बा
ओमे से कुछ के गजल बना के कहत रहेलें मनोज भावुक

ऊ जौन भोगलें, ऊ जौन देखलें, ना भोगे आगे के नस्ल ऊ सब
एही से आपन कथा-कहानी लिखत रहेलें मनोज भावुक

के भाई कहके बनल कसाई, के गोद लेके करेज कढ़लस
उठा के एल्बम चिन्हें के कोशिश करत रहेलें मनोज भावुक

बा दर्द एतना अधिक कि जाने कहां अँटावस एह छोट दिल में
एही से ओके गजल में अपना भरत रहेलें मनोज भावुक

ना जाने केकरा से गप करेलें ई बंद कमरा में बुदबुदा के
केहू ना बूझे, हिया के धड़कन सुनत रहेलें मनोज भावुक

दुआर-अंगना टहल-टहल के, गजल कहे के लकम बा लागल
कहेला घर भर कि कादो-कादो बकत रहेलें मनोज भावुक

एने जरत बाटे 'रोम', ओने महल में 'नीरो' सुनत बा बंसी
लगेला ओइसे गजल में अपना झुमत रहेलें मनोज भावुक

करेलें कोशिश गजल लिखे के मगर अभी ले लिखे ना आइल
बस आदतन ही कलम उठा के घिसत रहेलें मनोज भावुक

(चार)

जब से शहर में आइल तब से बा अउँजियाइल
रोटी बदे दुलरुआ खूंटा से बा बन्हाइल

गदहो के बाप बोले, दिनवो के रात बोले
सुग्गा बनल ई मनई पिंजड़ा में बा पोसाइल

शूगर बढ़ल रहत बा, बी.पी. चढ़ल रहत बा
गजबे के जॉब बाटे किडनी ले बा डेराइल

पेटवे से बा कनेक्शन एह जॉब के, एही से
सहमल बा शेर अउरी गीदड़ बा फनफनाइल

जे सुर में सुर मिलावल, जे मुँह में मुँह सटावल
ओही के बा तरक्की, ओह पर बहार आइल

मीटिंग के बदले मेटिंग, सर्विस के बदले सेटिंग
जेकरा में ई हुनर बा, ऊ हर जगह फुलाइल

अंधेर राज में बा चमचन के पूछ भलहीं
बेरा प यार हरदम टैलेंट कामे आइल

अन्हियार के मिटावे, सूरज उहे कहाला
ओही से बाटे दुनिया, ऊहे सदा पुजाइल

अइसे त फेसबुक पर बाड़न हजार साथी
संकट में जब खोजाइल, केहू नजर ना आइल

नेटे प देख लिहलस माई के काम-किरिया
बबुआ बा व्यस्त अतना लंदन से आ न पाइल

साथी के घात से बा गतरे गतर घवाहिल
रिश्तन के जालसाजी भावुक के ना बुझाइल

(पाँच)

ऊ नामी आदमिन के साजिशन बदनाम कइलन स
एही तिकड़म से सारे खूब नू चर्चा में अइलन स

केहू पूछल ना ओकनी के त एगो काम कइलन स
खुदे संस्था बनवलन स आ खुदही मेठ भइलन स

दिया हम नेह के लेके सफर में बढ़ रहल बानी
ऊ नफरत के भयंकर आग में जर-जर बुतइलन स

बेचारा का करऽ सन, बम में दम त बा ना सिरिजन के
केहू के खींच के टङरी ऊ आपन कद बढ़इलन स

बना देलन स सच के झूठ ऊ अपना थेथरपन से
मगर सच सच रहेला ई ना लबरा बूझ पइलन स

जहाँ तक हो सके, दूरे रहीं कींचड़ आ लीचड़ से
परल एहनी के पाले जे, ई ओकर नाश कइलन स

कबो पनरोह से पूछीं जे जमकल पाँक के पिलुआ
दहइलन सन ना पानी से त बाँसो से कोंचइलन स

कहाँ पानी गटर के रोक पवलस गाछ के बढ़ती?
निगेटिव जीव कतने राह में अइलन स, गइलन स

जोगाड़ू फूल माला मंच बैनर जय हो जय हो से
बिना कुछ करनी धरनी के फलाने जी कहइलन स

भला असमान पर थुकला से ओकर का होई 'भावुक'
मगर बकलोल जिनगी भर बस ईहे काम कइलन स

***

हिमकर श्याम के पाँच गो गजल

नामः हिमकर श्याम

जन्म तिथिः 16 जनवरी, 1973

प्रकाशनः प्रकाशित संग्रहः 'दिल बंजारा' (गजल संग्रह), 'युध्दरत हूँ मैं' (कविता संग्रह) संपादित संग्रह : 'जिंदगी@लॉकडाउन' (काव्य संग्रह), 'बाद-ए-सबा' (गजल संग्रह)

संप्रतिः स्वतंत्र पत्रकार, लेखक एवं ब्लॉगर

संपर्कः B-1, शांति इंक्लेव, कुसुम विहार, रोड नम्बर-4A, मोराबादी, राँची

(एक)

हर कदम हौसला बढ़ावेला
ई सबुर काम बहुत आवेला

ख़्वाब देखीं त के तरे देखीं
नींद से रोज उ जगावेला

पोंछेला लोर जे फजीरे में
राति में घर उहे जरावेला

गाछ हरिअर न एह तरे काटीं
घाम में ढेर काम आवेला

आस बाटे त ओके किरिपा पर
साथ मुश्किल में के निभावेला

कवनो आफत बिगाड़ का पाई
मौत से आँखि जे लड़ावेला

(दू)

हम जहाँ तक भइल मुसकिरावत रहीं
जख्म सीअत रहीं, दुख छिपावत रहीं

जे भइल से भइल सब भुलावत रहीं
आस के दीप मन में जरावत रहीं

जिन्दगी से खुशी दूर होखत रहल
ऊ त रूसल रहल, हम मनावत रहीं

वक़्त के डोर छूटत गइल हाथ से
ख़्वाब टूटत रहल, हम सजावत रहीं

प्रीत के डहरिया टेढ़ होला मगर
डेग पर डेग आगे बढ़ावत रहीं

पीर हियरा के कोई न समझल कबो
हाल सभका के असहीं सुनावत रहीं

जब हटल रुख से पर्दा त टूटल भरम
केकरा आगे सिर हम झुकावत रहीं

(तीन)

इहाँ हर तरफ हाय- तउबा मचल बा
हथेली प सरसों भला कब उगल बा

मुहब्बत के बाती बचाई त कइसे
हवा बैर-नफरत के सगरो चलल बा

जरावल गइल बा कहीं कोई बस्ती
धुँआ कह रहल बा, कई घर जरल बा

इ कइसन जमाना सभे लोग उलझल
कवन जाल में देस-दुनिया फँसल बा

भले आँकड़न में दिखत बा तरक्की
गरीबी इहाँ दर-बदर फिर रहल बा

रही चार दिन ही चमक चाँदनी के
इ कुल जगमगाहट नजरिया के छल बा

(चार)

महँगा अब एतिबार भइल बा
घर-घर ही बाजार भइल बा

ताल-तलइया लउकत नइखे
पातर गंगा धार भइल बा

लोग बँटल बा जाति- धरम में
आपस में तकरार भइल बा

मतलब के सब संगी-साथी
कइसन ई संसार भइल बा

होखी कइसे असर दवा के
मन से जे बीमार भइल बा

रोजी-रोटी के फेरा में
हर केहू लाचार भइल बा

आकुल हिरदय, बेकल नयना
जिनिगी भी दुश्वार भइल बा

शोर भोर के हमहूँ सुननीं
आँख खुलत अँधियार भइल बा

(पाँच)

नाम सोहरत गुमान लेवेला
वक़्त सभ छीन छान लेवेला

ओकरा से कुछो छुपल नइखे
बात हियरा के जान लेवेला

आदमी बा उसूल के पक्का
सबसे झगड़ा उ ठान लेवेला

हक में देवेला के गवाही अब
साँच कर के बयान लेवेला

जेके चरचा बा बेवफाई के
अब उहे इम्तिहान लेवेला

तेज होला बहाव पानी के
जद में काचा मकान लेवेला

साथ जाला उहाँ न धन दौलत
लोग काहे समान लेवेला

***

गुलरेज शहजाद के पाँच गो गजल

नामः गुलरेज शहजाद

जन्म तिथिः 05 जून 1976

प्रकाशनः स्याही सूखने से पहले(उर्दू), आग पे रखी रात (देवनागरी), कुदरत बेहुस्न नहीं हुई है (अजीत कुमार आजाद विरचित मैथिली काव्य संग्रह "युद्धक विरोध में बुद्धक प्रतिहिंसा" का उर्दू अनुवाद), इस शहर के लोग (माणिक बच्छावत रचित हिंदी काव्य संग्रह "इस शहर के लोग" का उर्दू अनुवाद), गीतों से मुझको प्यार बहुत है (जनवादी कवि अश्विनी कुमार प्रदीप के काव्य संकलन का सम्पादन), चम्पारन सत्याग्रह गाथा (भोजपुरी कथा काव्य), धाह (भोजपुरी कविता/गजल संकलन)

संपर्कः मोतिहारी, जिला- पूर्वी चंपारण, (बिहार)

(एक)

हम का देखीं छितिज पर असमान के लाली
सुरुज से टहकार बा राउर पान के लाली

रउरे चलते छिंटकल बाटे मन में कीरिन
रउरे कारन चमकल बा अरमान के लाली

नेह के चमचम चमके पावन शीतल घाम
फइल गइल सगरो राउर सम्मान के लाली

याद पड़ल दादी के दीहल पान के बीड़ा
मन में छलकल खनदानी पनदान के लाली

अइसन नेग भराइल सब हो गइल पावन
अजगुत बाटे दमकत सिंदुरदान के लाली

खुद गुलरेज बिखर गइलें गुल के बिखरावत
याद में बाकी रहि गइल गुलदान के लाली

(दू)

नाप लियाई लमहर दूरी, दूरी नइखे
सपना देखे खातिर नीन जरूरी नइखे

बैच लगवले बानी दिल पाकिट पर तोहरे
बाकिर प्रेम कइल कउनो मजबूरी नइखे

आँख मिलावत तोहरा से दिल ढमिलाइल
कइसे कह दीं नयन के रस अंगूरी नइखे

दिन भर तोहरे नाम जपल बेगारी भइल
अतना लगन लगवला के मजदूरी नइखे

धरती पर अब बहल जाता खून के दरिया
साँझ के माथा लाले बा सिंदूरी नइखे

(तीन)

चमकल बा असमान के दरपन देखीं का
बिधने लिखाइल तीन तरेगन देखीं का

अब का देखीं देह उघारल दुनिया के
फाटल बाटे अपने अचकन देखीं का

सून पड़ल बा सेनुर गायब माँग के टीका
असरा के टूटल बा कंगन देखीं का

पचकल बर्तन केकरो घरे मुँहकुरिये बा
आपन घर के चमकत बर्तन देखीं का

बाग बगइचा, गाछ बिरिछ के मउअत बा
भोग विलास के बनल साधन देखीं का

सोच समझ के आग लगावल गइल बा
भगनी हमहूँ आनन फानन देखीं का

आज जवानी सड़कन सड़कन भटकऽता
बउआता फुटपाथ प बचपन देखीं का

बरिसन बाद ई लइकाई बा याद पड़ल
खेलत बानी अटकन चटकन देखीं का

(चार)

देखीं कतना भार हो गइल
जिंदगी उलार हो गइल

तिरछा तिरछी आँख जे मिलल
सोझा सोझी प्यार हो गइल

पुरवा गजबे याद के उठल
घाव सब जितार हो गइल

आज कहवाँ बात साथ बा
नेहिया तार तार हो गइल

पहिले हमर मन रहे हमार
अचके ई तोहार हो गइल

(पाँच)

खुसी में छउकत बाड़ऽ मन महुआ गइल बा का
प्रीत मिलन के बेरा अब नियरा गइल बा का

रात अन्हरिया जगमग भइल चकचक कोना कानी
अंघुआइल रतिया में केहू आ गइल बा का

सांस-सांस कचनार भइल बा गमगम गमके सगरो
छंइटी फुलवन के अचके छितरा गइल बा का

बेचैनी में रात कटाइल दिन भकुआइल लागे
नेह के डोरी में मनवा लपटा गइल बा का

सांझ भइल सिंदूरी जस गोरी के मुँहवा दमके
सांवर सांझ में सेनुर नेग भरा गइल बा का

ठोढे मुस्की चान बा चमकत लागे जस मतवाला
मन का भितरी में कुछहू अँखुआ गइल बा का

***

सन्तोष विश्वकर्मा सूर्य के पाँच गो गजल

नामः सन्तोष विश्वकर्मा सूर्य

जन्म तिथिः 12 अक्टूबर 1986

संप्रतिः लोको पायलट, रेलवे (गोरखपुर)

संपर्कः तुर्कपट्टी, पोस्ट – बंजरिया बाजार, जिला–देवरिया, उत्तर प्रदेश

(एक)

सजी सम्बन्ध बौना हो रहल बा
हृदय में द्वेष गहिरा हो रहल बा

सियासत की गिलावा से चुनाइल
महल नफरत के ऊंचा हो रहल बा

बहुरिया की कमर में दर्द बाटे
कहऽ ता लोग नखड़ा हो रहल बा

सियासत के जहर बाटे फिजा में
गली में रोज चर्चा हो रहल बा

मिलल श्रीराम जी के आसियाना
खुशी ई आज सबका हो रहल बा

जवानी पर बुढ़ापा बोझ बाटे
सँघे माँ–बाप, घाटा हो रहल बा

सुनऽ ऐ सूर्य दुनिया में निहारऽ
तरक्की अब जियादा हो रहल बा

(दू)

केहू आपन से आन हो जाला
साँचों साँसत में जान हो जाला

ढेर जेकर बखान हो जाला
उनके मन में गुमान हो जाला

दर्द ताउम्र ना भुलाला हो,
बात बेशक पुरान हो जाला

बचपना ना कबो मिटे मन से
केहू कतनो जवान हो जाला

अंकुरित प्रेम ना भइल मन में
उम्र असहीं जियान हो जाला

याद उनकर सतावेला जब–जब,
सूर्य रोवत बिहान हो जाला

(तीन)

गाँव में माई बिआ बेटा बसल परदेस में
लोग कहँवा आ गइल बा, जिंदगी की रेस में

पेट के आगी बुझावल आज बड़ मुस्किल भइल
आदमी अझुरा गइल बा अर्थ के परिवेश में

दुख बड़ी होला मगर, आँसू गिरावल बा मना
साथ छूटल यार के बा जिंदगानी क्लेश में

हो गइल मुश्किल कहल की के हवे आपन इहाँ
के बनी दुश्मन मिली अब दोस्त कवनी भेष में

खत सहेजल बा अबो ले हऽ निशानी प्यार के
आज ले रखले हईं गजरा लगावल केस में

(चार)

कहानी जाड़ से ठिठुरत गरीबन के सुनाई का
रजाई में घुसल हउअऽ दरद तहरा बुझाई का

दुआरे से भिखारी मारि के लउरी, भगा दिहलऽ,
कबो जग में केहू के आज तक कइलऽ भलाई का

भइल बेटा दिआइल ताव मोछी शान से बड़िए,
सुता के मारि दिहलऽ कोंख में, जनबऽ बिदाई का

बुढ़ापा में न आपन साथ केहू तब दरद होला,
भला बेजान हड्डी से, कबो आँटा गुथाई का

लगा दऽ शब्द के मरहम, असर जल्दी नजर आई,
अकेला लोग खातिर तऽ दुआ कइसन दवाई का

बिछड़ के जी रहल बानी, बताईं आजु हम कइसे,
मुहब्बत यार ऊ पहिला, कबो दिल से भुलाई का

कबो पाती मुहब्बत में लिखल नाहीं ऊ का जानी,
कि का होला मुहब्बत में मिलन कइसन जुदाई का

(पाँच)

सब इहवें भरपाई होई
भइया पाई-पाई होई

वक्त आखिरी आ जाई तऽ
ना कवनों सुनवाई होई

भाई से भाई लड़ जाई
सगरो राई छाई होई

रहत समइया जे ना चेती
अंत बड़ी दुखदाई होई

बेटा फार्च्यूनर से घूमी
जेकर ढेर कमाई होई

***

कुन्दन सिंह 'काव्यांश' के पाँच गो गजल

नाम: कुन्दन सिंह 'काव्यांश'

जन्म तिथि: 11 जुलाई 1989

प्रकाशन: 'शब्दों की अदालत', 'गीत किसने गाया' हिंदी साझा काव्य संग्रह। हिंदी आ भोजपुरी के विभिन्न पत्र – पत्रिका में प्रकाशन

संप्रति: पेशा से मैकेनिकल इंजीनियर। निजी व्यवसाय।

(एक)

प्यार आधा निभा के देख लिहऽ
दर्द में मुस्कुरा के देख लिहऽ

एकतरफा अगिन मुहब्बत के
दिल के पूरा जरा के देख लिहऽ

सामने से हँसत मिलीला हम
घर में कबहूँ लुका के देख लिहऽ

लोर कतना बहल बा का बोलीं
यार तकिया उठा के देख लिहऽ

आस बाकी रही मरे तक ले
जिंदगी भर बुला के देख लिहऽ

आह हमरा हिया से निकलल बा
गीत ई गुनगुना के देख लिहऽ

लोग धोखा के बात पूछी तऽ
नाम हमरे लगा के देख लिहऽ

(दू)

मधेस घाम पूस के आ जेठ के फुहार पर
सुनऽ ना हम लिखत हईं ई दास्तान प्यार पर

नया रहे त रोकनी हिया में घूघ तान के
बुढ़ा गइल जे बात तऽ कहा गइल दुआर पर

सजल बा आँख ओठ पर बा लाल लाल पैंतरा
चलल बा हुश्न आज फिर कवन नया शिकार पर

कई बरिस के प्यार चार बात में बिखर गइल
लोहार भारी पड़ गइल बा चोट में सुनार पर

शरीर सोच में रहे बढ़ीं कि ना बढ़ीं कदम
निकल के जान आ गइल जनाब के पुकार पर

किताब में लिखल रहे नियम ऊ तीसरा गलत
कहाँ मिलल बराबरी के प्यार हमरा प्यार पर

उगल बा घाम माथ पर हवा में बा नमी अभी
लिखीं त का लिखीं भला बनावटी बहार पर

(तीन)

हर संगीत के सार हईं हम
पायल के झंकार हईं हम

सउदा सब बेमोल बिकाला
रस्ता के बाजार हईं हम

हासिल बा पर जायज नइखे
विधवा के सिंगार हईं हम

हाजिर बाकिर जाहिर नइखीं
मोबाइल के तार हईं हम

बढ़नी बन सब साफ करीले
भलहीं खर पतवार हईं हम

रोज चलीं काटीं ना कुछऊ
लकड़ी के तलवार हईं हम

काना ना हम आन्हर बानी
बहुमत के सरकार हईं हम

(चार)

दर्द बा बेशुमार आँखिन में
आव दिखला दीं प्यार आँखिन में

आँख ई तीर हऽ कटारी हऽ
लोग कतना शिकार आँखिन में

रात अतना सियाह बीतल बा
भोर ले बा अन्हार आँखिन में

नीन पड़ला त जुग भइल एगो
काँच सपना हजार आँखिन में

आँख के आँख हम कहीं कइसे
मर गइल जब करार आँखिन में

आँख केकरा ला ई सजावल बा
के बसेला तहार आँखिन में

लोग चेहरा छुपा के घूमत बा
लोग बाटे उघार आँखिन में

कौन साँचा के ई बनावल हऽ
यार सोरहो सिंगार आँखिन में

(पाँच)

बदरी से झाँकल रहि रहि के, बाकिर परदा खूब भइल
रात के हमरी अंगनाई में, चान के जलवा खूब भइल

आँख से आँख चुरा के हमहूँ, तकनी उनके जी भर के
टकराइल ना नैन से नैना, मिलना जुलना खूब भइल

बतियइनी ना हमनी तबहूँ, लोग त कइसे जान गइल
गाँव मुहल्ला पंचाइत में, हमरो चर्चा खूब भइल

मन उनका खातिर छड़िआला, हम मन के समझाइले
बरिसन ले अपने मनवा से, आपन झगड़ा खूब भइल

दिल के चोरी के दावा बा, ई दिल पर उनको दिल पर
प्यार मुहब्बत के फेरा में, दिल ई रुसवा खूब भइल

घाम ना बा अब जाड़ो नइखे, ना अब बिजुरी कड़कत बा
कई लिहलू तू खूब बहाना, आवऽ नखरा खूब भइल

***

अश्विनी द्विवेदी 'नमन' के तीन गो गजल

नाम: अश्विनी द्विवेदी 'नमन'

जन्म तिथि: 15 अक्टूबर 1983

प्रकाशन: घमछँइयाँ (भोजपुरी गीत संग्रह)

संपर्क: कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

(एक)

छन में रूसल मनावल जरूरी बा का?
झूठे किरिया धरावल, जरूरी बा का?

तू हँसा देल एतना, कि रो देनी हम
एह तरे गुदगुदावल, जरूरी बा का ?

कहब बनरे के बानर त कंउचे लगी
समने ऐना देखावल, जरूरी बा का?

भेली खइला से जब,ओकरा मरही के बा
ओके माहुर खियावल, जरूरी बा का?

ऊ त झुटुही से झगरा करे 'अश्विनी'
तहरा लंगड़ी लगावल, जरूरी बा का?

(दू)

आपन आन गूनत में, सजो जिनिगी ओरा जाला
तूं अजमइह, लचारी में, इयारी यार चिन्हा जाला

कबो गार्हे में परब त, बुझा जाई खुदे तहरा
बिपति जब आवेला सोझा,सजो रहता रुन्हा जाला

जुआठा हम करम के बान्हि के, दिन रात ढोइलें
एही लेखां बिना पहिया के ई गाड़ी हंका जाला

देखला से बुझाला ऊ, ह सांचो दूध के धोवल
ओकर किरदार देखीलें, त हमरो मन घिना जाला

पाकड़ के, पीपल के 'अश्विनी' पेंड़ बरगद के
लगावल ह पुरनियन के, जेही आवे छंहा जाला

(तीन)

संउपा गइल जवानी, जेके खंघारि के
देला उ हमसे ओरहन पूछे तिखारि के

केकरे मटारे लागल देखल न गइल ओसे
का पाई तोता मैना के खोता उजारि के

खूलल किताब जइसन,जिनगी हवे हमार
पढ़े के बा, जे पढ़िले, पन्ना उघारि के

कोइलरि के अब ना कूंकूं, न चहके गौरैया
कागा ना बोलावे अब, पाहुन उचारि के

बानर का जानीं आदी के सवाद 'अश्विनी'
कुछ लोग डारे नेबुआ भाजी में गारि के

***

डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन' के दूगो गजल

नामः डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

जन्म तिथिः 3 फरवरी 1982

प्रकाशनः टुकी-टुकी अंगना-दुआर हो गइल (गीत-संग्रह) प्रकाशन में

संप्रतिः सहायक सेक्शन ऑफिसर, व्यवहार न्यायालय, बेतिया, प. चम्परण, बिहार

(एक)

सुन बबुनी रे सुन बबुनी
सुंदर सही सगुन बबुनी

सगरो दुनिया तोहके माने
होखे अइसन गुन बबुनी

अँगुरी केहू उठा ना पावे
अइसन रस्ता चुन बबुनी

काम-धाम कुछ करबू ना त
हो जइबू टुनटुन बबुनी

सोरहो घरी मोबाइल लेके
देखऽ मति रुनझुन बबुनी

पढ़ि-लिख के हुंसियार बने के
अइसन होखे धुन बबुनी

'गुंजन' गूंजे घर-आंगन में
बेटी के गुनगुन बबुनी

(दू)

ओकरा कुछु परेसानी नइखे
जेकरा आंख में पानी नइखे

लाज टंगाइल पुलुई जेकर
कहवां काटत चानी नइखे

मन उचटेला ओ मनई से
जेकर मधुरी बानी नइखे

जेहि बनावल महल-अटारी
ओकर दखल-दहानी नइखे

सोझा-सांच जे राह देखावे
ओइसन अब परधानी नइखे

खेत-बधार परल बा परती
मिलत अब खरिहानी नइखे

खतरा में खेती बा ओकर
जेकर ऊंच सिवानी नइखे

सहर-बाजार भले बा चहकत
गांव-जवार के सानी नइखे

धरम-धजा फहरी का 'गुंजन'
जे मन से बलिदानी नइखे

***

कृष्ण कुमार श्रीवास्तव 'कृष्णा' के एगो गजल

नाम: कृष्ण कुमार श्रीवास्तव 'कृष्णा'

जन्म तिथि: 03 जून 1973

प्रकाशन: दोहा पुंज(दोहा संग्रह), कृष्णार्पिता(गीत संग्रह), नीक-बाउर(भोजपुरी गजल संग्रह) प्रकाशनाधीन

संप्रति: विधि व्यवसाय

संपर्क: हाटा, कुशीनगर उत्तर प्रदेश

गाँव के बाति हमरे निराला हवे
प्रेम-सरधा के ई पाठसाला हवे

भात, रोटी आ चटनी में अमरित भरल
इहवाँ अनमोल हर इक निवाला हवे

नेह महकल करेला इहाँ ए तरह
जइसे सिलवट पे पीसल मसाला हवे

आम, बरगद भा पीपर बा पावन बहुत
धूर-माटी हमन के दुसाला हवे

बाटे 'कृष्णा' न मन में अन्हरिया कहीं
सीख पुरखन के दिहल उजाला हवे

***

शैलेश कुमार सिंह के एगो गजल

नामः शैलेश कुमार सिंह

जन्म तिथिः 24 अगस्त 1965

संप्रतिः यूएनआई (यूनीवार्ता) में वरिष्ठ पत्रकार के रूप में कार्यरत

संपर्कः जी4, सुमित एंक्लेव, विश्वेश्वरैया नगर, बिहार कॉलेज ऑफ फामेर्सी के सामने, बेली रोड, दानापुर, पटना

केहू के उम्मीद के चिराग हईं हम
कबो ना बुताई उ जरत आग हईं हम

लोगवा त हमरा के पागल कहेला
समय पर बताइब इंकलाब हईं हम

दुश्मनी हमार तनी महंग पड़ेला
बाकी दोस्त बड़ी लाजवाब हईं हम

हमरा नशा में बाते कुछ आउर बा
कबो ना उतरी उहे शराब हईं हम

हमरा जे मिलल उ जागते मिलल
कइसे बताईं कि एगो ख्वाब हईं हम

कबो पूछे के होई त हिया से पूछ लिहऽ
तोहरा सब सवालन के जवाब हईं हम

***

अतुल कुमार राय के एगो गजल

नामः अतुल कुमार राय

जन्म तिथिः 25 अक्टूबर 1992

संपर्कः मुर्तजीपुर, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश

द्वेष मन से भगावहीं के पड़ी
ई अलख भी जगावहीं के पड़ी

कइल वादा निभावहीं के पड़ी
चाहे खुद के झुकावहीं के पड़ी

आग पवते हवा धधक जाले
सबके मिलके बुतावहीं के पड़ी

पेड़ कब हार के बइठ जाला
फेर पतई उगावहीं के पड़ी

राह ऊढ़ुक से बा भरल लेकिन
ओहि में रह बनावहीं के पड़ी

सोझ अंगुरी से घीव ना निकली
रूप दोसर देखावहीं के पड़ी

उम्र काटल पहाड़ हो जाला
गीत बिरहिन के गावहीं के पड़ी

***

पप्पू मिश्र 'पुष्प' के एगो गजल

नामः पप्पू मिश्र 'पुष्प'

जन्म तिथिः 25 मई 1976

प्रकाशनः व्याख्याता- यू.एच.एस. हथुआ(गोपालगंज)

संपर्कः छोटी नरईनियाँ(पूरब टोला), मीरगंज, जिला- गोपालगंज, बिहार

हाल बा बेहाल बात पूछीं मत गरीब के
दिनवा तेजाब रात पूछीं मत गरीब के

खेत-खरिहान,हाट,न्याय, शासन,अस्पताल
कहाँ-कहाँ होला मात पूछीं मत गरीब के

बड़ा अगराले भनक लागे कहीं भोज के त
कई दिन पर मिले भात पूछीं मत गरीब के

कान्हवा-पे बाबू लो के भार घर-बार के
पीठिया-पे जूता लात पूछीं मत गरीब के

लूटे वाला लूट ताऽ बहार सरकार के
देख लीं घर के हालात पूछीं मत गरीब के

कोंहरे सपनवा, अरमान, इच्छा आह भरे
खून फेंके जज्बात पूछीं मत गरीब के

दिल के दरियाव करीं फूंकी शंख न्याय के
अभियो से जात-पात पूछीं मत गरीब के

***

राम प्रसाद साह के पाँच गो गजल

नामः राम प्रसाद साह

जन्म तिथिः 23 जनवरी, 1949

प्रकाशनः अश्रु पूरित आँखाहरू नेपाली, गजल संग्रह. खेत ओरिया भोजपुरी गजल संग्रह, ए हीरामन सुगा– छन्दबध्द गीत संग्रह, रसगर बसन्त जवान– बिरहा शतक, आ एकर अंग्रेजी अनुवाद Piquant Spring, आस्था के देवी गढीमाई– एकांकी, आ अन्य संपादिक कृतियन, खत तेरे नाम – हिन्दी स्मृति काव्य

संप्रतिः अध्यक्ष, नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान बारा नेपाल, संपादक – भोजपुरिया माटी

(एक)

जवानी जा रहल बाटे बुढारी गा रहल बाटे
उमिरिया बितल जाता हो सफेदी छा रहल बाटे

करम के जान लेला से धरम के बात हो जाई
नियामत ठीक रखता से बकाया का रहल बाटे

सफर–ए–जिन्दगी के नाँव रौशन बा भलाई से
भलासे धाम मिल जाई समय अब जारहल बाटे

नुमाइश के जमाना बा हकीकत के बुझे के बा
उपर के जब खुली गाड़ी सवारी भा रहल बाटे

रहिम ओ राम एके बात कवनो फरक ना होखे
जहाँ ओ जगत में सारा कयामत आ रहल बाटे

(दू)

कवच कुंडल जलम से बा करन के जोर मुश्किल बा
करें के सोच बा धोखा समय में होड़ मुश्किल बा

असल सुखवीर दानी ऊ कहल बाटे कथा गाथा
महाभारत मचल छल के लड़ाई घोर मुश्किल बा

धरम के नाँव पर दानी कवच कुंडल कहे देनी
धरम भी दाव हो जाला बची ना ओर मुश्किल बा

जबे पटिदार हो लोभी रहम के भाव ना होला
लड़ाई गठ चले बेजोड़ मातम लोर मुश्किल बा

बहे शीतल हवा ना जोर गरमागरम बा बेसी
लड़ेला हार बा निहचित कसम घनघोर मुश्किल बा

(तीन)

सलामत रहे इश्क तोहर हमर हो
कबुलियत इहे आज मोहर हमर हो

खुरद पीपही ढेर बाजा रही पर
सकल अंगना मीठ सोहर हमर हो

कुछो ना कुछो भर लगन ले चली अब
मसकरी चली नाँव तोहर हमर हो

उमस जेठ के बा कहे रात से हो
पसेना चुवल देह सोकड़ हमर हो

निबाहल करिह जब तलक चान बाटे
निछावर रही प्रेम दोब्बर हमर हो

(चार)

दर्द गायन गजल में बयां हो गइल
दुःख हमरा समझ से दवा हो गइल

केतना साल लामा बितल बा समय
घाव ताजा अबे ई नया हो गइल

गीत राहत परोसे उमर पे सनम
नज्म आपन नशेमन वफा हो गइल

ई इबादत कभो बांव जाला कहाँ
केतना तंज साजिस फना हो गइल

नज्म में तू वबा आज दाखिल अगर
बेसबब शायरी में अदा हो गइल

(पाँच)

लहसन रहे पेट पर हो
चिन्हा रहे घेंट पर हो

सामी हवन इहे हमर
मन सारंगी रेट पर हो

भीक्षा लगन मनसा पुरन
जोगी रहे टेँट पर हो

बुबुना बने कुछ भीख दे
सुर से बदत गेट पर हो

खोलत मुँहो ना नाथ ई
ऊ सरगम लपेट पर हो

***

डॉ. घनश्याम न्यौपाने 'परिश्रमी' के पाँच गो गजल

नामः डॉ. घनश्याम न्यौपाने 'परिश्रमी'

जन्म तिथिः 18 जून, 1958

प्रकाशनः प्रकाशन– नेपाली में– अन्त्यमा खण्डकाव्य, यो मौसम गजल संग्रह, घामको छहारीमा गजल संग्रह, जून चुहेको रात गजल संग्रह, जूनको चुम्बन गजल संग्रह, निभेका शिखा गजल संग्रह, गजल सौन्दर्य मीमांसा गजल सिद्धान्त, बहर र गजल गजल सिद्धान्त लगायत 32 पुस्तकें प्रकाशित। धूप के कतरे हिन्दी गजल संग्रह।

संप्रतिः त्रिभुवन विश्व विद्यालय सेवा से अवकाश प्राप्त कुलपति – बर्दघाट प्रज्ञाप्रतिष्ठान, लुम्बिनी प्रदेश नेपाल।

(एक)

कुछ न कुछ हमरा कमाई हो रहल बा
दुख भंवर के अब हिनाई हो रहल बा

रोग से नैना–लड़ाई हो रहल बा
रोग के काफी बड़ाई हो रहल बा

ओकरा के मत कहीं बन जाय पानी
मौत रानी से सगाई हो रहल बा

गुरु लोगन से पूछे के बा ईहे प्रश्न
क्लास में का–का पढ़ाई हो रहल बा

साथ रहके कुछ पहर ओराए के बा
जिन्दगी से अब लड़ाई हो रहल बा

(दू)

मत पूछीं अब का–का होई
जे होई से अच्छा होई

मत फेंकीं कह गंदा पानी
एक दिन ईहे गंगा होई

लउकत बाटे ज्ञानी ध्यानी
देखीं ना आगे का होई

पुरवा बाटे गत–गत सिहरत
पक्का जानी बरखा होई

निन्दक नियरा राखीं रउआ
एक ना एक दिन चर्चा होई

मत अगराईं देखके बेटा
होते बड़का फरका होई

बेना हाँकत बाड़ी राधा
कन्हाई के खरचा होई

(तीन)

गिरल जिन्दगी बा, उठल जिन्दगी बा
भरोसा उठल बा, दबल जिन्दगी बा

बता ना सकब हम, वजह हार के अब
पता ना कहां पर, चुकल जिन्दगी बा

पसेना चुअत बा, मुड़ी से एंड़ी तक
गरीबन के, माहुर बनल जिन्दगी बा

हँसल हो गइल बा, जमाना कहीं का
हँसी के भँवर में, फँसल जिन्दगी बा

हवा बह रहल बा, कड़ा आत्मघाती
सुनीं ना, बड़ा बेकहल जिन्दगी बा

चुराई नजर मत, नजरिया लड़ाके
मना लीं हँसाके, रुसल जिन्दगी बा

कबो मुस्कुरा के, कबो मुँह फुला के
जिअल जिन्दगी बा, मुअल जिन्दगी बा

(चार)

जिन्दगी बेखबर हो गइल बा
का कहीं बेहुनर हो गइल बा

देखते-देखते रूप का दू
खूबसूरत, नजर हो गइल बा

बात हम का करीं अब शहर के
गाँव ही जब शहर हो गइल बा

आज जाके पता ई चलल बा
लोर के आँख घर हो गइल बा

गीत चाहे गजल का लिखीं जब
भाव ही बेबहर हो गइल बा

दू कदम हम चलीं, दू कदम तूँ
रास्ता बेहतर हो गइल बा

आह के धाह में बा जरत दिल
आ जवानी किन्नर हो गइल बा

(पाँच)

मिलल का बा, गुमल का बा, बताई का
भकूआइल नजर के हम, दिखाई का

बनल बा योजना कइसन विकासन के
शहर से गांव तक के अब जताई का

चलेला जोर मालिक के गरीबन पर
गरीबन के कहानी हम सुनाई का

उठेला देह में रह - रह दरद - रेखा
सजन लेखा कहीं हमहूँ सताई का

उठाई ना नजर देखीं जवानी में
लगल बा आग पानी में, बुताई का

बहल बागी हवा बाटे पछेया अब
घटा बनके मचाई काल आई का

***

गोपाल अश्क के पाँच गो गजल

नामः गोपाल अश्क

जन्म तिथिः 26 सितम्बर 1962

प्रकाशनः भोजपुरी, नेपाली, हिंदी में विभिन्न विधा के 4 दर्जन से अधिक कृति प्रकाशित

संप्रतिः पूर्व सदस्य –भाषा आयोग, नेपाल

(एक)

बात हो के रही, बात जब उठ गइल
मत चुराईं नजर, बात अब उठ गइल

मौत पर का करीं, हम भरोसा सनम
जिन्दगी से जरत राख जब उठ गइल

चाँदनी रात में ही रूठल चाँद बा
चाँद के का पता, रात कब उठ गइल

बेसहारा कहीं, भा कहीं बेकहल
बाप माई मुअल, आस जब उठ गइल

सोग एह बात के कर गइल घर मगर
अश्क रहते नजर का करब उठ गइल

(दू)

आदमी आ जिन्दगी में ठन गइल बा
जिन्दगी अब मौत खानी बन गइल बा

जिन्दगी के आदमी देला पनाहो
बेसहारा आदमी जीवन गइल बा

हो गइल बा आदमी शैतान देखीं
देख लीं ना आदमी कइसन गइल बा

आदमी हर वक़्त खोजेला लगन के
आदमी खातिर लगन आ तन गइल बा

आदमी के रूप बाटे अइसने पर
रूप पर एह आदमी के मन गइल बा

(तीन)

कहानी का सुनाई हम
गजल का गीत गाई हम

जवानी में लगल बाटे
घुनेघुन, का दिखाई हम

नजर से बात करके अब
नजर के का सताई हम

भइल बा काँट जब जीवन
गला कइसे लगाई हम

बजड़ बा हो गइल सावन
गलीं कइसे गलाई हम

खतम बा हो गइल सारा
बहाना का बनाई हम

किनारे पर खड़ा बानीं
अँदाजा का लगाई हम

तफरका मच गइल बाटे
तहलका का मचाई हम

खड़ा बा मौत देखीं ना
नजर कइसे चुराई हम

(चार)

जिन्दगी आ मौत के दोस्ती
देखते हो गइल दुश्मनी

बात ना हो सकल रात में
रात अचके बितल चाँदनी

फूल से काँट कहलस- नजर
धँस गइल आँख में बेगुनी

भोर बा हो गइल जिन्दगी
मौत के बात अब का सुनीं

अश्क के बात से रात भर
सेज विहँसत रहल जामुनी

(पाँच)

बना के बहाना जिअल जा रहल बा
फटल जिन्दगी के सिअल जा रहल बा

कहीं रात बन के, कहीं भोर बन के
सफर में बहुत अब, खिअल जा रहल बा

बनल साथ बाटे जहर जिन्दगी में
जहर हीक भर अब पिअल जा रहल बा

झुकल बा नजर अश्क के अब कहीं का
सही बात बाटे दिअल जा रहल बा

***

राजेश कुमार चौधरी 'जिज्ञासु' के पाँच गो भोजपुरी गजल

नामः राजेश कुमार चौधरी 'जिज्ञासु'

जन्म तिथिः 31 जुलाई 1979

प्रकाशनः माईकय अकवरिया (अवधी में कविता संग्रह), मधेसगाथा (नेपाली में खण्डकाव्य)

संप्रतिः उप-प्रधानाध्यापक, मोन्टेश्वरी मेमोरियल इङ्लिस बोर्डिङ हाई स्कूल, भैरहवा, लुम्बिनी, नेपाल

संपर्कः भैरहवा, रूपन्देही, लुम्बिनी प्रदेश, नेपाल

(एक)

फूलवारी जिन्दगी मानुख ह माली
खेत.खरिहान जेस बोई कर्म खाली

सोझ हरदम बा परेशान ई धरा मे
हर तरफ से मउज में बा मस्त जाली

जन्म. मरन ई भँवर में सबु बह्यँ मनई
वैँ अमर जेकर ह सुन्दर कीर्ति खाली

मैनबत्ती बनि गलै मनई अगर जो
जगत गर्भित जीव रोशन ज्ञान पाली

हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई एक मनई
भेद न करी गोरहर चाहे ह काली

(दू)

अक्षर क खेती जिन्दगी काटै कमाई शान से
आपन ह नैखे कबहुँ दुत्कारी पराई शान से

इनकम अठन्नी खर्च मोहर कठिन बा जिनिगी जियब
हर तरफ तुरै कमर महँगी मूह बाई शान से

कान्हे स जोरी कान्ह आगे जाइ होशियारी से
भागल समय वापस लउट कब्बो न आई शान से

मनई ह चाहे जानवर माया क प्यासा हर कोई
कब्बो न बनिहा बेरहम निष्ठुर कसाई शान से

आपन ह इज्जत खुद सँवारी संस्कारी आचरण से
अनुचित करम से खुद न करिहा जगहसाई शान से

(तीन)

खुशामद चढ़ि गगन चूमै जबर मनई
दु गज माटी करै जबुकि बसर मनई

दुई रोटी दुई कपड़ा रहय काफी
बिना मतलब बिगाड़ेला नजर मनई

बिना कारण दुताई दोष में निपुण
जबकि खुद से खुदै तूड़ै कमर मनई

ह वाणी मीठ बातिम बस दिखावा बा
भितर से सर्वदा उगिलै जहर मनई

बटोरेला खबर सारा बतावेला
जबकि बाँटे स्वयम से बेखबर मनई

(चार)

गिरीं उठीं दउड़ीं हम भईया
लउकी बनि झउड़ीं हम भईया

समय के रुख नसम्झी जो धरा में
बिकाई एक कउड़ीं हम भईया

जमानत जफ्त होखेला अगर जो
नकारा बनि बउड़ीं हम भईया

निशाना सामने लउकै खुलिके
नजर वश में चउड़ीं हम भईया

पलट जाई जितल बाजी ह निश्चित
नशा में जो पउड़ीं हम भईया

(पाँच)

वक्त कब्बो बूटी कब्बो घाव होखे
जिनिगी कब्बो धूप कब्बो छाँव होखे

जन्म होतै काल अगोरै मुँह पसारे
जिनिगी दु तट बीच नाचत नाव होखे

शर्त होखेला कहुँ आजादी जिनिगी
सफलता बिल्कुल अविचलित पाँव होखे

आचरण में सादगी जरुरी ह जानीं
नैखे करिहा शक शहर या गाँव होखे

कर्म होखे धर्म दिल से जो विचारी
जुवप रक्खल नैखे जिनिगी दाँव होखे

***

डॉ. नीलम श्रीवास्तव के तीन गो गजल

नामः डॉ. नीलम श्रीवास्तव

जन्म तिथिः 15 अगस्त 1959

प्रकाशनः 'बात करती शिलाएँ' – गीत संग्रह – (राजभाषा विभाग पटना द्वारा चयनित पाण्डुलिपि), 'चंद कतरे' – गजल संग्रह (एक ही परिवार के तीन रचनाकारों का), 'खयालों में कई परछाइयां हैं' (गजल संग्रह)

संप्रतिः सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग), श्री च्छत्रधारि संस्कृत महाविद्यालय हथुआ,गोपालगंज, बिहार

संपर्कः लोहिया कुटी, शास्त्री नगर, सीवान बिहार

(एक)

उनका साथे कठिन गुजर बाटे
जिन्दगी रेत के सफर बाटे

नीम जइसन तिंताइ बोली में
बात में सांप के जहर बाटे

सांझ सूझे ना दिन कटे कटले
रात तूफान के कहर बाटे

आंखि में शील ना दनाई बा
मन कुफुत के, कलह के घर बाटे

बात मानी उ केहु के कइसे
खून नयका, चढत उमर बाटे

(दू)

काहे जिनगी के माटी मिला दिहलऽ तूं
आधि रतिये में दियना बुता दिहलऽ तूं

तू त अपनों के आपन ना मनलऽ कबो
अपना खूनऽवों के बैरी बना दिहलऽ तूं

लोभ कुरसी आ पइसा के अइसन भइल
अपना कुनबे के दुनिया जरा दिहलऽ तूं

भीत बालू के होखी त ढहबे करी
झूठे दुअरा पर टाटी लगा दिहलऽ तूं

नाथ आगे ना पीछे ही पगहा रहल
खेत बिगहा के बिगहा चरा दिहलऽ तूं

(तीन)

लोग कइसे न जाने बात के भुला देला
दिया हियरा में जरत याद के बुता देला

बिछलहर में त गोड़ हर केहू के बिछलाला
लोग बाकिर इ साँच भोगि के झुठा देला

अपना अंगना के खिलल फूल हाथ से अपने
तूर के लोग कइसे खाक में मिला देला

झूठ के आड़ में छिपी ना साँच के चेहरा
आँखि के भाव मन के बात सब बता देला

हीत दाही ना ,लोग- बाग बा सभे एके
एक दोसरा के लंघि मार के गिरा देला

***

माया शर्मा के दूगो गजल

नामः माया शर्मा

जन्म तिथिः 6 जनवरी 1975

प्रकाशनः जीवन्तिका(हिन्दी कुण्डलिया संग्रह),जिनिगिया के थाती(भोजपुरी गीत संग्रह), भोजपुरी संक्षिप्त रामायन घनाक्षरी (प्रकाशनाधीन)

संप्रतिः शिक्षण

संपर्कः पंचदेवरी, गोपालगंज

(एक)

न जाने सिसिर दर्द ओ पात के
जवन टूटि छोड़े बिरिछि गात के

गिरल भूमि पर ऊ कहे दुख भरल,
पवन जा जगावऽ न जज्बात के

रही से लगाई मउर डाढ़ि पर,
फिकिर का करीं हम बिना बात के

अरे जिन्दगी के इहे हालि बा,
गँवाई सभे एह सौगात के

बसन्ती समय ना रहे हर घरी,
सभे दास बनि जात हालात के

(दू)

ज़िन्दगी काल्हि से आज का हो गइल
मस्त अल्हड़ रहे गम्भिरा हो गइल

खेल खाइल उड़ावल पतंगा गगन
ऊ सुहावन घड़ी लापता हो गइल

आजुले गाँव टोला मुहल्ला उहे,
लोग बाकी पुरनका दुका हो गइल

झुर्रियाइल सजी चाम ऐना कहे
ख्वाब सगरो पुरनका हवा हो गइल

जे सयाना कइल पालि के पोसि के,
ढील ओकर जरा सर्खरा हो गइल

***

सोनी सुगन्धा के दूगो गजल

नाम: सोनी सुगन्धा

जन्म तिथि: 5 फरवरी 1984

संपर्क: जमशेदपुर

(एक)

समय के चक्र से ई उम्र भी अइसे निकलि जाले
कि सूखल रेत जइसे बन्द मुट्ठी से फिसलि जाले

उ चाही त कुचल दिही सभे बाधा आ बिघनन के
नदी के चाह से कुछ तयशुदा रस्ता बदलि जाले

बहुत महंगा भइल अब सौख के सामान नयकन के
नया पीढ़ी कहाँ हमनी के कहला से बहलि जाले

कि जब मालूम बा ई रात ह करिया अमावस के
त काहें केकरा खातिर चांदनी छत पर टहलि जाले

भरोसा के पहिन के आजुकल पाजेब पैरन में
खुसी हमरा जरूरत से भी कुछ जादा उछलि जाले

बशर्ते हौसला कायम रहे कुछ करि गुजर जाईं
लकीरन के बिना भी लोग के किस्मत बदलि जाले

सभन के वास्ते लाजिम बा मीठा प्रेम के बारिस
सभे हियरा में सोनी एक जइसन आग जलि जाले

(दू)

आँसू के पीड़ा के गम के हर-पल साथ मिलल
हमरा पतझड़ के मौसम के हर-पल साथ मिलल

सच्चाई जे भी हो लेकिन चारि-जनन के बीच
कहे के कहनी हम-दम के हर-पल साथ मिलल

सांझि-सुबह में दिन-दुपहर में करिया रातन में
पंचतत्व तोहरा छमछम के हर-पल साथ मिलल

असमय माँ पूनम के छिनलसि ऊहे पूनम से
फिर भी कहत रहीं पूनम के हर-पल साथ मिलल

कइसे तू एहसान चुकइबू जिनिगी के सुनि ल
'सोनी' जब तहरा मातम के हर-पल साथ मिलल

***

डॉ. कादम्बिनी सिंह के पाँच गो गजल

नाम: डॉ. कादम्बिनी सिंह

जन्म तिथि: 03 अप्रैल 1980

प्रकाशन: मुझको मंजिल नहीं सफर दे दे (पहिला गजल संग्रह)

संप्रति: शिक्षिका (बेसिक शिक्षा परिषद) बलिया

संपर्क: संस्कृति, मोतीनगर, परिखरा' बलिया

(एक)

कब ले पीर सहे के बाटे
सी के ओठ रहे के बाटे

नेंव बनल बालू से जेकर
ऊ आगार ढहे के बाटे

घिउआ अस अनमोल बने के
जिनगी रोज महे के बाटे

सपरत नइखे उड़ल इहां त
धइले धार बहे के बाटे

अपनो नाओं धराई संकर
माहुर रोज गहे के बाटे

(दू)

कहाँ बुझाता झरना बानी आ की दरिया हो गइनी
जब से तोहसे नैन मिलल बा का जाने का हो गइनी

हं हरमेसा मन के चउखट पर अन्हरिया के डेरा
बाकिर नेह मिहिर के अवते चटक सवेरा हो गइनी

दुनिया के आंखिन में पत्थर अइसन खटकत रहनीं हम
जब आधा भुइयां में गड़नी तब से देवता हो गइनी

तूं केकरा खातिर पिज्जा बर्गर बन गइलर ए बाबू
हम त तहरा खातिर खांटी लिट्टी-चोखा हो गइनी

जे बोली के बान चला, मन चीरे के बस जानत बा
जा ओसे कहि के आवर हम सूई डोरा हो गइनी

(तीन)

नीक लागल बड़ा सुघर लागल
इश्क में खास ई सफर लागल

रात के आंख में सजल काजर
भोर के पांव महावर लागल

फूल देखलो प ना हँसे कबहूँ
ऊ करेजा के अस बजर लागल

हिल रहल बा देवाल मय जेकर
ओहि घर से हमार घर लागल

बात सुनलें कि रूसि के गइलें
का कहीं कौन ची जहर लागल

एक दिन का नगर बना दिहलऽ
रोज तोहरे बदे नगर लागल

(चार)

आंख जेने जा रहल बा आदमी बा
भीड़ बा तबहूँ अकेला जिंदगी बा

अब कहाँ केहू से आपन दुश्मनी बा
देख लऽ आवऽ निछाने दोस्ती बा।

ऊ हंसें त बाग के गुल हंस परेलें
आज ले उनुका में अइसन सादगी बा

का रदीफ ओ काफिया बाटे बहर का
का कहीं ओ पर खुदे जे शायरी बा

के चोरा के हरियरी भागल पराइल
हो गइल सउँसे सहर में सनसनी बा

ई छलक जाई त आई बाढ़ सुन ल
आंख में हमरा बसल एगो नदी बा

(पाँच)

दिया राह में अब जरावे चलींजा
गिरल बा जे ओ के उठावे चलींजा

ओढ़निया धरा के ओढ़ावे चलींजा
चल२ गाछ मिलके लगावे चलींजा

सुखाता ई देहियाँ सुरुज के अगिन से
तनी मेघ सांवर बोलावे चलींजा

केहू जब न केहू से बोले त चलके
मुहब्बत के जादू चलावे चलींजा

कोइलिया के बोली से बिहँसे बगइचा
हमनियो के कजरी कढावे चलींजा

इहे मन बा धइ के कदम ओह डगर प
जवन हमरा गंउआं में आवे, चलींजा

***

वीणा सिन्हा के पाँच गो गजल

नाम: वीणा सिन्हा

जन्म तिथि: 27 नवंबर 1972

संपर्क: 25 लूसील कोर्ट, न्यू जर्सी (अमेरिका)

(एक)

नैन में, नेह के कमी बाटे
अइसने, अब त आदमी बाटे

आपने लोग अब दगा देता
एहि से आँख में नमी बाटे

मर गइल आदमीयता कहवाँ
ई बताई का लाजिमी बाटे

प्यास धन, भूख शान शौकत के
का इहाँ बस हमा-हमी बाटे ?

भाग के लोग, जा रहल कहवाँ
आसमाँ ऊ, त ई जमीं बाटे

(दू)

ई चनरमा, उदास लागत बा
रात ईहो, बिरह में जागत बा

साँझ से रात, भोर से दिनवा
ठर ठिकाना, तहार माँगत बा

ना सनेसा, कहाँ खबर कवनो
अब त असरा, भी दूर भागत बा

का कहीं, के सुनी, कहाँ जाई,
जे अगर, किसमते अभागत बा

कंठ रूँधल, दरद करेजा में
पीर रह-रह के, देह दागत बा

(तीन)

अब खतम इंतजार हो जाई
मन कहत बा कि प्यार हो जाई

रात सपना में जे मिलल आ के
आँख उनके से चार हो जाई

फूल के सब उसूल बा मालुम
ई चमन में बहार हो जाई

चाँद बा ऊ चकोर जइसन हम
देखते जाँ निसार हो जाई

कश्मकश में बहुत, कटल जिनिगी
अब त लागे सुधार हो जाई

(चार)

सुनायीं कहाँ से इ कइसे कहानी
कि तिल-तिल मरत बाटे खेती किसानी

न इज्जत न कीमत बा मेहनत के जेकर
त खाता उ रोटी के जगहा गलानी

फसल बो रहल आस लेके उ मन में
कि भोजन करी रोज भर पेट प्राणी

छुधा के अगिन जे बुझावत बा सबके
उ कब खइले बा चैन के रोटी पानी

इ माटी के काया में पत्थर के सीना
इ माटी के कीमत त माटी ही जानी

(पाँच)

एक दिन एक साल गुजरत बा
का पता बात ई उ समझत बा

छोड़ के चल गइल कहाँ जाने
अब करेजा में टीस टुभकत बा

ई चनरमा से जा के पूछब हम
अब उ कवना गली से निकसत बा

आँख के लोर कोर पर सूखल
चाह के भी ना अब इ टपकत बा

केकरा से कहीं इ सब आफत
अब त गफलत में जान निकलत बा

***

अनीताशाह के तीन गो गजल

नामः अनीताशाह

जन्म तिथिः 1976

प्रकाशनः भोजपुरी पुस्तक 'गुजर रहल बा जिन्दगी'

संपर्कः श्री सुन्दरमल रामकुमार कन्या माध्यमिक विद्यालय वशवीरगंज 4 नेपाल

(एक)

राज अइसन रहे की सजा हो गइल
लाख कोशिश भइल पर खता हो गइल

साथ हुनकर सुहावन सफर कट रहल
का कहीं दोस्त के आसरा हो गइल

हम छुपावत रही दुख सभे लोग से
दुख भरल बतकही कहकशां हो गइल

हम लिखत ना रहीं सब भुलाइल रहे
दुश्मनी में गजल के नशा हो गइल

लाज आपन बचाई कवन लोग से
खौफ के हर तरफ माजरा हो गइल

(दू)

लुट गइल सारा खजाना, दोस्ती के वार से
दुश्मनी के बात कइसन,दोस्त मरले प्यार से

मतलबी बनके जमाना, फायदा से नाम ली
काम होते काट देला, नेह के तलवार से

जब समय आइल मदद के, खूब चालाकी भइल
मोड़ लिहले मुँह छुपा के, लौटनी दूआर से

माथ धरके रो रहल बा, साँच बतिया जे कही
मंथरा के राज बाटे, के बची मझधार से

हूक दसरथ के भइल आ, प्राण छूटल व्यर्थ ही
दूर भइले फर्ज खातिर, राम जी घरबार से

लोभ लालच जे समाइल, घर बिखर जाई सुनी
सोच के नीमन बनाई, घर बची तकरार से

बर्ष बीतल त्याग करके, दिन बितल संन्यास में
नेहिया भाई भरत के , मोह ना दरबार से

(तीन)

प्यास अँखियन के समंदर का बताई
छल हवा कइलख बवंडर का बताई

हाथ के लेखा मिटाके देख लिहनी
दुख गरीबन के मुकद्दर का बताई

मुफलिसी मे हित छुटल सभि दूर गइले
मूर्ति बा चुपचाप पत्थर का बताई

खूब महफिल में सजेला रूप सूनर
सादगी के दर्द भीतर का बताई

रोज तहरा से मिली रचके बहाना,
प्यार से अब सून बा घर का बताई

जे फकीरी कर रहल ऊ मस्तमौला
सुख रवानी के कलंदर का बताई

मौत आपन के भइल दुश्मन बनाके
खून के अब जात खंजर का बताई

***

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

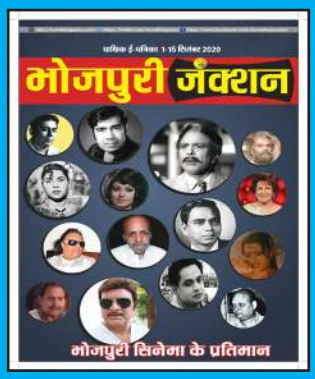
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

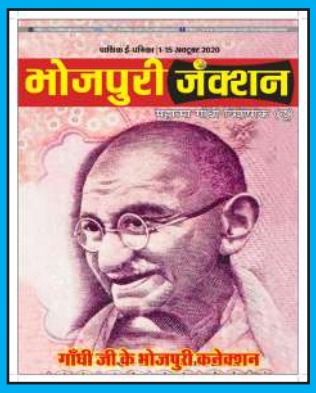
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

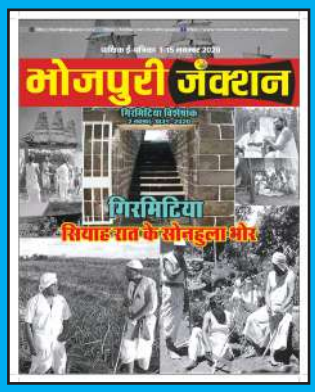
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

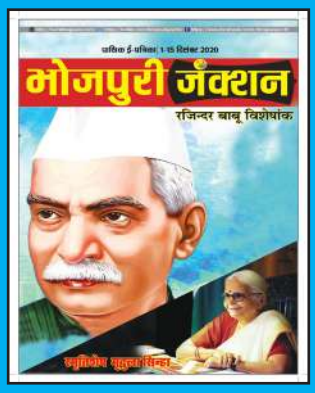
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
भोजपुरी जंक्शन
मईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

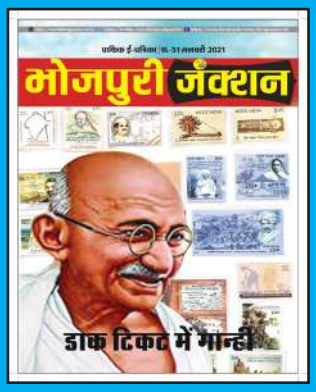
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

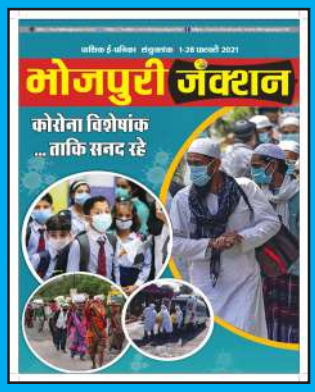
भोजपुरी जंक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

भोजपुरी जंक्शन
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जंक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जंक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मई 2021
भोजपुरी जंक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी ?

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 मई 2021
भोजपुरी जंक्शन
कोचिंग से देसी
'सोचिंग' के जरूरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक 1-30 जून 2021
भोजपुरी जंक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जंक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक पत्रिका | संयुक्तांक 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जंक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code - DELBHO0011
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 सितंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

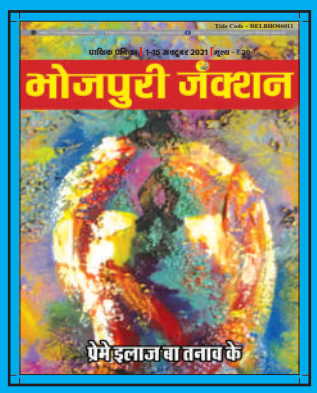
Title Code - DELBHO0011
पाक्षिक पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

Title Code - DELBHO0011
पाक्षिक पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
मन के रिचार्ज करीं

Title Code - DELBHO0011
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 नवंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

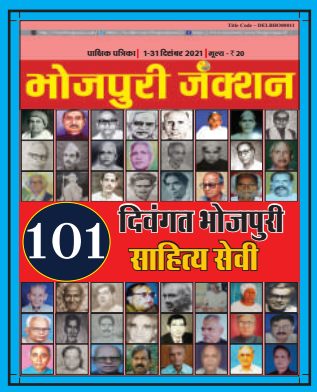
Title Code - DELBHO0011
पाक्षिक पत्रिका | 1-31 दिसंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
101
दिवंगत भोजपुरी
साहित्य सेवी

भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

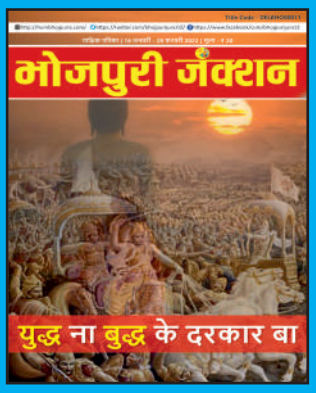
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

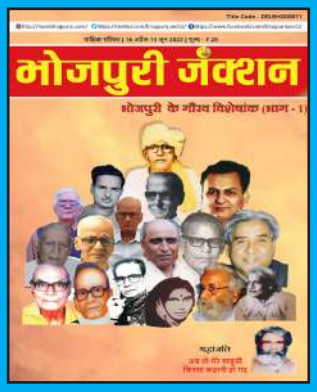
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -1)
कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो
- कबीर

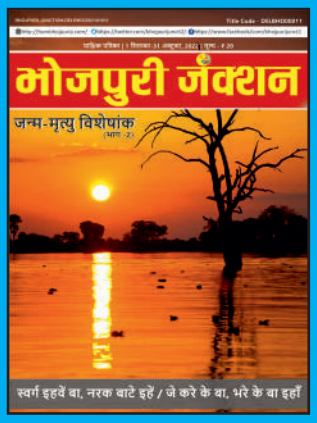
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -2)
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी तेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

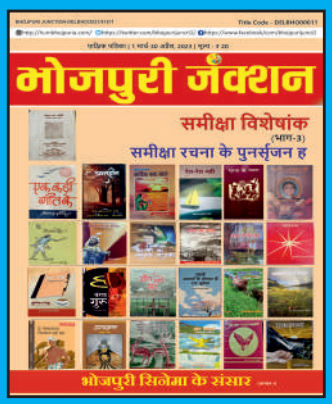
भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

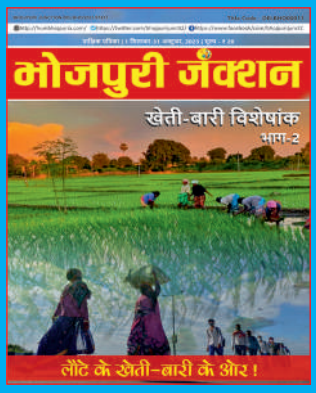
भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-2
लौट के खेती-बारी के ओर !

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-3
छठी मइया के अर्पित खेती-बारी अंक

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-4
संजीवनी बूटी है
मोटका अनाज
आबाद रहे हरदी-धान

भोजपुरी जंक्शन
राम विशेषांक
लोक में राम, राम में लोक
500 बरिस
के इंतजार...
6 दिसम्बर 1992
के ऊ दिन...
राम रसायन तुम्हरे पासा

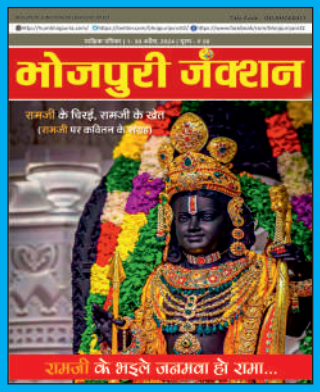
भोजपुरी जंक्शन
रामजी के चिरई, रामजी के खेत
(रामजी पर कवितन के संग्रह)
रामजी के भइले जनमवा हो रामा...

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-1)
नारी-चेतना के प्रणाम !

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-2)
स्त्री के खुदबयानी
कहानी में जिंदगी : जिंदगी में कहानी

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-3)
स्त्री : पुरुष के सहभागिनी, सहधर्मिनी आ सहचारिणी

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-4)
जइसन मन, ओइसन कहानी

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक-5 / कहानी संग्रह
मातृभाषा विशेषांक (भाग-1)
मातृभाषा के कवनो विकल्प नइखे

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक-6 / कहानी संग्रह
मातृभाषा विशेषांक (भाग-2)
मातृभाषा माने दिल के भाषा

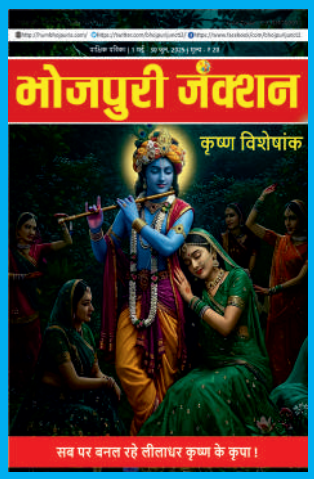
भोजपुरी जंक्शन
कृष्ण विशेषांक
सब पर बनल रहे लीलाधर कृष्ण के कृपा !

भोजपुरी जंक्शन
कृष्ण विशेषांक -2
अंक
134
गीता के पढ़ाई होखे अनिवार्य !

दिनेश पाण्डेय के पाँच गो गजल

नामः दिनेश पाण्डेय

जन्म तिथिः15 अक्टूबर 1962

प्रकाशनः 'सुनगुन' (भोजपुरी काव्य-संग्रह), भोजपुरी की प्रतिनिधि कविताएँ, कठपुतरी, खिल गया जावाकुसुम आदि कविता संग्रह

संप्रतिः बिहार सचिवालय सेवा से सेवानिवृत।

संपर्कः संचार नगर, आदमपुर, पो०- खगौल (दानापुर), जिला- पटना। पिन- 801105

(एक)

आजकल दिन बेरुखा बा, धूप बोझिल अनमनी
साँस के आवारगी में चिंतना के रहजनी

पेड़ के छाँही सकोचल, घूँध अइसन बढ़ रहल
आँखि के पुतरी प चिनगी, ओठ पर बा चुनचुनी

जे जहाँ अफलातुने बा ना जवो भर कम केहू
झूर धइ चलले तलासत बेअरथ ठाना-ठुनी

साफ कपड़ा मन कदोरा, छंदफंदा अनगिनित
साध के चोला लपेटे चोर के गोपीचनी

अर्थजुग बा सोच तक बाजार के कब्जा भइल
झूठ के आलेख पर ढारल सचाई के पनी

ऐन गरनी के मुहाने ध्यान में बक ठाढ़ बा
मूढ़ फरहा के कहे के, 'जनि उछर ओने दनी'

बात तऽ बहुते रहे, कहलो जरूरी बा मगर
के अनेरे मोल लेवे बानरन से अनबनी

(दू)

छिटिक के बात जब भुइँआँ गिरे, संगोर मुश्किल बा
बिटोरल तोर के दाना सरीखे घोर मुश्किल बा

करीं लाखन उपायो, बात बिगरी ना सम्हर पावे
कहल केहू कि फाटल दूध अस गँठिजोर मुश्किल बा

तबो कुछलोग अइसन बा जे बाते के रहें चुभुला
कहीं रउए, अदंते-मुँह कतिक लट्टोर मुश्किल बा

तनी सोचीं, लमारल बात के नीमन कही केहू ?
रबर अस घींच के छोड़ल, बुझीं जे थोर मुश्किल बा

मुसुक के आँख मटका के न जाने का टुभुक गइली
गड़ल छब मन मधे अइसन, परावल भोर मुश्किल बा

चली बेबात के बतिया त निसबत रात के दर का?
दबा के होठ से पल्लू लड़ावल ठोर मुश्किल बा

रहे दीं बात के बावत, अनेरे बात बढ़ जाई
बढ़ा के बात के बाती, सिरावल लोर मुश्किल बा

(तीन)

आज काहे आँख भर आइल सखी
ढेर दिन पर सुधि उभर आइल सखी

पातरी पैड़ी किनारे पाँव दे
चान भुइँए बा उतर आइल सखी

थिर टिके के साधना में लीन जे
आज कइसे ए डगर आइल सखी

चौघड़ी के पाहुना से का गिला
बात निकलल भिनसहर आइल सखी

बेअरथ मनुहार इनसे का करीं
गाँव में लँगटा शहर आइल सखी

बान्ह दीं तनिका कलेवा-पोटरी
भोरवाली बस नजर आइल सखी

माथ धुन गइलसि किनारे कुछ बखत
बद समंदर के लहर आइल सखी

(चार)

तनिकी बचल ह रात री, ढुलकल हवा खरी-खरी
टूटल तने एकांत में झलमल नखत कहीं परी

बँसवार में जगार बा, गलबात कुछ ह चल रहल
रेवड़ बँटी फजीर में हलचल बढ़ल एही घरी।

बेबात के विवाद में उरझल हवें जहान सब
के चोरना चुरा लिहल भूतल परे मुक्ता लरी

पूरुब दनी कवन जनी चुनरी पसार के गइलि
सतरंग जलकनी चुवे, हरपल तिरिन प थरथरी

छाया किरिन थिरिक गइल पलकन अधर लिलार पऽ
लाली बिछिल गइल गजब दमकल कपोल पंखरी

अँखियाँ मिचिक थिरा रहलि, बालम, अभी खुमार में
पानी छिरिक उपल सरिस, उमगल करीं न मस्खरी

असकत भरल ह देह मन अँगरान के लहर उठे
जागल सभर सुचेतना, दुबकल कतो विभावरी

(पाँच)

कौन आ के कान में कुछ बात अइसन कह गइल
आँखि तऽ मूँनल रहलि हऽ, नम नदी फिर बह गइल

अनगढ़ल सपना हजारन साँस में घुलते रहल
थिर सुआ देखत रहल हऽ नीड़ सोझे ढह गइल

जोरि के तिनका सजौलीं मतलबी के आशियाँ
खाँच भर तीखी तरासा, तीन से तेरह गइल

अंजुरी में का समाइल हऽ कबो बहती हवा?
मनमतंगी आ उधर से केनहूँ बेबह गइल

राह में कतिने मुसाफिर जुर फिनू बिछुरल मिलल
कुछ कहीं गादह रचल हऽ, कुछ करेजा मह गइल

कारवाँ गुजरत गइल हऽ, ऐन सनमुख आँखि के
गर्द में कहवाँ जनाता, कौन कहवाँ रह गइल?

भेंटलस का, का हिराइल, ना समुझ आवे तनिक
जिंदगी के भार से पगतर सतह ओनह गइल

***

डॉ. साकेत रंजन प्रवीर के दूगो गजल

नामः डॉ. साकेत रंजन प्रवीर

जन्म तिथिः 7 फरवरी 1969

संप्रतिः प्राध्यापक

संपर्कः बेंगलुरु

(एक)

जिनगी के दर्द शेर के सांचा में ढाल के
रखले बा केहू जइसे करेजा निकाल के

मन में त बाटे बात हजारन दबल मगर
कइसे कहीं जबान के आफत में डाल के

कुछुओ के कुछुओ मानी निकलबे करेला लोग
जे मन में बा ऊ बोलीं मगर देखभाल के

हम जिंदगी के दर्द सुनवनीं जहाँ जहाँ
बोलल सभे कि वाह! गजल बा कमाल के

'साकेत' ई गजल ह कि जिनगी तहार हऽ
हम का भला जवाब दीं अइसन सवाल के

(दू)

गोकुल के आन बान कन्हैया के बाँसुरी
राधा के मन परान कन्हैया के बाँसुरी

रस छंद शब्द भाव हवे गीत के जबान
संगीत के जबान कन्हैया के बाँसुरी

लौटेला अपना खेत से जब सांझ के किसान
धो देला सब थकान कन्हैया के बाँसुरी

मधुबन के फूल फूल प राधा के प्रेम गीत
गोकुल के आसमान कन्हैया के बाँसुरी

साकेत हमरा अतने बुझाइल बा आज ले
हर दुख के हऽ निदान कन्हैया के बाँसुरी

***

मनीष मिश्र के एगो गजल

नाम: मनीष मिश्र

जन्म तिथि: 15 अक्टूबर 1970

संप्रति: वकालत

दनाई में एकरा परल बा खटाई
कसाई के का केहु दिल में बसाई

सुने अर्ज खुदगर्ज ले के जम्हाई
इहे बा रवइया त कइसे तिराई

अभी त कहानी शुरू हो रहल बा
बहुत लोग आई,बहुत लोग जाई

मरीज-ए-मोहब्बत बा खेलल खेलाड़ी
नया बैद से ना बेमारी धराई

बचल प्रेमरोगी के मुश्किल बुझाता
कहीं बा बेमारी,कहीं बा दवाई

अभी मोरचा से हटल ठीक नइखे
अदालत में चल के दियाई सफाई

अढ़ाई गो अक्षर के बाटे सिलेबस
एही में पढाई,एही में लिखाई

मोहब्बत के बाजार में दिल के सउदा
बिकाई-किनाई,किनाई-बिकाई

अमीरी फकीरी चली साथे साथे
कहीं कुछ दियाई,कहीं कुछ लियाई

'मनीष' एगो तिरछी नजर दिल में आ के
उड़ा ले गइल, जिन्दगी के कमाई

***

आईं भोजपुरी जंक्शन के सोशल अड्डा पऽ

https://humbhojpuria.com

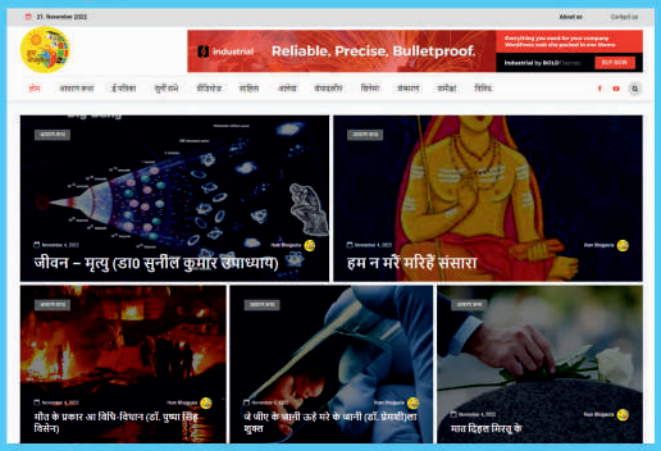

YouTube

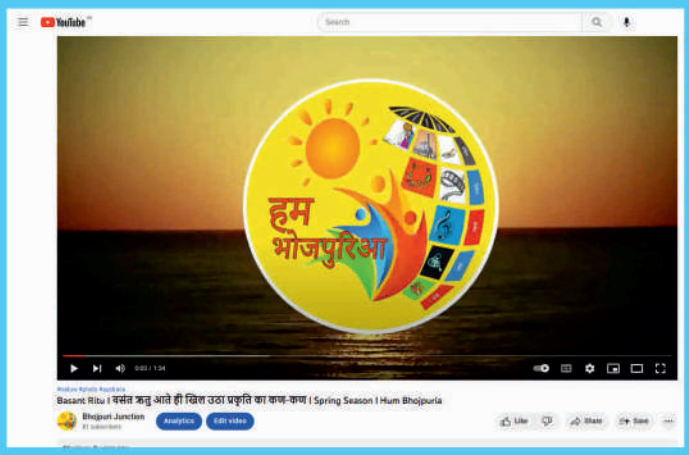

https://facebook.com/humbhojpuriaa/

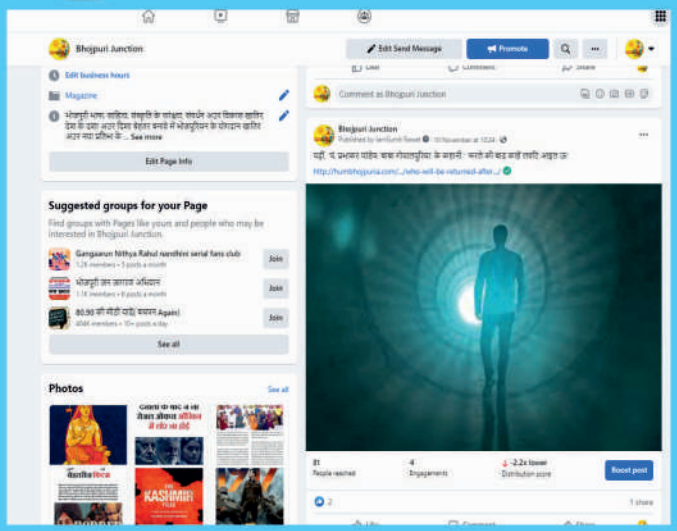

https://twitter.com/humBhojpuria

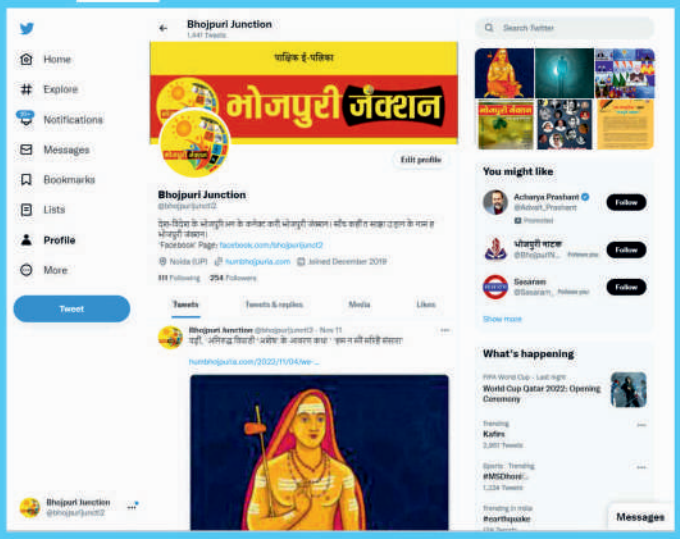

विद्यया ऽमृतमश्नुते
KNOWLEDGE IS THE ESSENCE OF THE LIFE

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
विद्यया ऽमृतमश्नुते
PERSEVERANCE EXCELLENCE INTEGRITY

Dehradun | Affiliated to C.B.S.E. | Co-Educational and fully Residential School

LEARN | IMPLEMENT | INNOVATE | EXCEL

The 21st Century Gurukul

ADMISSIONS OPEN 2026-27

Classes IV to IX and XI

+91 9568012778 | +91 9568012776 | +91 9568012772

admission@indianpublicschool.com | www.indianpublicschool.com